@Qpatrika
@qaumipatrika hindi
instagram.com/qaumipatrika

कौमी पत्रिका
राष्ट्रीय दैनिक अखबार

दिल्ली-हरियाणा-पंजाब-चण्डीगढ़-उत्तर प्रदेश से प्रसारित
रविवार, 26 मई 2024

VISIT:
www.qaumipatrika.in
Email: qpatrika@gmail.com

R.N.I. No. UP-HIN/2007/21472 सम्पादक - गुरचरन सिंह बब्बर वर्ष 17 अंक 186 qaumipatrikahindi 011-41509689, 23315814, 9312262300 गाजियाबाद संवत् 2077-78, पेज (12) मूल्य 3.00 रुपये (हवाई शुल्क 50 पैसे अतिरिक्त)

साइबर ठगों ने हाईकोर्ट के जज को लगाया 50 हजार रुपये का चूना

नई दिल्ली, 25 मई। साइबर ठग किसी भी वक्त, किसी को भी चूना लगा सकते हैं। अब इन्होंने महाराष्ट्र जिला जज को 50,000 रुपये का चूना लगाया है। रिपोर्ट के मुताबिक साइबर ठगों ने व्हाट्सएप डीपी में बॉम्बे हाईकोर्ट के जज की फोटो लगाकर जिला जज से 50,000 रुपये की ठगी की है। फिलहाल पुलिस ने शिकायत दर्ज की है और जांच की जा रही है। यह पूरा मामला महाराष्ट्र के सोलापुर का है जहां एक साइबर ठग ने व्हाट्सएप डीपी में बॉम्बे हाईकोर्ट के जज की फोटो लगाकर जिला जज के साथ ठगी की है। व्हाट्सएप पर जज की फोटो देखकर जिला जज को लगा कि वे वास्तव में जज से ही बात कर रहे हैं। रिपोर्ट के मुताबिक जिला जज के पास एक व्हाट्सएप नंबर से मैसेज आया जिसमें 50,000 रुपये की मांग की गई थी और कहा गया था कि शाम तक पैसे लौटा दिए जाएंगे। डीपी में हाईकोर्ट के जज की फोटो होने के कारण जिला जज ने भरोसा कर लिया और पैसे ट्रांसफर कर दिए। जिला जज को उस वक्त ठगी होने का अहसास हुआ जब ठग ने दोबारा पैसे मांगे। उसके बाद जिला जज ने हाईकोर्ट के रजिस्टार को कॉल किया और पूछा तब पता चला कि हाईकोर्ट के जज ने किसी से कोई पैसे नहीं मांगे हैं। इस मामले को लेकर साइबर पुलिस में केस दर्ज किया गया है और जांच चल रही है। व्हाट्सएप प्रोफाइल फोटो बदलकर पैसे मांगने की ठगी देश में बड़े स्तर पर चल रही है। आए दिन लोगों को इसका शिकार बनाया जा रहा है। यदि आपके पास भी इस तरह के कोई मैसेज आते हैं और पैसे की मांग की जाती है तो सावधान रहें और फोन करके उस शख्स से बात करें जिसके नाम पर पैसे मांगे जा रहे हैं।

जब तक मोदी जिंदा है, आरक्षण छीनने नहीं दूंगा: पीएम

सिम्मी कौर बब्बर

गाजीपुर, 25 मई। पीएम मोदी ने भोजपुरी में संबोधन की शुरुआत करते हुए कहा गाजीपुर के पावन धरती के लोगों के हमार प्रणाम बा। काशी वासियों के लिए गाजीपुर आना ऐसा ही है जैसे बगल के मोहल्ले में आ गए। अगर गाजीपुर वाला फोन करे तो काशी वाले बोलते हैं बस घर पर ही हैं। मैं भी गाजीपुर प्रचार करने नहीं आया हूं, अपने माता- बहनों का और आप सबका आशीर्वाद लेने आया हूं। कहा गाजीपुर का सामर्थ्य क्या है, यह इतिहासकारों से ज्यादा देश की सीमाओं को पता है। यह पराक्रम और शौर्य की गाथाएं बताती हैं। पीएम ने कहा कि हर घर से जहां जांबाज निकालते हों गाजीपुर के अलावा और किसे ये उपलब्धि मिला होगा। मुझे आपके बीच कई बार आने का अवसर मिला है। संगठन का काम करता था चाहे गुजरात का मुख्यमंत्री था या लोकसभा में चुनाव का समय हो या विकास के काम हों। आता हूं तो मुझे एक पुराना प्रसंग बार-बार याद आता है। यह प्रसंग इस बात का गवाह है कि कैसे इंडिया गंठबंधन वालों ने गाजीपुर के साथ विश्वास घात किया। आजादी के बाद कांग्रेस ने कसम खा ली थी यह क्षेत्र का विकास नहीं करेगी। यहां के लोग गरीबी में घूट-घूट कर जीने को मजबूर रहें। पुराने लोगों को पता होगा यहां की तकलीफ। पीएम मोदी ने कहा आप याद करिए कांग्रेस कैसे सरकारें चलाती थी।

ताड़ीघाट का शिलान्यास गहमरी बाबू ने कराया था, लेकिन छह दशक तक ये काम लटका रहा। इंडि पार्टियों की कितनी सरकारें आईं और चली गईं लेकिन, पुल नहीं बना। ये पुल तब बना जब आपने मोदी को सेवा करने का मौका दिया। यह मेरा सौभाग्य था कि बाबू जी का सपना साकार किया और यहां आकर उद्घाटन किया। काम लटकाने और हक मारने में कांग्रेस को महारत हासिल हैं। कांग्रेस ने हमारे सेना के जवानों को वन रैंक व पेंशन नहीं लागू करने दिया था। कांग्रेस ने हमारे सेना के जवानों के शहीदी का माखौल उड़ाया था। उन्हें मुर्ख बनाने का भरसक प्रयास किया था। 2013 में भाजपा ने मुझे पीएम पद का प्रत्याशी बनाया तो हरियाणा में मैंने वन रेंक वन पेंशन लागू करने का एलान किया था। इससे कांग्रेस घबड़ा गई थी। पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा कि मोदी जब तक जिंदा है, तब तक एससी-एसटी का आरक्षण नहीं छीनने दूंगा। वंचितों का जो अधिकार है, मोदी उसका चौकीदार है। सपा के नेता राम मंदिर को बेकार बताते हैं। शहजादे राम मंदिर पर ताला लगवाना चाहते हैं। पीएम ने कहा कि कांग्रेस फिर से कश्मीर को आग में झोंकना चाहती है। गाजीपुर की जनता ऐसा नहीं होने देगी। गाजीपुर का बेटा जम्मू कश्मीर की कमान सांभाल रहा है। कश्मीर के लोग जानने लगे हैं विकास कैसे होता है। कश्मीर के लोग गाजीपुर का नाम जानने लगे हैं। पीएम ने जनसभा में मौजूद लोगों से पूछा सम्मान चाही या माफिया क धौंस चाही। पीएम मोदी बोले कि गाजीपुर का विकास हो रहा है। गाजीपुर में जो काम 50 साल में नहीं हुआ वो दस साल में करके दिखाया। 400 पार में मुझे एक कमल गाजीपुर से चाहिए। मां भगवती के चरण में गाजीपुर का भी कमल चढ़ना चाहिए।

सबसे बड़ी बारूद फैक्टरी में जोरदार धमाका

बेमेतरा, 25 मई। छत्तीसगढ़ के बेमेतरा जिले में शनिवार को बड़ा घटना हुई। यहां बेरला के बारूद फैक्टरी में धमाका हुआ है। धमाके में आठ लोगों की मौत की पुष्टि हो गई है। मरने वालों की संख्या बढ़ सकती है। कई लोगों के मलबे में दबे होने की आशंका है। प्रशासन की टीम रेक्स्यू कर रही है। दर्जनभर लोग घायल हुए हैं। घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जानकारी के अनुसार, बेमेतरा जिले के बेरला ब्लॉक अंतर्गत ग्राम बोरसी स्थित बारूद फैक्टरी में धमाका हुआ है। घटना आज सुबह की है। बारूद फैक्टरी में ब्लास्ट की आवाज कई किलोमीटर तक सुनाई दी। इससे आस-पास के गांव के लोग बड़ी संख्या में घटनास्थल पर जमा हो गए हैं। धमाके के बाद इलाके में हड़कंप मच गया है। उधर, घटना के तीन घंटे के बाद रेस्क्यू टीम मौके पर पहुंची। घायलों में से सात लोगों को रायपुर के मेकाहारा अस्पताल में भर्ती कराया गया, जिसमें से एक व्यक्ति की मौत हो गई है। वहीं रायपुर के अलग-अलग निजी अस्पतालों में भी मरीजों को भर्ती कराया गया है। बेमेतरा कलेक्टर ने बताया कि मौके पर एसडीएम पहुंचे हैं कुल कितने लोग घायल हुए हैं अभी यह स्पष्ट नहीं हो पाया है। कई लोग मलबे में दबे हुए हैं। उन्हें निकालने का प्रयास किया जा रहा है। ग्रामीणों का कहना है कि जहां पर ब्लास्ट हुआ है वहां पर 15 से 20 लोग काम करते हैं। कंपनी में बारूद का काम होता था। ब्लॉस्ट के बाद कर्मचारी बाहर की तरफ भागे। वहीं फैक्टरी का मलबा यानी सीमेंट के टुकड़े दूर तक गिरे हैं। कुछ लोग मलबा में दबे होने की आशंका है। अमर उजाला से बातचीत में बेरला एसडीएम पिंकी मनहर ने बताया कि प्रशासन की टीम मौके पर मौजूद है। राहत और बचाव कार्य जारी है।

पाकिस्तानी नेता ने केजरीवाल के प्रति दिखाई सहानुभूति, दिल्ली सीएम ने दिया मुंहतोड़ जवाब

तेजिन्दर कौर बब्बर

नई दिल्ली, 25 मई। भारत में लोकसभा चुनाव हो रहे हैं। पाकिस्तान के पूर्व और पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ के नेता चौधरी फवाद हुसैन को भारतीय चुनाव में खासा मजा आ रहा है। राहुल गांधी के समर्थन के बाद उन्होंने दिल्ली सीएम अरविंद केजरीवाल के प्रति सहानुभूति दिखाई। हालांकि, इस बार केजरीवाल ने उन्हें अच्छे से धो दिया। दरअसल, शनिवार को छठे चरण में सीएम केजरीवाल ने अपने परिवार के साथ मतदान किया। उन्होंने इसकी फोटो एक्स पर भी साझा की। केजरीवाल के इसी पोस्ट पर फवाद ने रिप्लाई करते हुए कहा कि शांति और सद्भाव नफरत और उग्रवाद की ताकतों को परास्त करे। इसी रिप्लाई पर केजरीवाल ने फवाद को धो डाला। केजरीवाल ने उनके रिप्लाई को शेयर करते हुए कहा कि चौधरी साहब, मैं और मेरे देश के लोग अपने मसलों को संभालने में पूरी तरह सक्षम हैं। आपके ट्वीट की जरूरत नहीं है। इस वक्त पाकिस्तान के हालात बहुत खराब हैं। आप अपने देश को

संभालिए। इसके बाद एक और पोस्ट करते हुए केजरीवाल ने एक्स पर कहा कि भारत में हो रहा चुनाव हमारा आंतरिक मामला है। अतंकवाद के सबसे बड़े प्रायोजकों का हस्तक्षेप भारत बर्दाश्त नहीं करेगा। चौधरी साहिब, मैं और मेरे देश के लोग अपने मसलों को संभालने में पूरी तरह सक्षम हैं। आपके ट्वीट की ज़रूरत नहीं है। इस वक़्त पाकिस्तान के हालात बहुत ख़राब हैं। हाल ही में, पाकिस्तानी नेता ने एक्स पर राहुल गांधी के समर्थन में एक पोस्ट किया था। उन्होंने कहा था कि राहुल ऑन फायर। फवाद ने जो वीडियो साझा किया था, उसमें राहुल गांधी राम मंदिर उद्घाटन के बारे में बोल रहे थे। वीडियो में राहुल गांधी पूछ रहे थे कि क्या इस अवसर पर किसी गरीब व्यक्ति को आमंत्रित किया गया था। इस पर रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने सवाल खड़े किए थे। उन्होंने कहा था कि हुसैन का राहुल की तारीफ करना बड़ी चिंता का विषय है। कांग्रेस से स्पष्टीकरण देना चाहिए। सिंह ने कहा था कि भारत को अस्थिर करने वाला देश राहुल गांधी की तारीफ कर रहा है, इस पर कांग्रेस को सफाई पेश करना चाहिए।

तीसरी मर्तबा उन्हें पीएम बनने से रोकेंगे: असद्दुदीन ओवैसी

पटना, 25 मई। छठे चरण के चुनाव को लेकर एआईएमआईएम के राष्ट्रीय अध्यक्ष असादुदीन ओवैसी पटना पहुंचे और छठे चरण के चुनाव को लेकर उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर तंज कसा है। उन्होंने कहा कि इस बार हमें प्रधानमंत्री को तीसरी बार प्रधानमंत्री नहीं बनने देना है। इसके साथ ही अमित शाह के उस बयान, जिसमें यह कहा गया था कि 400 पार सीट दीजिये हम मुस्लिम आरक्षण खत्म कर देंगे, इसपर जवाब देते हुए असादुदीन ओवैसी ने कहा कि वो पक्का आरक्षण को खत्म कर देंगे, संविधान को खत्म कर देंगे , उनके इरादे भी यही है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शुक्रवार को भोजपुर में चुनावी सभा को संबोधित करने के क्रम में कहा था कि भाजपा कर्नाटक और आंध्र में मुस्लिम आरक्षण खत्म करेगी। उन्होंने कहा कि आप भारतीय जनता पार्टी को 400 पार करा दो तो यह मुस्लिम आरक्षण रद्द करके हम पिछड़ा और अति पिछड़ा को दे देंगे। इसी बहाने उन्होंने लालू प्रसाद यादव पर तंज कसते हुए कहा था कि लालू यादव कहते हैं कि मुसलमानों को शत प्रतिशत आरक्षण देना चाहिए। लालू जी, किसका आरक्षण काट कर दोगे? दलितों का, आदिवासियों का या पिछड़ा समाज का आरक्षण काट कर दोगे? स्पष्ट करो। एआईएमआईएम के राष्ट्रीय अध्यक्ष असद्दुदीन ओवैसी पटना पहुंचे हैं, जो आज पाटलिपुत्रा संसदीय क्षेत्र के उम्मीदवार फारुक राजा उर्फ़ डब्लू को जीत दिलाने के लिए प्रचार करेंगे। फारुक राजा उर्फ़ डब्लू पहले राष्ट्रीय जनता दल में थे, अब दो महीना पहले वह राजद छोड़ असद्दुदीन ओवैसी की पार्टी एआईएमआईएम में शामिल हुए हैं और पार्टी ने उन्हें पाटलिपुत्रा से उम्मीदवार बनाया है। पाटलिपुत्रा संसदीय क्षेत्र के राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव की बेटी मीसा भारती और एनडीए प्रत्याशी राम कृपाल यादव लोक सभा के चुनावी मैदान में हैं।

हिंदुस्तान की सीमा पर कब्जा कर रहा चीन: मल्लिकार्जुन खरगे

कौमी संवाददाता

शिमला/रोहड़ू, 25 मई। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा कि चीन-हिंदुस्तान की सीमा पर कब्जा कर रहा है। घर और मकान बनाए जा रहे हैं। मोदी चुप बैठे हैं। उनकी 56 इंच की छाती सिर्फ दिखाने के लिए है। उन्होंने तो नहीं देखा, मगर कोई मशहूर टेलर है तो देखो कि उनकी 56 इंच की छाती है कि नहीं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री तो जवाहर लाल नेहरू की तरह होता है, जो सबको समानता से देखते थे। इंदिरा गांधी की तरह होता है, जिन्होंने पाकिस्तान के दो हिस्से किए। पाकिस्तान से बांग्लादेश को आजादी दिलाई। इन्होंने तो पहाड़ खोदकर चूहा निकाला। खरगे ने शनिवार को शिमला संसदीय क्षेत्र के रोहड़ू में कांग्रेस प्रत्याशी विनोद सुल्तानपुरी के लिए जनसभा संबोधित की। खरगे ने कहा कि देश में भाजपा भ्रष्टाचार, महंगाई और बेरोजगारी के नाम पर सत्ता में आई है। जनता को गुमराह कर भाजपा ने जनाधार लिया और बाद में काले धन वालों से हाथ मिलाया।

कर्नाटक, मध्य प्रदेश व गोवा में जनाधार वाली स्थिर सरकार को अस्थिर किया, लेकिन हिमाचल प्रदेश में उनका यह प्रयास नाकाम रहा है। हिमाचल में उनको इसका करारा जवाब भी मिला है और यहां लोग हिमालय की तरह अडिग रहे। भाजपा भ्रष्ट लोगों को अपने साथ जोड़ रही है। राजनीतिक विरोधियों को ईडी, सीबीआई से तंग करवाया जा रहा है। देश में मोदी की तानाशाही बढ़ रही है, जिससे लोकतंत्र खतरे में है। कांग्रेस के सत्ता में आने के बाद पूरे देश में जीएसटी मुक्त खेती होगी। कृषि उपकरणों, खादों-दवाइयों पर टैक्स खत्म किया जाएगा। फसल बीमा का तीस दिन में भुगतान होगा। किसानों का कर्ज माफ होगा। देश के भाजपा शासित प्रदेशों में पेपर लीक के मामले सामने आ रहे हैं। इसके खिलाफ कड़ा कानून बनाया जाएगा। खरगे ने कहा कि देश के लोग भाजपा से दस साल के कार्यकाल का हिसाब मांग रहे हैं। भाजपा का जनाधार खत्म हो चुका है। मोदी सरकार ने जन भावनाओं से खिलवाड़ किया है। इसलिए इस बार केंद्र में कांग्रेस का आना तय है। उन्होंने जनसभा में शिमला संसदीय सीट से विनोद सुल्तानपुरी, मंडी से विक्रमादित्य सिंह, कांगड़ा से आनंद शर्मा, हमीरपुर से सतपाल रायजादा के पक्ष में वोट की अपील की। इस दौरान छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने भी संबोधित किया। शिमला संसदीय क्षेत्र के प्रभारी एवं शिक्षा मंत्री रोहित ठाकुर ने बागवानों की समस्याओं को राष्ट्रीय अध्यक्ष के सामने रखा। खरगे ने कहा कि हिमाचल पहले से ही बहुत मशहूर स्टेट रहा है। दिल्ली के बाद लोग हिमाचल को ही दूसरी राजधानी के रूप में देखते थे। क्योंकि यहां की प्राकृतिक खूबसूरती सभी का मन मोह लेती है। यह स्विट्जरलैंड से कम नहीं है। हिमाचल एक विशेष प्रदेश है।

वाराणसी में प्रियंका-डिंपल का रोड शो

वाराणसी, 25 मई। वाराणसी में लोकसभा चुनाव को लेकर कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी वाड्रा और सपा नेता डिंपल यादव अपनी चुनावी रैली निकाली। उनके साथ कांग्रेस नेता अजय राय भी मौजूद रहे। रैली की शुरुआत दुर्गाकुंड स्थित मां दुगा के आशीर्वाद के साथ की गई। रोड शो में कांग्रेस और सपा नेताओं को जमावड़ा दिखा। वे पार्टी समर्थित नारे लगाते रहे। वाहन पर बैठे प्रियंका, डिंपल और अजय राय के ऊपर गुलाब की पंखुड़ियां उड़ाई जा रही थीं। कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी और सपा सांसद डिंपल यादव ने पहले दुर्गाकुंड स्थित मां दुर्गा के चौथे स्वरूप माता कूष्मांडा का आशीर्वाद लिया, फिर रोड शो की शुरूआत की। रोड शो के रूट पर मानस मंदिर, त्रिदेव मंदिर और संकटमोचन मंदिर समेत 21 से अधिक छोटे बड़े मंदिर हैं। कांग्रेस के कार्यकर्ता रोड शो का जगह-जगह स्वागत करते रहे। इस दौरान रोड शो का स्वागत पुष्पवर्षा के साथ किया गया। रोड शो के दौरान कांग्रेस नेता और डिंपल ने जगह-जगह रूक कर जनता को संबोधित भी किया। इसके साथ ही इंडी गठबंधन प्रत्याशी अजय राय के लिए जनसमर्थन भी मांगा। कांग्रेस नेता अजय राय पब्लिक का अभिवादन करते रहे। कड़ी सुरक्षा के बीच रोड शो धीरे-धीरे लंका स्थित मालवीय जी की प्रतिमा के पास बढ़ रहा था। यहां भी कार्यकर्ताओं की मौजूदगी रही लेकिन ट्रॉमा सेंटर मोड़ पर ही काफिले को रोक दिया गया। इसके बाद प्रियंका गांधी और डिंपल यादव दोनों अपने कार में बैठकर निकल गईं। प्रियंका गांधी और डिंपल यादव के रोड शो में हजारों की संख्या में लोग शामिल हुए। रास्ते में गुलाब की पंखुडियों से रोड शो का स्वागत किया गया।

लोकसभा चुनाव 2024: छठे दौर के लिए मतदान 57.70 फीसदी वोट पड़े

सौरभ शर्मा

नई दिल्ली, 25 मई। लोकसभा चुनाव 2024 के छठे दौर के लिए मतदान 25 मई को खत्म हो गया। इस चरण में आठ प्रदेशों की 58 सीटों पर 889 उम्मीदवार चुनाव मैदान में रहे। छठे दौर में सबसे ज्यादा 14 सीटें उत्तर प्रदेश की जबकि सबसे कम जम्मू-कश्मीर की एक सीट पर वोटिंग हुई। आंकड़े के अनुसार, 58 सीटों पर कुल 57.70% फीसदी वोट पड़े। 2019 के चुनाव में इन 58 सीटों पर कुल 64.22% फीसदी वोटिंग हुई थी। सबसे ज्यादा 84.59 फीसदी मतदान पश्चिम बंगाल में हुआ था। वहीं, सबसे कम 8.98 फीसदी मतदान जम्मू-कश्मीर में दर्ज किया गया था। अब तक के चुनावों में मत प्रतिशत चर्चा का बड़ा विषय रहा है। शुरुआत में विपक्ष ने चुनाव आयोग पर देरी से वोटिंग के आंकड़े देने का आरोप लगाया जिसका आयोग ने खंडन किया। वहीं सत्ता पक्ष ने कहा कि विपक्ष ने पहले ही हार मान ली। लोकसभा चुनाव के पहले चरण में 21 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेश की 102 सीटों के लिए वोट डाले गए थे। 2019 में इन 102 सीटों 69.96 फीसदी वोट पड़े थे जबकि इस बार 66.14% मतदान हुआ है। दूसरे दौर में 13 राज्यों

और केंद्र शासित प्रदेशों की 88 सीटों पर मतदान हुआ था। पिछले चुनाव में इन 88 सीटों पर कुल 70.09 फीसदी मतदान हुआ था जबकि इस बार का आंकड़ा 66.71% रहा। यहां ध्यान देने वाली बात है कि मणिपुर की बाहरी मणिपुर लोकसभा सीट के 15 विधानसभा क्षेत्रों में पहले चरण में 19 अप्रैल को मतदान हुआ था, जबकि अन्य 13 विधानसभा क्षेत्रों में दूसरे चरण में मतदान कराया गया था। 11 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की 93 सीटों पर तीसरे चरण का मतदान हुआ था। इन 93 सीटों पर 2019 में कुल 66.89% लोगों ने अपने मताधिकार का इस्तेमाल किया था जबकि इस बार 65.68% वोटिंग हुई। 10 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की 96 सीटों पर चौथे चरण में मतदान हुआ। इन 96 सीटों पर 2019 में कुल 69.12 फीसदी लोगों ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया था। वहीं, इस बार 69.16 फीसदी मतदान हुआ है। मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए चुनाव आयोग ने कई तरह के अभियान चलाए जिसका असर चौथे चरण के मतदान में भी दिखा। इस तरह से पहले चार चरणों में कुल 66.95% मतदान हुआ है। 20 मई को पांचवें चरण में आठ राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की 49 सीटों पर मतदान कराया गया। निर्वाचन आयोग की तरफ से वोटर टर्नआउट मोबाइल एप पर जारी आधिकारिक आंकड़े के अनुसार, पांचवें चरण की 49 सीटों पर 62.20 फीसदी मतदान हुआ।

400 पार का नारा एक मजाक: कपिल सिब्बल

लखनऊ, 25 मई। कलकत्ता हाई कोर्ट ने तृणमूल सरकार (टीएमसी सरकार) की ओर से वर्ष 2010 के बाद जारी सभी ओबीसी प्रमाणपत्र को रद्द कर दिया। इस पर वरिष्ठ वकील और राज्यसभा सांसद कपिल सिब्बल ने प्रतिक्रिया दी। हालांकि, मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने हाई कोर्ट के इस फैसले

का विरोध किया है। इस मामले में सिब्बल ने प्रतिक्रिया दी। लोकसभा चुनाव को लेकर सिब्बल ने देश की सत्तारूढ़ पार्टी भाजपा पर कटाक्ष किया। उन्होंने लोगों से भाजपा के 400 पार के दावे को गंभीरता से लेने से मना किया। लोकसभा चुनाव को लेकर भी कपिल सिब्बल ने भाजपा पर कटाक्ष किया। उन्होंने कहा, जो जानकारी मुझे मिल रही वह यह है कि पांचवें, छठें और सातवें चरण में बदलाव हुए हैं। जो रफ्तार पांचवें और छठें चरण में देखा गया, बाकी के चरणों में ऐसा नहीं हुआ। लोग राम मंदिर के बारे में बात नहीं कर रहे हैं। वे महंगाई, बेरोजगारी और अन्य मुद्दों को उठा रहे हैं। इन चरणों में भाजपा को काफी नुकसान देखने को मिलेगा। अगर मुस्लिम, ओबीसी, एससी, एसटी और यादवों का समीकरण बनाया जाए, तो यह भापजा के लिए नुकसान साबित होगा। भाजपा के 400 पार के नारे पर प्रतिक्रिया देते हुए उन्होंने कहा कि इसे गंभीरता से न लें। उनलोगों (भाजपा) ने केवल मजाक किया है। पश्चिम बंगाल में वर्ष 2010 के बाद जारी सभी ओबीसी प्रमाणपत्र को रद्द करने के फैसले पर सिब्बल ने कहा कि हाई कोर्ट के किसी भी निर्णय को अपील के माध्यम से सुप्रीम कोर्ट में ले जाया जा सकता है। उन्होंने आगे कहा, अगर ऐसा होता है तो ममता बनर्जी के पास यह कहने का संविधानिक अधिकार है मुझे नहीं लगता यह फैसला सही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर निशाना साधते हुए सिब्बल ने कहा कि जब अरविंद केजरीवाल को राहत दी गई, तब पीएम मोदी ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट केजरीवाल को स्पेशल ट्रीटमेंट कैसे दे सकता है? एक तरफ पीएम मोदी सुप्रीम कोर्ट की आलोचना करते हैं और दूसरी तरफ ममता बनर्जी कहती है कि मैं यह स्वीकार नहीं करूंगी, मैं सुप्रीम कोर्ट जाऊंगी।

अनुमति मिले तो 24 घंटे में महिलाओं के खाते में डालेंगे 1500 रुपये: सीएम सुक्खू

नरेश मल्होत्रा

डमटाल(कांगड़ा), 25 मई। मुख्यमंत्री सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने कांगड़ा जिले के जवाली, इंदौरा और नूरपुर विधानसभा क्षेत्रों में कांग्रेस के लिए प्रचार किया। उन्होंने कांगड़ा से प्रत्याशी आनंद शर्मा को भारी मतों से विजयी बनाने की अपील की और भाजपा पर ताबड़तोड़ हमले किए।मुख्यमंत्री ने कहा कि भाजपा महिलाओं की 1500 रुपये पेंशन को रुकवाने के लिए रोज नए अड़ंगे डाल रही है। नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर और अन्य भाजपा नेता बार-बार-बार चुनाव आयोग के पास महिलाओं की सुख सम्मान निधि को रुकवाने में लगे हैं और दिल्ली से भी चुनाव आयोग पर दबाव डाला जा रहा है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के विरोध के बाद चुनाव आयोग ने महिलाओं की पेंशन के फार्म भरने को अनुमति दी और अब महिलाएं योजना के फार्म भर रही हैं। अगर भाजपा अपना विरोध वापस ले ले और चुनाव आयोग अनुमति दे तो 24 घंटे में महिलाओं को 1500 रुपये उनके खाते में ट्रांसफर कर दिए जाएंगे। अगर अनुमति नहीं भी मिली, तो जून में महिलाओं को दो किश्तों के 3000 रुपये एक साथ डाले जाएंगे। उन्होंने कहा कि कांग्रेस सरकार ने महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए कई प्रयास किए हैं। पुलिस में महिलाओं के लिए आरक्षण बढ़ाकर 30 प्रतिशत कर दिया है। सुक्खू ने कहा कि कांग्रेस चुनावी लाभ को देखकर काम नहीं करती। कांग्रेस सरकार ने सरकार की खराब माली हालत के बावजूद पहले ही कैबिनेट बैठक में प्रदेश के 1.36 लाख सरकारी

कर्मचारियों को पुरानी पेंशन दी, जबकि भाजपा नेता दिल्ली में एनपीएस के 9000 करोड़ रुपये को रुकवाने का काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि पिछली भाजपा सरकार में जयराम ठाकुर पांच साल तक सोते रहे और प्रदेश का खजाना लुटाते रहे। कांग्रेस सरकार ने भ्रष्टाचार को रोकर जनता का पैसा जनता के बीच बांटा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि भाजपा ने धन-बल से लोकतांत्रिक तरीके से चुनी सरकार को गिराने का एक महीने तक असफल प्रयास किया है। कांग्रेस सरकार की लड़ाई अब जनता लड़ेगी। उन्होंने कहा कि आपकी वोट की ताकत ही लोकतंत्र को बचा सकता है। अगर इसी तरह विधायक राजनीतिक मंडी में बिकते रहे तो जनता के वोट की क्या अहमियत रह जाएगी। 1 जून को प्रदेश की जनता खरीद-फरोख्त की राजनीति को कड़ा सबक सिखाएगी। सुक्खू ने कहा कि जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी वाराणसी से चुनाव लड़ सकते हैं तो आनंद शर्मा हिमाचल के रहने वाले हैं। भाजपा प्रत्याशी जब कांगड़ा सहकारी बैंक के चेयरमैन थे तो बैंक में लूट हुई, जिसकी जानकारी सरकार के पास है। इस अवसर पर कांग्रेस प्रत्याशी आनंद शर्मा, कृषि मंत्री चंद्र कुमार, राज्य योजना बोर्ड के उपाध्यक्ष भवानी सिंह पठानिया, विधायक मलेंद्र राजन समेत जिला कांग्रेस अध्यक्ष कर्ण सिंह पठानिया, पार्टी के पदाधिकारी और कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

अल्लाह-माये हलीना चाड के नये प्रधानमंत्री नियुक्त

एजेंसी

अन्'ड्जमेना। अफ्रीकी देश चाड के राष्ट्रपति महामत इदरीस डेबी ने चीन में देश के राजदूत अल्लाह-माये हलीना को देश का नया प्रधानमंत्री नियुक्त किया है।चाड के अखबार अल विहदा ने अपनी रिपोर्ट में यह जानकारी दी। इससे पहले कार्यवाहक प्रधानमंत्री सक्सेस मसरा ने घोषणा की थी कि उन्होंने मई

की शुरुआत में देश में हुए राष्ट्रपति चुनाव के बाद अपने पद से इस्तीफा दे दिया था। रिपोर्ट के मुताबिक श्री हलीना को जल्द से जल्द नयी सरकार बनाने के लिए कहा गया है। श्री हलीना ने चीन में राजदूत के रूप में नियुक्त होने से पहले पूर्व राष्ट्रपति इदरीस डेबी इटनो के अधीन राज्य प्रोटोकॉल के महानिदेशक के रूप में कार्य किया था।

सुरक्षा परिषद ने संयुक्त राष्ट्र संघ और सहायता कर्मियों पर हमलों के निंदा प्रस्ताव को दी मंजूरी

संयुक्त राष्ट्र। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने उस प्रस्ताव को मंजूरी दे दी जिसमें मानवीय कार्यों में लगे संयुक्त राष्ट्र के सहायता कार्यकर्ताओं और संयुक्त राष्ट्र कर्मियों पर हमलों की कड़ी निंदा की गई है। प्रस्ताव में मांग की गई है कि सभी लड़ाके अंतरराष्ट्रीय कानून के अनुसार उनकी रक्षा करें। प्रस्ताव के पक्ष में 14 मत पड़े जबकि इसके खिलाफ किसी ने भी वोट नहीं किया। रूस मतदान से अनुपस्थित रहा। स्विटजरलैंड-प्रायोजित इस प्रस्ताव में संयुक्त राष्ट्र और मानवीय कर्मियों के खिलाफ बढ़ते हमलों और खतरों के साथ-साथ लड़ाकों द्वारा अंतरराष्ट्रीय मानवीय कानून की निरंतर उपेक्षा और उल्लंघन किये जाने को लेकर गंभीर चिंता व्यक्त की गई है।

लंदन की कोर्ट ने मनी लांड्रिंग केस में महिला को सुनाई 80 महीने जेल की सजा

लंदन। लंदन की अदालत ने मनी लांड्रिंग केस में एक महिला को 80 महीने जेल की सजा सुनाई। उसे पांच अरब पाउंड (6.3 अरब डॉलर) की धोखाधड़ी की आय को छिपाने में मदद करने के लिए बिटकॉइन को नकदी और संपत्ति में बदलने के मामले में दोषी ठहराया गया।

अभियोजकों ने कहा कि वेन जियान ने 2014 और 2017 के बीच धोखाधड़ी वाली योजनाओं में 130,000 चीनी निवेशकों से कथित तौर पर चुराए गए धन को छिपाने में मदद की थी। उस पर धोखाधड़ी में शामिल होने का आरोप नहीं है। इसकी साजिश एक अन्य महिला ने रची थी। ब्रिटिश पुलिस ने 61,000 से अधिक बिटकॉइन वाले वॉलेट जब्त किए थे। 2021 में जब्त 61,000 बिटकॉइन का मूल्य 1.4 अरब पाउंड था। अब कीमत तीन अरब पाउंड से अधिक है। 42 वर्षीय वेन ने कहा था कि उन्हें बिटकॉइन से जुड़े आपराध के बारे में कोई जानकारी नहीं है। मार्च में साउथवार्क क्राउन कोर्ट में जूरी सदस्यों ने उसे दोषी पाया था।

नेपाल और चीन के बीच रहे सभी 14 सीमा नाका शनिवार को खुला

काठमांडू। नेपाल और चीन के बीच रहे सभी 14 सीमा नाका को शनिवार से शनिवार को खुला। नेपाल के गृह मंत्रालय के मुताबिक कोरोना के समय बन्द हुए कुछ सीमा नाका सहित अन्य सभी नाका को खोलने की पूरी तैयारी हो चुकी है। शनिवार को नेपाल-चीन सीमा के सभी 14 नाका पर कार्यक्रम का आयोजन कर बॉर्डर खोलने की प्रक्रिया पूरी होगी। नेपाल के संखुवासभा जिले के किमांथांका और तिब्बत के छेम्दांग से जुड़े नाका खोलने की तैयारी के लिए संखुवासभा के प्रमुख जिलाधिकारी वहां पहुंचे हैं। मोबाइल फोन पर बातचीत में प्रमुख जिलाधिकारी ध्रुव बहादुर खड्का ने बताया कि शनिवार को सुबह एक कार्यक्रम का आयोजन कर सीमा नाका खोलने का शुभारंभ किया जाएगा। उन्होंने बताया कि नेपाल चीन सीमा से होते हुए यह सड़क नेपाल भारत की विराटनगर जोगबनी नाका तक जुड़ने से त्रिदेशीय व्यापार को फायदा हो सकता है। कल नेपाल के विदेश मंत्री नारायणकाजी श्रेष्ठ के साथ गृह सचिव और तीनों सुरक्षा अंगों के प्रमुख तिब्बत के छेम्दांग पहुंचेंगे। विदेश मंत्री की तरफ से ही नेपाल और चीन के बीच रहे सभी 14 सीमा नाका को खोलने की घोषणा की जाएगी।

नेपाल में कोरोना वायरस का नया वेरिएंट मिला, केपी 1 और केपी 2 की पुष्टि

काठमांडू। नेपाल में कोरोना वायरस का नया वेरिएंट मिला है। कई मरीजों की जांच के बाद वायरस के नए वेरिएंट केपी 1 और केपी 2 की पुष्टि हुई है। राष्ट्रीय जनस्वास्थ्य प्रयोगशाला के प्रमुख डॉ. शेरबहादुर पुन ने बताया कि कोरोना रोगियों के रैंडम सैम्पलिंग की जांच करने 40 प्रतिशत लोगों में केपी 1 और केपी 2 वेरिएंट होने की पुष्टि की गई है। उन्होंने कहा कि नेपाल में पहली बार मिला कोरोना वायरस का नया वेरिएंट कोरोना के ओमिक्रोन का ही सब वेरिएंट है। यह वेरिएंट अभी सिंगापुर, अमेरिका, यूरोप और कई अफ्रीकी देशों में देखने को मिला है।

फ़िलिस्तीनियों ने राफा में इज़रायली अभियान रोकने के संयुक्त राष्ट्र न्यायालय के फैसले का स्वागत किया

एजेंसी

रामल्लाह। फिलिस्तीनी राष्ट्रपति ने अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय (आईसीजे) के फैसले का स्वागत किया, जिसमें इज़रायल को राफा में अपने सैन्य आक्रमण को तत्काल प्रभाव से रोकने का आदेश दिया गया है। फ़िलिस्तीनी आधिकारिक समाचार एजेंसी डब्ल्यूएएफए द्वारा दिए गए एक बयान में राष्ट्रपति ने कहा, इसने अंतर्राष्ट्रीय समुदाय से इज़रायल को आईसी के फैसलों को लागू करने और अंतर्राष्ट्रीय वैधता और अंतर्राष्ट्रीय कानून के प्रस्तावों का सम्मान करने और लागू करने के लिए मजबूर करने का आह्वान किया। बयान में कहा गया है कि इज़रायल खुद को अंतरराष्ट्रीय कानून से ऊपर का राज्य मानता है और अंध और पक्षपातपूर्ण अमेरिकी समर्थन के परिणामस्वरूप उसे जवाबदेह नहीं ठहराया जा सकता है।

डब्ल्यूएएफए के अनुसार

राष्ट्रपति ने फिलिस्तीनी अधिकारों का समर्थन करने वाले देशों के लिए अपनी सराहना दोहराई, इस बात पर जोर दिया कि यह अंतरराष्ट्रीय सहमति एक बार फिर साबित करती है कि इजरायल अपने सहयोगियों के साथ अलग-थलग है, जो इसे समर्थन, सुरक्षा और दण्ड से मुक्ति प्रदान करते हैं।

एससीओ देश चाबहार पोर्ट, आईएनएस ट्रांसपोर्ट कॉरिडोर का कर सकते हैं उपयोग : भारत

एजेंसी

अस्ताना/नई दिल्ली। भारत ने नजदीकी सम्पर्क के निर्माण पर जोर देते हुए कहा है कि शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) देश क्षेत्र में आर्थिक समृद्धि लाने के लिए ईरान के चाबहार बंदरगाह और अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारे के साथ साथ भारत-मध्य पूर्व-यूरोप के आर्थिक गलियारा (आईएमईसी) अधिकतम उपयोग की दिशा में काम कर सकते हैं।

विदेश मंत्रालय में सचिव (आर्थिक संबंध) दम्मू रवि ने कजाकिस्तान के अस्ताना में एससीओ के विदेश मंत्रियों की बैठक में अपने संबोधन में कहा कि किसी भी क्षेत्र की प्रगति के लिए मजबूत कनेक्टिविटी महत्वपूर्ण है। यह सदस्यों के बीच बेहतर व्यापार और विश्वास का निर्माण करता है। उन्होंने परोक्ष संदर्भ से चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (जो पाकिस्तान के

कब्जे वाले कश्मीर से होकर गुजरता है) का जिक्र करते हुये कहा कि सदस्य देशों की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान करना आवश्यक है।श्री रवि ने आतंकवाद को दुनिया की वैश्विक चुनौतियों में से एक बताया और यह क्षेत्रीय और वैश्विक शांति के लिए एक बड़ा खतरा बन गया है। उन्होंने आतंकवाद की चुनौती से निपटने के लिए निर्णायक कार्रवाई का आह्वान किया।

उनहोंने कहा, इसके स्वरूप और अभिव्यक्तियों के बावजूद, हमें सीमा पार आतंकवाद और आतंक के वित्तपोषण सहित आतंकवाद के खिलाफ अपनी लड़ाई में एकजुट होना चाहिए। ऐसे गंभीर मामलों पर दोहरे मापदंड के लिए कोई जगह नहीं होनी चाहिए।% एससीओ-आरएटीएस तंत्र इस संबंध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहेगा। भारत कट्टरपंथ का मुकाबला करने के लिए 2018 में एससीओ राष्ट्राध्यक्षों द्वारा युवाओं को दिए गए संबोधन से निकले एक्शन प्रोग्राम को लागू करने के लिए प्रतिबद्ध है।

रूस ने खारकीव में रेलवे पटरी और ट्रेन को उड़ाया

एजेंसी

कीव। यूक्रेन के खारकीव क्षेत्र में रूस ने हमला कर ट्रेन और रेलवे पटरियों को उड़ा दिया। यूक्रेनी अधिकारियों ने बताया कि खारकीव में रूसी सेना नए सिरे से भीषण हमला करने के बाद क्षेत्र से बच्चों को सुरक्षित स्थानों पर भेजा गया है। यूक्रेन के राष्ट्रीय रेलवे संचालक यूक्रजालिज्नित्सिया के

मुताबिक रात भर किए गए हमले में इमारतों और मालगाड़ी को भी नुकसान पहुंचा है। हालांकि, किसी के घायल होने की खबर नहीं है। खारकीव के गवर्नर ओलेह सिनियेहुबोव ने बताया कि रूस द्वारा 10 मई को खारकीव क्षेत्र पर आक्रमण शुरू करने के बाद से 11,000 से अधिक लोगों को वहां से सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया है। अधिकारियों ने क्षेत्र में अपने माता-पिता के बिना रह रहे 123 अनाथों और बच्चों को अगले 60 दिन के लिए सुरक्षित स्थान पर भेजने की घोषणा की है।

सूडान में सेना की वजह से छिड़ा गृहयुद्ध, रॉकेट और टैंक से वार-पलटवार

एजेंसी

सूडान । सूडान में पिछले साल से चल रहा युद्ध थमने का नाम नहीं ले रहा है. 15 अप्रैल 2023 को सूडान में पैरामिलिट्री रैपिड सपोर्ट फोर्स और सेना के बीच गृहयुद्ध छिड़ गया था. जिसके बाद अब दोनों सेनाएं एक दूसरे पर रॉकेट और टैंक से हमला कर रही है. सूडान की राजधानी खारतूम में देश की सेना के दो धड़ों में जंग चल रही है.

सैन्य गृहयुद्ध की वजह से पूरे शहर में विनाश की भयावह आग लगी हुई है. ये युद्ध सूडानी सेना के कमांडर जनरल अब्देल-फतह बुरहान और पैरामिलिट्री रैपिड सपोर्ट फोर्स के प्रमुख जनरल मोहम्मद हमदान डगलो के बीच वर्चस्व की लड़ाई के चलते चल रहा है. सूडानी सेना के कमांडर पैरामिलिट्री रैपिड सपोर्ट फोर्स का सेना में विलय करना चाहते हैं, लेकिन पैरामिलिट्री रैपिड सपोर्ट फोर्स इसके खिलाफ है. सेना के दोनों गुट अपनी ताकत पहले की तरह ही कायम

रखना चाह रहे हैं. जिस के चलते दोनों में जंग हो रही है.

यूएन ने दी चेतावनी

रैपिड सपोर्ट फोर्सेज के अर्धसैनिक बलों ने हाल ही में सूडान के शहर अल-फशीर में छापेमारी की, जिसके बाद हजारों लोग शहर से भागने पर मजबूर है. सूडान में लगातार चल रहे गृहयुद्ध के चलते संयुक्त राष्ट्र ने चेतावनी दी कि देश में नरसंहार छिड़ सकता है. नरसंहार की रोकथाम पर संयुक्त राष्ट्र महासचिव के विशेष सलाहकार ऐलिस वैरिमु नेडेरितु ने बताया, सूडान के शहर अल फशीर में कई नागरिकों को उनकी जातीयता के आधार पर निशाना बनाया गया, जहां हाल के दिनों में लड़ाई काफी तेज हो गई है.

हजारों लोगों की गई जान

शहर में एक मेडिकल चैरिटी ने 10 दिनों में 700 से ज्यादा मौतों की सूचना दी. संयुक्त राष्ट्र ने जानकारी दी कि इस गृहयुद्ध में हजारों लोग मारे गए हैं और लाखों लोगों को अपने घरों से भागने पर मजबूर होना पड़ा है. संयुक्त राष्ट्र का कहना है कि पिछले साल पश्चिमी दारफुर शहर एल जेनिना में लगभग 15,000 लोगों के मारे जाने की आशंका है. इस युद्ध के चलते सूडान में भुखमरी का भी भयानक संकट बना हुआ है.

गाजा से तीन और बंधकों के शव बरामद, हमास की कैद में अभी भी 100 लोग!

एजेंसी

लंदन। इजराइल की सेना ने कहा कि पिछले साल सात अक्टूबर को मारे गए तीन और बंधकों के शव रात को गाजा से बरामद किए गए. उधर संयुक्त राष्ट्र की शीर्ष अदालत ने इस बारे में नियम बनाने की तैयारी कर ली है कि क्या इजराइल को अपने सैन्य अभियानों को बंद करना चाहिए. सेना ने बताया कि हनान याब्लोंका, मिशेल निसेनबॉम और ओरियन हर्नांदेज के शव मिल गए हैं और उनके परिवारों को सूचित कर दिया गया है. सेना के मुताबिक, हमास द्वारा मेफालिज्म चौराहे पर किए गए एक हमले में तीनों मारे गए थे और उनके शव गाजा ले जाए गए थे.

सेना ने करीब एक हफ्ते पहले ही कहा था कि उसे सात अक्टूबर को मारे गए तीन अन्य इजराइली बंधकों के शव मिले हैं. हमास चरमपंथियों ने सात अक्टूबर को इजराइल पर हमला कर दिया था, जिसमें करीब 1,200 लोग मारे गए थे. इनमें अधिकतर आम नागरिक थे.

इसके अलावा हमास ने करीब 250 लोगों को बंधक बना लिया था. तब से अब तक करीब आधे बंधकों

को छोड़ा जा चुका है, जिनमें से अधिकतर को इजराइल द्वारा कैद में डाले गए फिलिस्तीनियों को नवंबर में हफ्ते भर चले संघर्ष विराम के दौरान रिहा किये जाने के बदले छोड़ा गया. इजराइल का दावा है कि गाजा में अब भी करीब 100 लोगों को बंधक बनाकर रखा गया है. उसने 30 और बंधकों के मारे जाने का दावा भी किया है.

सभी बंधकों को वापस लाने का संकल्पः इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने हमास को खत्म करने और सभी बंधकों को वापस लाने का संकल्प लिया है, लेकिन उन्हें फिलहाल बहुत कम सफलता मिली है. उन पर इस्तीफा देने का दबाव है और अमेरिका ने गाजा में मानवीय स्थिति को देखते हुए इजराइल को दिये जा रहे समर्थन में कटौती करने की धमकी दी है. नेतन्याहू ने कहा कि अपहृत नागरिकों, मारे गए लोगों और जीवित लोगों, सभी को वापस लाने की जिम्मेदारी देश की है।

इब्राहिम रईसी की मौत पर आमने-सामने ईरान के लोग, लंदन में जमकर बवाल

एजेंसी

लंदन। ईरान के राष्ट्रपति इब्राहिम रईसी की मौत के बाद लंदन के वेम्बले में हो रही एक शोक सभा में ईरानी मूल के लोग आपस में भिड़ गए. दरअसल ईरान मूल के कुछ लोगों द्वारा शहर के दिवान अल-काफील कम्युनिटी सेंटर में राष्ट्रपति की मौत पर एक शोक सभा का आयोजन किया गया था. ये बात लंदन में रह रहे ईरान सरकार के विरोधियों को नागवार गुज़री और वह कम्यूनिटी सेंटर के बाहर प्रदर्शन करने लगे. जिसके बाद ईरान सरकार समर्थक और विरोधी आपस में भिड़ गए. सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे वीडियो में देखा जा सकता है कि ईरान सरकार का विरोध करने वाली एक महिला के साथ सरकार समर्थित लोग धक्का मुक्की कर रहे है. विरोध करने वाले लोगों के हाथ में बैनर और इस्लामिक क्रांति से पहले के शेर और सूरज वाले ईरानी झंडे हैं. ये लोग इब्राहिम रईसी की मौत का जश्न मानाते दिख रहे है.

क्या है पूरा मामला?

ईरानी मूल के लोगों द्वारा इब्राहिम रईसी की याद में कम्यूनिटी सेंटर में एक शोक सभा का आयोजन किया

जा रहा था. जिसके बाद ईरान की सत्तावादी सरकार के कुछ विरोधी वहां विरोध करने और रईसी की मौत का जशन मनाने बाहर खड़े हो गए, तभी ईरान सरकार के वफादारों ने उन पर हमला कर दिया.

वीडियो में सुना जा सकता है कि टकराव शुरू होने के बाद ईरान सरकार विरोधी एक महिला फ़ारसी में 'मदद' के लिए चिल्ला रही है, ये महिला 'निका शकरामी' का नाम भी चिल्लाती दिख रही है. 2022 में महसा जीना अमिनी की मौत के बाद हुए विरोध प्रदर्शनों में ईरान सुरक्षाबलों की कार्रवाई में 16 साल की निकी शकरामी की मौत हो गई थी. वीडियो में देखा जा सकता है कि काले कपड़े पहने कई लोग प्रदर्शनकारियों को पीट रहे हैं.

ईरान इंटरनेशनल की रिपोर्ट के मुताबिक लंदन पुलिस ने बताया कि पूरी हिंसा में एक शख्स की गिरफ्तारी की गई है. वीडियो और घायलों के आधार पर पूरे मामले की जांच की जा रही है. मेट पुलिस के मुताबिक इस घटना में चार लोग घायल हुए थे, जिनका इलाज किया जा रहा है. पुलिस ने ये भी कहा कि सभी घायल खतरे से बाहर हैं.

शरीफ का जून में चीन दौरा, इकोनॉमिक कॉरिडोर पर होगी चर्चा

एजेंसी

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के पीएम शहबाज शरीफ 4 से 7 जून तक चीन दौरे पर जा सकते हैं. अपनी चार दिवसीय राजकीय यात्रा के दौरान पाकिस्तान के प्रधानमंत्री चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के साथ बैठक करेंगे. इस दौरान वह चीन-पाकिस्तान इकोनॉमिक कॉरिडोर (सीपीईसी) के दूसरे चरण और अन्य मुद्दों पर चर्चा करेंगे.

CPEC चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव का 50 बिलियन अमेरिकी डॉलर का पाकिस्तानी घटक है. 3,000 किमी लंबी चीनी बुनियादी ढांचा नेटवर्क परियोजना पाकिस्तान में निर्माणाधीन है और इसका उद्देश्य पाकिस्तान के ग्वादर और कराची बंदरगाहों को चीन के झिंजियांग उइगुर स्वायत्त क्षेत्र से जमीन से जोड़ना है.

यूएई दौरे पर प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ

बता दें कि 8 फरवरी के आम चुनावों के बाद प्रधानमंत्री शहबाज़ की बीजिंग की पहली यात्रा होगी. फिलहाल प्रधानमंत्री एक दिवसीय दौरे पर यूएई में हैं. अपनी यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री की संयुक्त अरब अमीरात के राष्ट्रपति और अबू धाबी के शासक शेख मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान से मुलाकात की उम्मीद है

पाकिस्तान-चीन विदेश मंत्रियों की बातचीत

इसके अलावा पीएम शरीफ के अन्य अमीराती अधिकारियों, व्यापारिक हस्तियों और वित्तीय संस्थानों के नेताओं के साथ भी मुलाकात करने की उम्मीद है. उपप्रधानमंत्री और विदेश मंत्री मोहम्मद इशाक डार ने हाल ही में चार दिवसीय यात्रा के लिए बीजिंग का दौरा किया था. अपनी यात्रा के दौरान, उन्होंने चीनी विदेश मंत्री वांग यी के साथ पांचवें पाकिस्तान-चीन विदेश मंत्रियों की रणनीतिक वार्ता की सह-अध्यक्षता की.

परियोजनाओं में तेजी

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि पाकिस्तान और चीन विभिन्न क्षेत्रों में सीपीईसी के तहत परियोजनाओं के कार्यान्वयन में तेजी लाने पर सहमत हुए हैं. यह समझौता बीजिंग में योजना और विकास मंत्री अहसान इकबाल और चीन के राष्ट्रीय विकास और सुधार आयोग के

उपाध्यक्ष झाओ चेनक्सिन के बीच एक बैठक के दौरान हुआ. दोनों पक्ष औद्योगिक सहयोग फ्रेमवर्क समझौते को लागू करने और उद्योग, खानों और खनिज क्षेत्रों के आधुनिकीकरण के लिए एक कार्य योजना विकसित करने पर सहमत हुए हैं. उन्होंने सीपीईसी के दूसरे चरण में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और कृषि आधुनिकीकरण में सहयोग को प्राथमिकता देने का भी संकल्प लिया है।

रूस के खिलाफ फिर यूक्रेन के साथ अमेरिका, 275 मिलियन डॉलर सैन्य मदद का ऐलान

एजेंसी

वाशिंगटन। अमेरिका ने यूक्रेन के लिए 275 मिलियन अमेरिकी डॉलर की नई सुरक्षा सहायता की घोषणा की. साथ ही अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने रूस के साथ चल रहे युद्ध के बीच यूक्रेन के लिए अमेरिकी समर्थन को दोहराया. ब्लिंकन ने कहा कि यूक्रेन की नई सुरक्षा सहायता कीव को खार्किव के पास मॉस्को के हमले को विफल करने में मदद करने के अमेरिकी प्रयासों का हिस्सा है.

एक्स पर एक पोस्ट में, ब्लिंकन ने कहा कि आज, अमेरिका यूक्रेन के बहादुर लोगों का समर्थन करने के लिए 275 मिलियन अमेरिकी डॉलर के हथियारों की घोषणा कर रहा है. हम रूस की आक्रामकता के खिलाफ लड़ाई में यूक्रेन के साथ खड़े रहेंगे.

यूक्रेन के लिए सैन्य मदद का ऐलान

ब्लिंकन ने कहा, अमेरिका आज बहादुर यूक्रेनी लोगों का समर्थन करने के लिए यूक्रेन के लिए हथियारों की एक महत्वपूर्ण खेप का ऐलान कर रहा है. क्योंकि वे रूस की आक्रामकता के खिलाफ अपने देश की रक्षा कर रहे हैं. उन्होंने कहा कि यह 275 मिलियन अमेरिकी डॉलर का पैकेज, यूक्रेन को खार्किव के पास रूस के हमले को विफल करने में मदद के हमारे प्रयासों का हिस्सा है.

यूक्रेन के लोगों की रक्षा

उन्होंने कहा कि नेशनल सिक्योरिटी सप्लिमेंट पर हस्ताक्षर करने के बाद से यह अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन द्वारा अधिकृत पांचवां सुरक्षा सहायता पैकेज है और

राष्ट्रपति ड्रॉडाउन अथॉरिटी का उपयोग करने वाला तीसरा पैकेज है. एंटनी ब्लिंकन ने कहा कि पिछले पैकेजों से सहायता पहले ही पहुंचा दी गई हैं और नई सैन्य सहायता जितनी जल्दी हो सके पहुंचाई जाएगी ताकि यूक्रेनी सेना इसका उपयोग अपने क्षेत्र की रक्षा और यूक्रेन के लोगों की रक्षा के लिए कर सके.

ब्लिंकन ने कहा कि जैसा कि राष्ट्रपति बाइडेन ने स्पष्ट कर दिया है, अमेरिका और हमारे द्वारा इकट्ठा किया गया अंतर्राष्ट्रीय गठबंधन अपनी स्वतंत्रता की रक्षा में यूक्रेन के साथ खड़ा रहेगा. विशेष रूप से, 2022 में मॉस्को और कीव के बीच युद्ध शुरू होने के बाद से अमेरिका ने यूक्रेन को समर्थन की पेशकश की है.

यूक्रेन के दौरे पर ब्लिंकन

इस महीने की शुरुआत में, एंटनी ब्लिंकन संबंधों को बढ़ावा देने और रूस के साथ चल रहे युद्ध के बीच कीव को अमेरिकी समर्थन की पुष्टि करने के लिए यूक्रेन की यात्रा पर पहुंचे. यूक्रेन पहुंचने पर, ब्लिंकन ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, मैं यूक्रेन के लिए अपना अटूट समर्थन प्रदर्शित करने के लिए कीव लौट आया क्योंकि वे रूसी आक्रामकता के खिलाफ अपनी स्वतंत्रता की रक्षा कर रहे हैं.

हमले में कई लोगों की मौत

फरवरी 2022 में मॉस्को और कीव के बीच युद्ध शुरू होने के बाद से उन्होंने चौथी बार यह अघोषित यात्रा की. 24 मई को, रूस ने यूक्रेन के खार्किव के कई स्थानों पर मिसाइल हमले किए, जिसमें एक प्रिंटिंग हाउस भी शामिल था, जिसमें सात लोग मारे गए और 23 अन्य घायल हो गए। सीएनएन की रिपोर्ट के अनुसार, क्षेत्रीय गवर्नर ओलेह सिनीहुबोव के अनुसार, मारे गए सात लोग, जिनमें कम से कम पांच महिलाएं शामिल थीं.

शहर के केंद्र के दक्षिण में स्थित प्रिंटिंग हाउस में कम से कम 16 लोग घायल हो गए, और अन्य स्थान पर सात अन्य घायल हो गए. सीएनएन की रिपोर्ट के मुताबिक, रूसी सैनिकों ने यूक्रेन में कमजोर सीमा रेखा का फायदा उठाया है.

पिछले दो सप्ताह से रूसी सेना खार्किव की ओर बढ़ी है. इससे पहले युद्ध में, रूसी सेनाओं ने आज़ाद होने से पहले क्षेत्र के कुछ हिस्सों पर कब्ज़ा कर लिया था. कंपनी के बयान के मुताबिक, सुबह यूक्रेनी राज्य रेलवे नेटवर्क पर भी हमला किया गया. कंपनी ने कहा कि हमले में छह कर्मचारी घायल हो गए.

पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में एक रोटी की सरकारी कीमत 14 रुपये

एजेंसी

लाहौर। पाकिस्तान के पंजाब प्रांत की सरकार ने रोटी की नई कीमत तय की है। इस बारे में सरकार ने अधिसूचना जारी की है।

कौमी पत्रिका

संपादक-गुरचरन सिंह बब्बर

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक, गुरचरन सिंह बब्बर ने कौमी पत्रिका प्रिंटिंग प्रेस, सेक्टर ए-4/ए-144 इंडस्ट्रीयल एरिया ट्रोनिका सिटी लोनी (गाजियाबाद), उत्तर प्रदेश से छापकर प्रकाशित किया।

Corporate Office:
5, Bahadurshah Zafar Marg
ITO, New Delhi-110002

फोन : 011-41509689, 23315814
मोबाइल नंबर : 9312262300

E - mail address :
qpatrika@gmail.com
Website: www.qaumipatrika.in

R.N.I. No.
UP-HIN/2007/21472

Legal Advisors:
Advocate Mohd. Sajid
Advocate Dr. A.P.Singh
Advocate Manish Sharma
Advocate Pooja Bhaskar Sharma

सहकारी संस्थाओं में वित्तीय घपले को लेकर गृहमंत्री लामिछाने के खिलाफ पीड़ितों ने शुरू किया अनशन

एजेंसी

काठमांडू। सहकारी संस्थाओं के धन की व्यापक अनियमितता मामले में घिरे गृहमंत्री रवि लामिछाने के खिलाफ पीड़ित व्यक्तियों ने रिले अनशन शुरू किया है। पोखरा, भैरहवा, बुटवल, चितवन और काठमांडू के अलग अलग सहकारी संस्थाओं के पीड़ित व्यक्तियों ने एक समूह बनाकर आज से गृहमंत्री रवि लामिछाने के खिलाफ आन्दोलन शुरू किया है। काठमांडू के माइतीघर मंडला में सहकारी पीड़ितों ने रिले अनशन शुरू कर दिया है। इन पीड़ित पक्ष को विपक्षी दलों का भी समर्थन है। गृहमंत्री के खिलाफ प्रमुख विपक्षी दल नेपाली कांग्रेस सहित सभी विपक्षी दलों की तरफ से आगामी रविवार को विरोध प्रदर्शन करने का फैसला पहले ही किया जा चुका है। गृहमंत्री के खिलाफ काठमांडू सहित एक साथ कई शहरों में रिले अनशन की शुरुआत हुई है। आन्दोलनरत सहकारी पीड़ितों ने बताया कि आज पूर्वाह्न ठीक 11 बजे से काठमांडू के माईतीघर के अलावा पोखरा, बुटवल, भैरहवा, धरान, नवलपरासी और चितवन में भी रिले अनशन की शुरुआत हुई है। सहकारी बचतकर्ता संरक्षण राष्ट्रीय अभियान महासंघ के अध्यक्ष कुशलव केसी ने बताया कि जब तक बचतकर्ताओं का एक-एक पैसा वापस नहीं आ जाता, तब तक उनका आन्दोलन वापस नहीं होगा।

राजधानी में हुआ पुस्तक का विमोचन

एजेंसी

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी में 'इकोज ऑफ एनलाइटनमेंट-आईजीएनसीए जर्नी इनटू बुद्धिज्म' पुस्तक का लोकार्पण किया गया। इस पुस्तक को बुद्ध पूर्णिमा के उपलक्ष्य में संस्कृति मंत्रालय के स्वायत्त संस्थान

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए) द्वारा प्रकाशित की गयी है। जिसका उद्देश्य आईजीएनसीए के महत्वपूर्ण प्रयासों के बारे में और अधिक जानकारी देना तथा साथ ही बौद्ध धर्म के संक्षिप्त ऐतिहासिक विकास, इसके दार्शनिक आधार और पूरे एशिया में इसके सांस्कृतिक प्रभाव का विवरण प्रस्तुत कराना है।

एस जयशंकर, हरदीप सिंह पुरी, बांसुरी स्वराज, वीरेंद्र सचदेवा समेत इन दिग्गजों ने किया मतदान

नई दिल्ली । लोकसभा चुनाव के छठे चरण में दिल्ली की सभी सात सीटों पर वोटिंग सुबह सात बजे से जारी है। चुनावी रणनीति के तहत भाजपा की यह कोशिश है कि दोपहर से पहले इन सीटों पर ज्यादा से ज्यादा मतदान करवा लिया जाए। यही वजह है कि एक ओर जहां पार्टी बूथ स्तर पर प्रबंधन में लगे कार्यकर्ताओं के जरिए ज्यादा से ज्यादा मतदाताओं को बूथ स्तर तक आने के लिए प्रोत्साहित करने के अभियान में जुटी हुई है।

तो वहीं पार्टी के दिग्गज नेता एवं उम्मीदवार भी सुबह-सुबह अपना वोट डालकर पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ-साथ मतदाताओं को भी प्रोत्साहित करने का प्रयास कर रहे हैं। केंद्रीय मंत्री एस. जयशंकर, केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी, भाजपा के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा, पूर्व सांसद गौतम गंभीर, दिल्ली के भाजपा प्रवक्ता प्रवीण शंकर कपूर सहित कई नेताओं ने सुबह-सुबह पोलिंग बूथ पर पहुंचकर अपना-अपना वोट डाला।

नई दिल्ली से भाजपा उम्मीदवार बांसुरी स्वराज ने झंडेवाला मंदिर में पूजा की। इसके बाद मतदान केंद्र पहुंचकर अपना वोट डाला। वहीं पूर्वी दिल्ली से पार्टी के उम्मीदवार हर्ष मल्होत्रा ने माता के मंदिर में पूजा करने के बाद बूथ पर जाकर वोट डाला। दक्षिण दिल्ली से भाजपा उम्मीदवार रामवीर सिंह बिधूड़ी और उत्तर पश्चिम दिल्ली से उम्मीदवार योगेंद्र चंदोलिया ने भी मतदान किया। चांदनी चौक से भाजपा उम्मीदवार प्रवीण खंडेलवाल ने भी अपने मताधिकार का प्रयोग किया। लोगों को प्रेरित करने के लिए भाजपा के कई नेताओं ने अपने पूरे परिवार सहित वोट डाला। वोट डालने के बाद भाजपा के दिग्गज नेताओं ने मतदाताओं से अपने-अपने घरों से बाहर निकल कर वोट डालने की अपील की है। भाजपा नेताओं ने दिल्ली की सभी सातों सीटें जीतकर केंद्र में फिर से भाजपा के नेतृत्व वाली एनडीए गठबंधन की सरकार बनाने का दावा भी किया। भाजपा ने एक बार फिर से दिल्ली की सभी सातों सीटों पर जीत दर्ज करने के लिए पश्चिम दिल्ली से कमलजीत सहरावत, दक्षिण दिल्ली से रामवीर सिंह बिधूड़ी, उत्तर पश्चिम दिल्ली से योगेंद्र चंदोलिया, पूर्वी दिल्ली से हर्ष मल्होत्रा, उत्तर-पूर्वी दिल्ली से मनोज तिवारी, चांदनी चौक से प्रवीण खंडेलवाल और नई दिल्ली से बांसुरी स्वराज को चुनावी मैदान में उतारा हैं। वहीं आम आदमी पार्टी और कांग्रेस मिलकर दिल्ली में भाजपा के खिलाफ चुनाव लड़ रहे हैं। गठबंधन के फॉर्मूले के मुताबिक, दिल्ली में चार सीटों पर आम आदमी पार्टी और तीन पर कांग्रेस के उम्मीदवार चुनाव लड़ रहे हैं।

ईजमायट्रिप के सह संस्थापक रिकांत पिट्टी ने प्रधानमंत्री का आभार जताया

नई दिल्ली। ईज मायट्रिप के सह संस्थापक रिकांत पिट्टी ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का आभार जताया है। पिट्टी ने कहा है कि प्रधानमंत्री ने विकसित भारत के बारे में आशावादी होने के लिए डिजिटल इंडिया पर ईजमायट्रिप के विचारों की सराहना कर उन्हें और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया है। उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 21 मई को एक्स हैंडल पर लिखा है, 'रिकांत पिट्टी ने सही कहा है। स्टार्टअप निश्चित रूप से विकसित भारत' के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। हमारा ध्यान इस पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ाने और उन्हें चमकने का आधार देने पर है। इस पर पिट्टी ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का आभार जताते हुए कहा है कि 2018 में 450 पंजीकृत स्टार्टअप थे। लेकिन आज एक लाख से अधिक स्टार्टअप हैं। 2015 की डिजिटल इंडिया पहल के साथ, इंटरनेट का प्रवेश वास्तव में, सरकार द्वारा शुरू की गई भारत नेट योजना ने 2,50,000 गांवों को इंटरनेट प्रदान किया है। भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था 2.8 गुना की दर से बढ़ रही है। विश्वास है कि भारत 2047 से पहले ही एक विकसित देश बन जाएगा।

श्रीनिवास आर. कुलकर्णी खगोल विज्ञान पुरस्कार से सम्मानित

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय मूल के अमेरिकी वैज्ञानिक श्रीनिवास आर.कुलकर्णी को मिलीसेकंड पल्सर, गामा-रे बर्स्ट, सुपरनोवा और अन्य क्षणिक खगोलीय घटनाओं (ट्रांज़िएंट एस्ट्रोनॉमिकल इवेंट) के संबंध में उनके अभूतपूर्व अन्वेषण के लिए 2024 के लिए खगोल विज्ञान में 21वें शॉ पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

श्री कुलकर्णी कैलटेक (कैलीफोनिर्या प्रौद्योगिकी संस्थान) में एस्ट्रोनॉमी एवं प्लेनेटरी साइंस (खगोल विज्ञान और ग्रह विज्ञान) के प्रोफेसर एवं प्रसिद्ध उद्यमी एन नारायण मूर्ति की पत्नी सुधा मूर्ति के छोटे भाई हैं।

जारी एक विज्ञप्ति के अनुसार द शॉ फाउंडेशन, हांगकांग द्वारा जारी प्रशस्ति पत्र में कहा गया है कि कुलकर्णी का खगोलीय पिंडों में समय के साथ परिवर्तन के क्षेत्र में अनुसंधान इस विषय के समक्षने में एक क्रांतिकारी योगदान है। श्री कुलकर्णी वर्ष 2006 से 2018 तक

कैलटेक ऑप्टिकल ऑब्ज़र्वेटरीज़ के निदेशक रहे। टाइम-डोमेन एस्ट्रोनॉमी में कुलकर्णी के अग्रणी शोध ने, विशेष रूप से पालोमर ट्रांजिएंट फैक्ट्री और ज़्विकी ट्रांजिएंट फैसिलिटी के माध्यम से, गतिशील आकाश की समझ को बढ़ाने में मदद की है।

शॉ पुरस्कार हांगकांग के दिवंगत परोपकारी, रन रन शॉ द्वारा स्थापित, किया गया है। शॉ पुरस्कार फाउंडेशन खगोल विज्ञान, जीव विज्ञान तथा चिकित्सा और गणितीय विज्ञान में तीन वार्षिक पुरस्कार शामिल देता है जिसमें 12 लाख डालर की राशि प्रदान की जाती है। का मौद्रिक पुरस्कार प्रदान करने की व्यवस्था है।

मोदी ने भी शराब घोटाले को फ़र्जी माना : केजरीवाल

एजेंसी

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी (आप) के राष्ट्रीय संयोजक एवं दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने दावा किया कि आखिरकार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी कबूल कर ही लिया कि तथाकथित शराब घोटाला पूरी तरह से फर्जी है और प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) और केन्द्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) के पास का कोई सबूत नहीं है। श्री केजरीवाल ने यहां आज कहा, कल श्री मोदी से एक साक्षात्कार में पूछा गया कि केजरीवाल कह रहे हैं कि इस तथाकथित शराब घोटाले में कोई सबूत या पैसा नहीं मिला है। इसपर प्रधानमंत्री ने कहा कि सबूत इसलिए नहीं मिला क्योंकि केजरीवाल अनुभवी चोर हैं। मुख्यमंत्री ने कहा, श्री मोदी ने ये कबूल किया कि शराब घोटाले में उनके पास कोई सबूत नहीं है। किसी तरह का कोई एक नया पैसा भी रिकवर नहीं हुआ है। उसे

छिपाने के लिए वह कहते हैं कि केजरीवाल अनुभवी चोर है। इसका मतलब आपकी सारी सीबीआई और उसके अफसर निकम्मे हैं। आपके ईडी के अधिकारी निकम्मे हैं।

उन्होंने कहा, पिछले दो साल से शोर मचा रखा है कि दिल्ली में शराब घोटाला हो गया। पूरे देश में 500 से ज्यादा छापे मारे गये। एक बड़ा प्रश्न यह उठाता है कि अगर 100 करोड़ या 1100 करोड़ रुपए का घोटाला है तो वह पैसा कहीं पर तो रखे होंगे लेकिन कहीं से कुछ नहीं मिला है।''

कैबिनेट सचिव ने चक्रवात से निपटने की तैयारियों की समीक्षा की

एजेंसी

नई दिल्ली। कैबिनेट सचिव राजीव गौबा की अध्यक्षता में यहां हुई राष्ट्रीय संकट प्रबंधन समिति की बैठक हुई। बैठक में बंगाल की खाड़ी में आने वाले चक्रवात से निपटने की तैयारियों की समीक्षा की गई। कैबिनेट सचिव ने पश्चिम बंगाल सरकार को आश्वासन दिया कि सभी केंद्रीय एजेंसियां पूरी तरह अलर्ट पर हैं और सहायता के लिए उपलब्ध रहेंगी।

मौसम विज्ञान विभाग के महानिदेशक ने समिति को खेपुपारा (बंगलादेश) से लगभग 800 किमी दक्षिण-दक्षिणपश्चिम और कैनिंग (पश्चिम बंगाल) से 810 किमी दक्षिण में मध्य बंगाल की खाड़ी पर दबाव की वर्तमान स्थिति के बारे में जानकारी दी।

पश्चिम बंगाल के मुख्य सचिव ने समिति को चक्रवाती तूफान के अपेक्षित मार्ग में आबादी की सुरक्षा के लिए किए जा रहे प्रारंभिक उपायों और स्थानीय प्रशासन द्वारा किए जा रहे उपायों से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि एनडीआरएफ ने 12 टीमों को तैनात किया है और पांच अतिरिक्त टीमों को तैनात रखा गया है। समुद्री पोत और विमानों के साथ

सेना, नौसेना और तटरक्षक बल की बचाव और राहत टीमों को तैयार रखा गया है। जहाजरानी महानिदेशक द्वारा कोलकाता और पारादीप के बंदरगाहों पर नियमित अलर्ट और सलाह भेजी जा रही है। मछुआरों को अलर्ट जारी किया है। तत्काल बिजली बहाली के लिए विद्युत मंत्रालय द्वारा आपातकालीन टीमों को तैनात किया गया है।

केंद्रीय एजेंसियों और पश्चिम बंगाल सरकार की तैयारियों के उपायों की समीक्षा करते हुए, कैबिनेट सचिव ने जोर देकर कहा कि राज्य सरकार और केंद्रीय एजेंसियों द्वारा सभी आवश्यक निवारक और एहतियाती उपाय किए जा सकते हैं। इसका उद्देश्य जान माल की हानि को कम करना और बिजली व दूरसंचार जैसी संपत्ति और बुनियादी ढांचे को नुकसान को कम करना है।

कैबिनेट सचिव ने कहा कि यह सुनश्चिति किया जाना चाहिए कि समुद्र में मछुआरों को वापस बुलाया जाए और संवेदनशील इलाकों से लोगों को समय पर निकाला जाए। उन्होंने पश्चिम बंगाल सरकार से चक्रवाती तूफान से प्रभावित होने वाले संभावित क्षेत्रों में बड़े होर्डिंग्स लगाने की समीक्षा करने को कहा।

बैठक में पश्चिम बंगाल के मुख्य सचिव, केंद्रीय गृह सचिव, बिजली, दूरसंचार, बंदरगाह, शिपिंग और जलमार्ग, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस और मत्स्य पालन विभाग के सचिवों के अलावा राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सदस्य सचिव, एकीकृत रक्षा स्टाफ के प्रमुख ने भाग लिया। मौसम वज्ञिान विभाग के महानिदेशक, राष्ट्रीय आपदा मोचन बल महानिदेशक, तट रक्षक महानिदेशक और गृह मंत्रालय के वरष्ठि अधिकारियों ने भी बैठक में भाग लिया।

सीमा सुरक्षा बल अलंकरण समारोह में 17 सीमा प्रहरियों को पदक

एजेंसी

नई दिल्ली। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल ने शुक्रवार को यहां सीमा सुरक्षा बल के 17 अधिकारियों और जवानों को वीरता तथा जीवन रक्षा पदकों से सम्मानित किया।

सीमा सुरक्षा बल अलंकरण समारोह में दस सीमा प्रहरियों को वीरता के लिए पुलिस पदक और सात को जीवन रक्षा पदक से सम्मानित किया गया। सात सीमा प्रहरियों को यह पदक मरणोपरांत दिया गया है। उनके परिजनों ने यह सम्मान हासिल किया। अलंकरण समारोह में केन्द्रीय पुलिस बलों के वरिष्ठ सेवारत तथा पूर्व अधिकारियों ने भी हिस्सा लिया। इस अलंकरण समारोह का आयोजन सीमा सुरक्षा बल के पहले महानिदेशक, पद्म विभूषण के एफ रूस्तमजी के सम्मान में किया जाता है।

मालीवाल से मारपीट का मामला: अदालत ने बिभव कुमार को चार दिन की न्यायिक हिरासत में भेजा

एजेंसी

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी की निचली अदालत ने दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के निजी सहायक बिभव कुमार को चार दिन की न्यायिक हिरासत में भेज दिया।

आम आदमी पार्टी (आप) की राज्यसभा सांसद स्वाति मालीवाल से मारपीट के मामले में गिरफ्तार बिभव कुमार की पुलिस हिरासत की अवधि समाप्त होने के बाद पुलिस ने आज उसे अदालत में पेश किया। अदालत में सुनवााई के दौरान दिल्ली पुलिस ने बिभव कुमार की चार दिन की न्यायिक हिरासत मांगी, जिसे

अदालत ने स्वीकार कर लिया और बिभव को 28 मई तक न्यायिक हिरासत में भेज दिया।

उल्लेखनीय है कि पुलिस ने बिभव कुमार को सुश्री मालीवाल से मारपीट मामले में 18 मई को दिल्ली के मुख्यमंत्री आवास से गिरफ्तार किया था। इस मामले में आरोपी ने जांच के दौरान जब्त किए गए डीवीआर की सुरक्षा और उसे रिकॉर्ड पर रखने के लिए एक आवेदन दायर किया है।

आतिशी और सौरभ भारद्वाज ने वोट डालने के बाद कहा, धीमी वोटिंग पर अधिकारियों से करेंगे अनुरोध

एजेंसी

नई दिल्ली । लोकतंत्र के महापर्व में शनिवार को दिल्ली की सभी सातों सीटों पर मतदान चल रहा है। सुबह से ही लोग अपने मत का प्रयोग कर रहे हैं। इसके साथ ही हर पार्टी के नेता भी अपने मतदान स्थल पर पहुंच कर अपने मत का प्रयोग कर रहे हैं। आम आदमी पार्टी के नेता सौरभ भारद्वाज और आतिशी ने भी अपना वोट डाला। अपने मत का प्रयोग करने के बाद आप नेता आतिशी ने लोगों से अपील कि आज आप सभी अपना वोट महंगाई के खिलाफ, बेरोजगारी के खिलाफ, तानाशाही के खिलाफ डालें। जिस तरह से विपक्ष के नेताओं को जेल में डाला जा रहा है, उसके खिलाफ वोट डालें। आतिशी ने सोशल मीडिया के जरिए दिल्ली के एलजी पर पुलिस के जरिए धीमी वोटिंग करवाने का आरोप लगाया था। उन्होंने अपने एक्स अकाउंट पर लिखा, ÷ऐसी जानकारी मिली है कि एलजी ने दिल्ली पुलिस को आदेश दिए हैं कि जहां इंडिया गठबंधन के वोटर भारी संख्या में हैं, वहां पर वोटिंग धीरे करवानी है ताकि लोगों को वोट डालने में दिक्कत हो। प्रशासन द्वारा भाजपा को जिताने का ऐसा कोई भी प्रयास गैर-कानूनी, गैर-लोकतांत्रिक और गैर-संवैधानिक है और मैं उम्मीद करती हूं कि चुनाव आयोग इसका संज्ञान लेगा, और ऐसे किसी भी प्रयास पर रोक लगाएगा। आतिशी के इस स्टेटमेंट के बाद एलजी ने भी पलटवार किया। देर रात इसके जवाब में सोशल मीडिया एक्स पर उन्होंने भी एक पोस्ट डाला। उन्होंने लिखा कि आदत ही बना ली है आप ने तो ऐ केजरीवाल साहब, जिस हाल मे रहना, बस रोते हुए रहना! मैंने आपके एक मंत्री द्वारा एक संवैधानिक अधिकारी के खिलाफ चुनाव की पूर्व संध्या पर दिए गए इस अनुचित और झूठे बयान पर कड़ा रुख अपनाया है।

दिल्ली के अलीपुर में एक बैंक्वेट हॉल में लगी भीषण आग, ढाई घंटे की मशक्कत के बाद पाया काबू

एजेंसी

नई दिल्ली। अलीपुर स्थित कार्निवल रिजार्ट में दोपहर अचानक आग लग गई। देखते ही देखते आग ने पूरे पंडाल को अपनी चपेट में ले लिया। कुछ ही मिनट में रिजार्ट के आसपास कई किलोमीटर तक आसमान में धुआं छा गया। आग लगने की सूचना तुरंत दमकल विभाग को दी गई। एक के बाद एक पहुंची 13 दमकल की गाड़ियों ने करीब ढाई घंटे की मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। इस मामले में पुलिस ने जांच शुरू कर दी है।

पुलिस का कहना है कि शुरुआती जांच में पता चला है कि आग शार्ट सर्किट के कारण पंडाल में फैली। हलांकि इस घटना में किसी के हताहत की कोई सूचना नहीं है। दमकल विभाग के मुताबिक शुक्रवार दोपहर 01-55 बजे अलीपुर स्थित कर्निवाल रिजार्ट के पंडाल में आग लगने की जानकारी मिली। सूचना मिलते ही पहले दमकल की पांच गाड़ियों को रवाना किया गया। आग बड़ी होने के बाद फिर आठ गाड़ियों को घटनास्थल भेजा गया। 26 दमकलकर्मियों ने करीब ढाई घंटे की मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया।

कुछ समय तक दमकलकर्मियों को हुई परेशानी

पंडाल में आग लगने के कारण तेजी से आग फैलती चली गई। धुआं अधिक उठने की वजह से कुछ समय

तक दमकलकर्मियों को भी परेशानी हुई। हलांकि धुएं के बीच दमकलकर्मियों ने सूझबूझ के साथ काम लेते हुए, आग को आगे नहीं फैलने दिया। जानकारी के मुताबिक जिस समय पंडाल में आग लगी वहां, कई कर्मचारी मौजूद थे, आग लगते ही समय रहते सुरक्षित सभी बाहर आ गए। कुछ ही दूरी पर कालेज व पेट्रोल पंप भी है। गनीमत रही की यहां तक आग नहीं फैली, नहीं तो बड़ा हादसा हो सकता है।

धुएं के कारण हाई-वे पर रुकी रहीं गाड़ियां

कर्निवाल रिजार्ट के पास से ही जीटी करनाल हाई-वे गुजर रहा है। पंडाल में आग लगते ही हर तरफ धुआं ही धुआं हो गया। जिससे वाहन चालकों को आगे देख पाना मुश्किल हो गया। ऐसे में हाई-वे पर करीब 20 मिनट तक वाहनों की रफ्तार थम गई। जिससे हाई-वे पर लंबा जाम लग गया। धुआं कम होने के बाद ही यहां से धीरे-धीरे गाड़ियां निकल सकी। पंडाल के लिए दिल्ली नगर निगम की ओर से एनओसी व अन्य जरूरी कागजात की जांच की जा रही है।

'चोर कभी नहीं कहता, वो चोर है', अरविंद केजरीवाल पर भाजपा का बड़ा आरोप

एजेंसी

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक और दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने ो शराब घोटाला मामले में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को आड़े हाथों लिया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने कल एक इंटरव्यू के दौरान खुद ही स्वीकार कर लिया कि उनके पास शराब घोटाला मामले में कोई सबूत नहीं है। केजरीवाल के इस बयान पर अब दिल्ली बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने हमला बोला है।

उन्होंने कहा, अरविंद केजरीवाल ने एक प्रेसवार्ता में यह स्वीकार किया कि वो एक अनुभवी चोर हैं। ये मामला कोर्ट में है। केजरीवाल अभी अंतरिम जमानत पर हैं। कुछ दिनों बाद वो न्यायिक हिरासत में जाएंगे। दो दिन पहले ही हाईकोर्ट ने मनीष सिसोदिया पर गंभीर टिप्पणी की थी। वो भी शराब घोटाला मामले में आरोपी हैं। घोटाला हुआ है, करोड़ों की चोरी हुई है और अरविंद केजरीवाल इन सबके सूत्रधार हैं। जल्द ही यह सभी अपराधी सलाखों के पीछे होंगे। ऐसा कौन-सा चोर होगा, जो कहेगा, मैंने चोरी की। सभी अपने आपको ईमानदार कहते हैं। अगर वो ईमानदार हैं, तो अभी तक मनीष सिसोदिया जेल में क्यों हैं? आखिर क्यों बीते दिनों मुख्यमंत्री को न्यायिक हिरासत में जाना पड़ा। जांच एजेंसी अपना काम कर रही है और मामला न्यायालय में है। निर्णय आने दीजिए।

दरअसल सीएम केजरीवाल ने प्रेसवार्ता में पीएम मोदी पर निशाना साधते हुए कहा, यह पिछले दो साल से यही शोर मचा रहे हैं कि शराब घोटाला हो गया, शराब घोटाला हो गया। इन्होंने मुझे, संजय सिंह और मनीष सिसोदिया को गिरफ्तार कर लिया। पूरे देश में इन लोगों ने 500 से ज्यादा रेड मार ली। पता नहीं, इन्होंने कितनों को गिरफ्तार कर लिया। कहते हैं कि हम लोगों ने 100 करोड़ रुपए की रिश्वत ली है। अभी कुछ दिन पहले कह रहे थे कि 1,100 करोड़ का घोटाला है।

उन्होंने आगे कहा, अब एक बड़ा सवाल है कि आखिर जब यह घोटाला 1,100 करोड़ का है, तो यह पैसा कहीं तो रखा होगा। इन्होंने पांच सौ से ज्यादा रेड मार ली। इन्हें कहीं पर एक धेला भी नहीं मिला। इन्होंने इतनी सारी रेड मार ली, लेकिन अभी तक यह पता नहीं चल पाया है कि पैसा कहां इस्तेमाल हुआ? कहीं हमने संपत्ति खरीदी हो, कोई ज्वेलरी खरीदी हो, कहीं बैंक में रखा हो, लेकिन अभी तक एक धेला भी नहीं मिला है। मुख्यमंत्री केजरीवाल ने कहा, कल प्रधानमंत्री मोदी से एक इंटरव्यू में सवाल किया गया कि केजरीवाल कह रहे हैं कि इस पूरे तथाकथित घोटाले में एक रुपया भी नहीं मिला है। इस पर प्रधानमंत्री जी ने जो कहा, वो आपको चौंका देगा। प्रधानमंत्री ने कहा कि कोई पैसा अभी तक इसलिए नहीं मिला है, क्योंकि केजरीवाल एक अनुभवी चोर हैं। इस तरह से पूरे देश के सामने कल प्रधानमंत्री ने कबूल कर किया कि शराब घोटाला में उनके पास कोई सबूत नहीं है। शराब घोटाले में उनके पास कोई रिकवरी नहीं है। अब उसे छुपाने के लिए वो कह रहे हैं कि केजरीवाल एक अनुभवी चोर है।

कांग्रेस ने एसटी, एससी, ओबीसी के साथ किया अन्याय, बंगाल में संविधान के साथ हो रहा खुला मजाक : भाजपा

एजेंसी

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने एक कार्यक्रम में आरएसएस पर हमला बोलते हुए कहा था कि इनके संगठन में महिलाओं के लिए जगह नहीं है। राहुल गांधी के इस बयान पर भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी ने प्रतिक्रिया दी।

सुधांशु त्रिवेदी ने बड़ा हमला बोलते हुए कहा कि राहुल गांधी ने बहुत साल पहले बोला था कि वह सबकुछ समझने के लिए गीता-पुराण पढ़ रहे हैं, लेकिन, वहां से पढ़ते-पढ़ते आज यह विचार रख रहे हैं कि महिला शक्ति से लड़ना है। आरएसएस का मतलब है राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ। दूसरा संगठन है राष्ट्रीय स्वयं सेविका संघ। जिस प्रकार से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत जी हैं, उसी प्रकार से राष्ट्रीय स्वयंसेविका समिति की प्रमुख वी. शांता कुमारी हैं। अगर इतनी समझ राहुल गांधी को नहीं आती है तो उनका यह बयान दुर्भाग्यपूर्ण है। भाजपा की ओर से 'बुर्के वाली वोटर्स' की जांच करने को लेकर असदुद्दीन ओवैसी ने कड़ा एतराज जताया है। जिस पर सुधांशु त्रिवेदी ने कहा कि निष्पक्ष चुनाव कराने के लिए चुनाव आयोग पूरी तरह से स्वतंत्र है। चुनाव आयोग जो उचित समझता है, वह निर्णय लेता है। ऐसे में मैं इस मामले पर कोई टिप्पणी नहीं करूंगा। बंगाल में ओबीसी कोटे से मुस्लिम समुदाय को आरक्षण देने के फैसले को बंगाल हाईकोर्ट की ओर से खारिज करने पर सुधांशु त्रिवेदी ने कहा कि पश्चिम बंगाल में संविधान के साथ किस तरह खतरा उत्पन्न हो सकता है, यह साफ हो गया है। जब यह बात स्पष्ट हो गई है कि 71 जातियां उन्होंने ओबीसी में जोड़ी। जिसमें 65 मुस्लिम थी, जिसके बाद पिछड़ा वर्ग आयोग ने पूछा कि इतनी भारी संख्या में कैसे हो गया, तब पश्चिम बंगाल सरकार ने जवाब दिया कि यह लोग कन्वर्जन से पहले इन जातियों से जुड़े हुए थे, इसलिए इनको आरक्षण दिया गया। इसके बाद पूछा गया कि इतनी भारी मात्रा में कन्वर्जन कैसे हुआ तो इसका कोई जवाब नहीं आया। पिछड़ा वर्ग ने आपत्ति जताते हुए कहा कि इसमें से ज्यादा जातियां ऐसी हैं, जो मुख्यतः बांग्लादेश में पाई जाती हैं, जो पश्चिम बंगाल में नहीं पाई जाती।

अग्निपथ योजना में फंसे मोदी ले रहे हैं चुनाव आयोग का सहारा : कांग्रेस

एजेंसी

नई दिल्ली। कांग्रेस ने कहा है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपनी जिस गलत नीति के कारण फंसते हैं, उससे बचने के लिए वह सहारा ढूंढते हैं और इस बार अग्निवीर योजना में फंसे हैं तो इससे निकलने के लिए वह चुनाव आयोग का सहारा ले रहे हैं। कांग्रेस के पूर्व सैनिक विभाग के प्रमुख कर्नल रोहित चौधरी ने यहां पार्टी मुख्यालय में संवाददाता सम्मेलन में कहा कि अग्निपथ योजना गलत है और इससे सेना में भेदभाव हो रहा है। यह योजना देश, सेना और युवाओं के लिए गलत है इसलिए कांग्रेस की सरकार बनने पर इसे रद्द किया जाएगा लेकिन श्री मोदी इस योजना के कारण फंस गए हैं और अब वह आयोग का सहारा ले रहे हैं। कर्नल चौधरी ने लिखा, चुनाव आयोग ने कांग्रेस अध्यक्ष को पत्र लिखा है कि चुनाव प्रचार के दौरान पार्टी के स्टार प्रचारक डिफेंस फोर्सेज की ऑपरेशनल चीजों पर बात न करें। श्री मोदी जब भी फंसते है तो वह कोई ना कोई सहारा ढूंढते हैं। पहले वह डिफेंस फोर्सेज के पीछे जाकर छुपते थे और अब चुनाव आयोग का सहारा ले रहे हैं। उन्होंने देश की सेना को मजबूत बताते हुए कहा, हमारी सेनाएं सक्षम हैं, बेहतरीन काम कर रही हैं और देश की सुरक्षा कर रही हैं। लेकिन मोदी सरकार ने अग्निपथ योजना लाकर सेना को कमजोर किया है। हम उस अग्निपथ योजना को चैलेंज कर रहे हैं, जो देश, सेना और सैनिकों के हित में नहीं है। पूर्व सेना प्रमुख ने भी अग्निपथ योजना का अपनी किताब में जिक्र करते हुए लिखा है कि इस अग्निपथ योजना के ऐलान ने तीनों सेनाओं को चौंका दिया था। कर्नल चौधरी ने कहा, हमारे देश की सेनाओं ने कई लड़ाईयां लड़ीं है। बीते समय में सेनाओं का आधुनिकीकरण भी हुआ, जहाज खरीदे गए, डिफेंस सेक्टर में काफी काम हुआ और सेनाओं में रेगुलर सैनिक थे। अगर आज मोदी सरकार पैसे बचाने के लिए अग्निपथ योजना लेकर आई है तो सवाल है कि क्या सरकार के पास सेना के लिए पैसे नहीं है।अग्निपथ योजना हमारी सेनाओं पर थोपी गई है ।

विधायक राकेश दौलताबाद का दिल का दौरा पड़ने से निधन

एजेंसी

चंडीगढ़। गुरुग्राम की बादशाहपुर सीट से निर्दलीय विधायक राकेश दौलताबाद का दिल का दौरा पड़ने से मौत हो गई। विधायक राकेश दौलताबाद की उम्र 45 वर्ष थी। सुबह 10 बजे राकेश दौलताबाद को हार्ट अटैक आया था, जिसके बाद उन्हें निजी अस्पताल ले जाया गया। जहां इलाज के दौरान राकेश की मौत हो गई। गुरुग्राम के पालम विहार मणिपाल अस्पताल में उन्होंने अंतिम सांस ली।

हरियाणा में 62 मशीन बदली गईं

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा की सभी दस लोकसभा सीटों तथा एक करनाल विधानसभा उपचुनाव को लेकर हो रहे मतदान के दौरान मॉक पोल के समय

आई खराबी के चलते 62 मशीनों को बदला गया। राज्य निर्वाचन आयोग द्वारा प्रदेश भर में 45 हजार 576 ईवीएम, 24039 कंट्रोल यूनिट, 26040 वीवीपैट मशीनें लगाई गई है। मतदान शुरू होने से एक घंटा पहले मॉक पोल के दौरान 62 मशीनें खराब पाई गई। जिन्हें निर्वाचन आयोग की तरफ से तुरंत बदलवाया गया।

नेशनल हाइवे पर कार ने बाइक में मारी टक्कर, महिला सहित दो की मौत

फतेहाबाद। नेशनल हाइवे पर गांव खाराखेड़ी के समीप रात एक तेज गति कार ने मोटरसाइकिल में टक्कर दे मारी। इस हादसे में बाईक सवार महिला व युवक दोनों की मौत हो गई। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस टीम मौके पर पहुंच गई और दोनों शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

इस मामले में पुलिस ने कार के अज्ञात चालक के खिलाफ केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस को दी शिकायत में अग्रोहा निवासी महेन्द्र सिंह ने कहा है कि वह खेती बाड़ी का काम करता है।

उसके चाचा ने फतेहाबाद के गांव चिन्दड़ में खेती योग्य जमीन खरीदी हुई है और वहां खेती करते हैं। गत दिवस वह अपने चचेरे भाई विनोद व चाची रोशनी के साथ दो मोटरसाइकिलों पर सवार होकर खेत में पानी लगाने के लिए गए थे। रात को करीब साढ़े 12 बजे वह मोटरसाइकिलों पर गांव चिन्दड़ से वापस अग्रोहा आ रहे थे, जैसे ही वे खासा रोड से खाराखेड़ी कच्चे रास्ते पर पहुंचे तो विनोद अपने बाइक को नेशनल हाइवे पर चढ़ाने लगा, तो उसी समय हिसार की तरफ से आ रही एक कार के चालक ने कार को लापरवाही व तेजगति से चलाते हुए उसके मोटरसाइकिल में टक्कर दे मारी।

इस हादसे में बाइक सवार विनोद व उसकी चाची रोशनी दोनों सड़क पर गिरकर घायल हो गए। हादसे के बाद कार चालक गाड़ी को मौके पर ही छोड़कर फरार हो गया। महेन्द्र ने बताया कि बाद में उसने दोनों घायलों को उपचार के लिए अग्रोहा मेडिकल कॉलेज में भर्ती करवाया, जहां चिकित्सकों ने दोनों को मृत घोषित कर दिया। इस मामले में पुलिस ने कार के अज्ञात चालक पर केस दर्ज कर आगामी कार्रवाई शुरू कर दी है।

सोनीपत में चुनावी डयूटी पर तैनात कर्मचारी की मौत

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा के सोनीपत में चुनावी डयूटी के दौरान एक कर्मचारी की तबियत बिगड़ने से मौत हो गई। ी शाम पोलिंग स्टाफ के साथ पहुंचे कर्मचारी की गर्मी के कारण देर रात तबियत बिगड़ गई। आज सुबह उक्त कर्मचारी की मृत्यु हो गई।

राज्य निर्वाचन अधिकारी अनुराग अग्रवाल के अनुसार उक्त कर्मचारी को बीती रात अधरंग होने के कारण उसकी मृत्यु हुई है। नियमानुसार मृतक के आश्रितों को 15 लाख रुपये मुआवजा दिया जाएगा।

ग्रामीणों ने किया मतदान का बहिष्कार:

उधर, जींद के गांव सुंदरपुरा को उचाना तहसील की बजाय नरवाना में शामिल किए जाने की मांग को लेकर ग्रामीणों ने चुनाव का बहिष्कार कर दिया। एक भी मतदाता ने मताधिकार का प्रयोग नहीं किया। गांव में कुल 1610 वोट है।

लोकसभा चुनाव में मुख्यमंत्री नायब सैनी ने किया मतदान, बोले-

'विकास के नाम पर जनता करेगी वोट, 10 सालों में तेज गति से हुआ विकास'

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने लोकसभा चुनाव के लिए अपना वोट डाल दिया है. मुख्यमंत्री नायब सैनी ने अपनी धर्मपत्नी सुमन सैनी और परिवार के सदस्यों के साथ गांव मिर्जापुर नारायणगढ़ में मतदान किया. बता दें कि हरियाणा की 10 लोकसभा सीटों पर आज मतदान हो रहा है. राज्य में बीजेपी और कांग्रेस के बीच कांटे की टक्कर है. हालांकि कुछ सीटों पर आम आदमी पार्टी भी नजर आ रही है.

सीएम नायब सैनी ने कहा कि लोगों से भारी संख्या में वोट करने की अपील की है. उन्होंने कहा कि

जनता को इस पर्व में लोकतंत्र की मजबूती के लिए ज्यादा से ज्यादा वोट करनी चाहिए.

नायब सैनी ने कहा कि मोदी के नेतृत्व में विकास हुआ है. पूरे विश्व में भारत का सम्मान बढ़ा है. देश के साथ साथ हरियाणा ने भी पिछले दस सालों में विकास किया है. आज हर क्षेत्र में भारत आगे है हरियाणा भी तेज गति के साथ आगे बढ़ा है. दस सालों में सबका साथ सबका विकास की तर्ज पर काम हुआ है. हरियाणा में मेडिकल कॉलेज, यूनिवर्सिटी, एक्सप्रेस वे, किसानों की मजबूत स्थिति, गरीबों को आयुष्मान कार्ड का अधिकार देना हो, चाहे गैस का कनेक्शन हो या 50 करोड़ लोगों को देशभर में जनधन खाते खोले गए. दस सालों में हर गरीब वर्ग का साथ बीजेपी ने दिया है. इसलिए देश का हर व्यक्ति मोदी को चाहता है. जिसके चलते हरियाणा में 11 कमल के फूल खिलाकर हरियाणा वासी अपना फर्ज अदा करेगा।

अमीशी गुप्ता ने अयोध्या मंदिर व भगवान गणेश की अनूठी पेंटिंग कर बनाया विश्व रिकॉर्ड

एजेंसी

चंडीगढ़। हिसार की रहने वाली अमीशी गुप्ता ने मात्र पंद्रह वर्ष की आयु में कला और शिल्प की श्रेणी में एक असाधारण उपलब्धि हासिल की है। अमीशी ने ऐक्रेलिक पेंट और स्वर्णपत्र का उपयोग करके अयोध्या मंदिर की 12 फुट गुणा 25 फुट की पेंटिंग और भगवान गणेश की 1 सेमी गुणा 1 सेमी की विस्तृत पेंटिंग बनाने की उल्लेखनीय उपलब्धि के लिए अमीशी का नाम आधिकारिक तौर पर इन्फ्लुएंसर बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्र्स में दर्ज किया गया है। असाधारण प्रतिभा की धनी अमीशी गुप्ता की कला में बचपन से ही रुचि थी। वह सात साल की आयु से ही पेंटिंग बना रही है। उसने अपने हुनर को समय के साथ क्लासेस और वर्कशॉप से निखारा। अमीशी ने अपनी कला को राम मंदिर और गणेशजी की पेंटिंग के माध्यम से दर्शाया और यह उपलब्धि हासिल की। यह उपलब्धि मस्तिष्क वैज्ञानिक डॉ. जीतेन्द्र कुमार के मार्गदर्शन में प्राप्त हुई। अमीशी गुप्ता को उनकी असाधारण प्रतिभा और समर्पण के लिए प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया हैं। यह प्रमाणपत्र कला के क्षेत्र में उनकी उत्कृष्ट उपलब्धि को देखते हुए प्रदान किया।

जेजेपी प्रमुख अजय चौटाला और पूर्व डिप्टी सीएम दुष्यंत चौटाला ने परिवार संग किया मतदान

• बदलाव की जताई उम्मीद

एजेंसी

चंडीगढ़। सिरसा से जेजेपी प्रमुख अजय सिंह चौटाला, पूर्व उपमुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला, हिसार प्रत्याशी नैना सिंह चौटाला, युवा नेता दिग्विजय चौटाला व परिवार के अन्य सदस्यों ने सिरसा के बाल भवन स्थित मतदान केंद्र पर अपने मत का प्रयोग किया.

'किसानों ने नहीं किया विरोध': वोटिंग के बाद अजय चौटाला ने कहा कि यह लोकतंत्र का पर्व है हरियाणा के जागरूक मतदाता सरकार बनाने का फैसला करेंगे. जेजेपी बीजेपी से अलग होकर चुनाव लड़ रही है, इसको लेकर पूछे गए सवाल के जवाब में अभय चौटाला ने कहा कि एडवांटेज डिसएडवांटेज का फैसला करना जनता का काम है. उन्होंने कहा कि जहां-जहां विरोध हो रहा था, वह विरोध किसानों का नहीं बल्कि पॉलिटिकल पार्टियों के कार्यकर्ता कर रहे थे.

'देश में होगा बदलाव': वहीं, दुष्यंत चौटाला ने लोगों से इस लोकतंत्र के पर्व में बढ़-चढ़कर अपने मताधिकार का इस्तेमाल करने

की अपील की. उन्होंने कहा कि मतदाता गर्मी की परवाह न करें यह गर्मी बदलाव की है।

उन्होंने कहा कि मतदाता अपने वोट से देश का भविष्य लिखने का काम करें. उन्होंने कहा कि हरियाणा में रिकॉर्ड तो वोटिंग होगी. इसके साथ ही उन्होंने कहा कि 1977 की तरह ही इस बार भी देश में बदलाव आएगा.

सिरसा लोकसभा में वोटर्स की तादाद: सिरसा लोकसभा में अगर मतदाताओं की बात करें तो यहां पर कुल 19,32,854 वोटर्स है जो इस बार लोकसभा चुनाव में अपने वोट का इस्तेमाल करने वाले हैं. इनमें पुरुष वोटर्स की तादाद 10,20,922 है , जबकि 9,11,891 महिला मतदाता है. वहीं सिरसा लोकसभा में 41 थर्ड जेंडर मतदाता भी शामिल है।

करनाल लोकसभा सीट पर बीजेपी प्रत्याशी मनोहर लाल ने किया मतदान

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा की सभी 10 संसदीय सीटों पर सुबह 7 बजे से मतदान शुरू हो चुका है. पूर्व मुख्यमंत्री और करनाल से बीजेपी उम्मीदवार मनोहर लाल खट्टर ने बूथ नंबर 174 पर अपना वोट डाला. उन्होंने मतदान के बाद कहा कि भाजपा राज्य में एक बार फिर क्लीन स्वीप करेगी. वहीं, मनोहर लाल ने जनता से ज्यादा से ज्यादा वोट की अपील करते हुए कहा कि उन्होंने अपने वोट का इस्तेमाल कर लिया है. लोकतंत्र के इस पर्व पर मनोहर लाल ने जनता से वोट डालने की अपील की. इसके साथ ही उन्होंने कहा कि कांग्रेस उम्मीदवार से वे कोई चुनौती नहीं मानते हैं.

करनाल में कुल मतदाताः करनाल लोकसभा क्षेत्र में कुल मतदाता 2097752 हैं. इनमें 1104302 पुरुष हैं, जबकि 993413 महिला मतदाता हैं. इसके अलावा 37 ट्रांसजेंडर मतदाता भी शामिल हैं. करनाल लोकसभा क्षेत्र में 2023 मतदान केंद्र बनाए गए हैं.

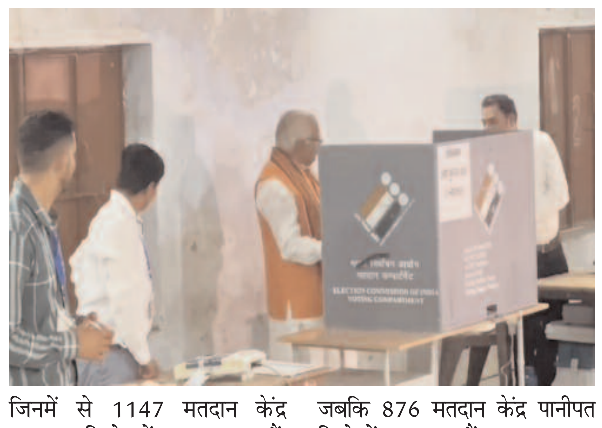

जिनमें से 1147 मतदान केंद्र करनाल जिले में बनाए गए हैं. जबकि 876 मतदान केंद्र पानीपत जिले में बनाए गए हैं.

बीजेपी प्रत्याशी सांसद धर्मवीर सिंह ने परिवार के साथ डाला वोट

एजेंसी

भिवानी। सुबह 7 बजे मतदान होते ही शहर के लोगों व गाँवो के लोगों में वोट डालने के लिए काफ़ी उत्साह देखा गया। भिवानी महेन्द्र गढ़ लोकसभा क्षेत्र से बीजेपी प्रत्याशी सांसद धर्मवीर सिंह ने सुबह अपने परिवार

के साथ वोट डाला है। वह अपनी लक्की नंबर की गाड़ी में बैठकर मतदान केन्द्र पहुंते।

गर्मी को देखते हुए घर नहीं रहना, आपका वोट आपकी ताकत और अधिकार है, इसलिए वोट डालने के लिए अपना कीमती समय जरूर दें । सांसद चौधरी धर्मवीर सिंह ने कहा कि लोकसभा चुनाव को लेकर भारतीय जनता पार्टी के पक्ष में एक तरफा लहर है, क्योंकि देश की जनता तीसरी बार नरेंद्र मोदी को प्रधानमंत्री देखना चाहती है। इससे साफ जाहिर होता है कि प्रदेश की सभी 10 की 10 लोकसभा सीटों पर भाजपा बड़े मार्जन से जीत दर्ज करेगी। धर्मबीर सिंह ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी ने हर वर्ग की भलाई के लिए कार्य किया है तथा अंत्योदय की भावना से कार्य करते हुए गरीब से गरीब व्यक्ति को सरकार की योजनाओं का लाभ पहुंचाया। उन्होंने कहा कि भारत वर्ष में करीब 20 करोड लोगों को गरीबी रेखा से ऊपर उठाया है।

आई डब्लयू एफ यूथ वर्ल्ड चैंपियनशिप में पायल ने जीता रजत पदक

एजेंसी

सोनीपत। खरखौदा के खांडा रोड़ स्थित कल्पना चावला विद्यापीठ की भारोत्तोलन अकादमी की छात्रा पायल ने आई डब्लयू एफ यूथ वर्ल्ड चैंपियनशिप में रजत पदक जीता है। यह प्रतियोगिताएं लीमा, पेरु में 22 से 26 मई तक आयोजित की जा रही है। जिसमें पायल ने 45 किलोग्राम वर्ग में 2 कांस्य तथा 1 रजत पदक जीते हैं।

प्राचार्या उषा वत्स ने ो विश्व स्तरीय भारोत्तोलन में रजत पदक हासिल करने पर पायल तथा उसके कोच सत्यवान को बधाई दी है। उन्होंने बताया की खेलों में बच्चों की मेहनत ही उनकी सफलता का राज होती है और यदि गुरु का सही मार्गदर्शन हो तो बच्चों को सफल होने से कोई नहीं रोक सकता। दूसरे देश में जाकर अपने देश, अकादमी, अपने कोच, माता-पिता व गांव का नाम रोशन करने पर खुशी का एहसास होता है। उन्होंने कहा कि ऐसे ही सफलता प्राप्त करने के लिए छात्रा को शुभकामनाएं हैं।

अनुराग ढांडा ने परिवार संग रोहतक में डाला वोट

एजेंसी

रोहतकः हरियाणा में लोकसभा चुनाव के 6वें फेज में आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष अनुराग ढांडा ने रोहतक के गवर्नमेंट हाई स्कूल सुखपुरा के बूथ नंबर 20 पर परिवार के साथ मतदान किया। इस दौरान सुखपुरा के बूथ नंबर 20 पर आम लोगों के साथ अनुराग ढांडा कतार में खड़े दिखाई दिए। वोट डालने के बाद ढांडा ने प्रदेश वासियों से मतदान करने की अपील की। उन्होंने कहा कि बेरोजगारी, किसानों पर अत्याचार और महिलाओं के अपमान का बदला वोट से लें। इसके साथ ढांडा ने कहा कि लाइन में लगे वोटरों में भाजपा के खिलाफ गुस्सा दिखा।

थार ने मारी मोटरसाइकिल को टक्कर, बाप की मौत, बेटा गंभीर

एजेंसी

हिसार। शहर के राजगढ़ रोड पर आजाद नगर के पास हुए सड़क हादसे में एक व्यक्ति की मौत हो गई जबकि उसका बेटा घायल हो गया। हादसा थार गाड़ी द्वारा बाइक को टक्कर मार देने से हुआ। दुर्घटना में बाइक के दो टुकड़े हो गए।

आजाद नगर के पास गुरुवार सुबह हुए हादसे के संबंध में रावतखेड़ा निवासी ईश्वर सिंह ने पुलिस को शिकायत दी है। शिकायत के अनुसार वह हिसार की अनाज मंडी में नौकरी करता है। सुबह लगभग आठ बजे वो गांव के बस स्टेंड पर गांव के ही सतबीर व उसके बेटे विरेन्द्र उर्फ संजू के साथ बातचीत कर अपने अपने मोटरसाईकिल पर हिसार के लिए रवाना हो गए।

रोहतक में हुड्डा तो झज्जर में शर्मा ने परिवार सहित किया मतदान

एजेंसी

रोहतकः हरियाणा में लोकसभा चुनाव गर्मी के वजह से वोटरों को काफी परेशानी का भी सामना करना पड़ रहा है। इस बीच पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा व उनके बेटे रोहतक से लोकसभा प्रत्याशी दीपेंद्र सिंह हुड्डा ने अपने परिवार सहित सांघी गांव के कम्युनिटी सेंटर में मतदान किया। इस दौरान लोगों से वोट करने की अपील करते हुए हुड्डा ने कहा कि हरियाणा में कांग्रेस की लहर चल रही है। वोटिंग के बाद दीपेंद्र ने कहा कि मैं हरियाणा के सभी मतदाताओं से अपील करता हूँ कि आप सभी अपने परिवार सहित अधिक से अधिक मतदान करें! आपके द्वारा दिया गया वोट संविधान

एवं लोकतंत्र को मजबूती प्रदान करेगा और आने वाली पीढ़ी के भविष्य को सुरक्षित करने का काम करेगा। आइए मतदान करके देश के लिए अपना फर्ज जरूर निभाएं!

इसके अलावा रोहतक लोकसभा से भाजपा प्रत्याशी अरविंद शर्मा ने झज्जर में अपने परिवार संग मतदान किया। उन्होंने भी लोगों से मतदान करने की अपील की।

गन्नौर के दिग्गज नेता रणधीर मलिक कांग्रेस में शामिल हुए

एजेंसी

सोनीपत। सोनीपत जननायक जनता पार्टी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष एवं विधानसभा 2019 जेजेपी पार्टी गन्नौर सीट से उम्मीदवार रहे रणधीर सिंह मलिक ने कांग्रेस का दामन थाम लिया है।

रणधीर सिंह मलिक हरियाणा सरकार में परिवहन मंत्री रहे स्वर्गीय वेद सिंह मलिक के भाई हैं। सोनीपत के विधायक सुरेंद्र पंवार के साथ पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा की उपस्थिति में रणधीर सिंह मलिक ने सैकड़ों समर्थकों के साथ रोहतक मंच कांग्रेस में आस्था जताई है।

पूर्व मुख्यमंत्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा ने रणधीर सिंह मलिक का कांग्रेस में शामिल होने पर स्वागत किया। एक दिन पहले ही जेजेपी पार्टी की

प्राथमिक सदस्यता व सभी पदों से त्याग पत्र दे चुके हैं। पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा व सोनीपत से विधायक सुरेंद्र पंवार ने रणधीर सिंह मलिक को पूरा मान-सम्मान देने का दिया आश्वासन दिया है। रणधीर मलिक ने कहा कि देश भर के कांग्रेस नीतियां आमजन के लिए हितकारी हैं। इसलिए उन्होंने कांग्रेस में आस्था जताई है।

प्रेमी जोड़े ने होटल में आत्म हत्या की

एजेंसी

सोनीपत। सोनीपत के गोहाना स्थित होटल में प्रेमी जोड़े ने होटल में आत्म हत्या कर ली। वे होटल में खुद को पति पत्नी बता कर ठहरे थे। गुरुवार दोपहर को दोनों के शव होटल के कमरे में फंदे पर लटके मिले। महिला के साथ ढाई साल का बच्चा भी था। मृतकों की पहचान सतपाल (26) और खुशबू के रूप में हुई है।

गुरुवार की दोपहर को सूचना मिलने के बाद पुलिस मौके पर पहुंची और शव कब्जे में लिए। होटल से मिले एड्रेस से उनके परिवार को बुलाया गया। बच्चे को वारिसों के हवाले कर दिया है। पुलिस की प्राथमिक जांच के

अनुसार, बुधवार को भिवानी से युवक, महिला और एक ढाई साल का बच्चा गोहाना में रोहतक रोड पर स्थित होटल डायमंड में पहुंचे थे। दोनों ने वहां खुद को पति-पत्नी बताकर कमरा लिया। इसके बाद वे कमरे में चले गए। रात को उन्होंने खाना खाया था। होटल स्टाफ का कहना है कि गुरुवार सुबह 10 बजे होटल से चेकआउट का समय था। सफाईकर्मी ने रूम का दरवाजा खटखटाया। अंदर से बच्चे की रोने की आवाज आ रही थी। उसने खिड़की से देखा तो अंदर दोनों फंदे से लटके हुए थे।

इस मामले की सूचना पुलिस को दी गई। इसके बाद कमरा खोल गया तो महिला व पुरुष फंदे पर लटके मिले। दोनों की मौत हो चुकी थी। इसके बाद इनके मोबाइल नंबर से इनके परिजनों को फोन पर सूचना दी गई। जांच में पता चला कि वे पति-पत्नी नहीं थे, बल्कि प्रेमी जोड़े थे। महिला की शादी हो चुकी थी और वह एक बच्चे की मां थी। होटल के कमरे में मिला बच्चा महिला का ही था। पुलिस ने उनके बयान दर्ज कर लिए हैं। शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजे गए हैं। भिवानी निवासी गोविंद कुमार ने बताया कि उसकी शादी 5 साल पहले खुशबू से शादी हुई थी। उसका ढाई साल का बेटा भी है। उसे 20 मई को पता चला था कि पत्नी खुशबू मौसी के लड़के सतपाल के साथ गई है। इसके बाद उन्होंने सदर थाना में रिपोर्ट दर्ज करा दी थी। उसके पास पुलिस की ओर से फोन आया, जिसके बाद वह मौके पर पहुंच गए।

जिला स्तरीय योग ओलंपियाड 2024 का आयोजनराजकीय उच्च विद्यालय चंदलाना की प्रियंका रही प्रथम

एजेंसी

कैथल। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान कैथल में जिला स्तरीय योग ओलंपियाड 2024 का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का शुभारंभ जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी- डाइट प्राचार्या, सरोज कुमारी ने किया। राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद हरियाणा गुरुग्राम जनसंख्या शिक्षा विभाग व हरियाणा योग आयोग के मार्गदर्शन में यह प्रतियोगिता आयोजित करवाई गई। जिला स्तरीय प्रतियोगिता में 81 लड़के लड़कियों ने भाग लिया। यह प्रतियोगिता सबसे पहले क्लस्टर स्तर व खंड स्तर पर

आयोजित करवाई गई। प्रत्येक खंड से खंड स्तर पर 10 से 14 व 14 से 16 आयु वर्ग आयु वर्ग के विजेता चार लड़के और चार लड़कियों जिला स्तरीय प्रतियोगिता में भाग लिया। जिला स्तरीय प्रतियोगिता में लड़कियों की 10-14 आयु वर्ग में प्रियंका राजकीय उच्च विद्यालय चंदलाना प्रथम, अक्षिता राजकीय उच्च विद्यालय चंदलाना द्वितीय, तमन्ना राजकीय माध्यमिक विद्यालय उरलाना तृतीया, पायल राजकीय माध्यमिक विद्यालय डयोड खेड़ी चतुर्थ रही।10-14 आयु वर्ग में होन्नी राजकीय माध्यमिक विद्यालय उरलाना प्रथम, राजन राजकीय माध्यमिक विद्यालय डयोड खेड़ी द्वितीय, राजकीय माध्यमिक उरलाना से करण वह राकेश चतुर्थ रहे। लड़कियों के 14-16 आयु वर्ग में अमनप्रीत प्रथम, सुदीक्षा द्वितीय, आरुषि तृतीया व अंजलि चतुर्थ स्थान पर रही।जबकि लड़कों के 14-16 आयु वर्ग में राहुल प्रथम प्रभात शर्मा द्वितीय प्रिंस तृतीया व बेगराज चतुर्थ स्थान पर रहे। हरियाणा योग आयोग से प्रमाणित कुलदीप सिंह व विनोद कुमार, वरिष्ठ डी.पी. शमशेर सिंह, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, खेड़ी गुलाम अली व डॉ. दीपक कौशिक ने जिला स्तरीय योगा ओलंपियाड 2024 में निर्णायक की भूमिका निभाई।

गर्मियों में दुधारू पशुओं के लिए लोबिया का चारा लाभकारी : कुलपति कम्बोज

एजेंसी

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज ने कहा है कि गर्मी के मौसम में दुधारू पशुओं के लिए लोबिया चारे की फसल लाभकारी है। लोबिया की खेती प्राय- सिंचित क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है। यह गर्मी और खरीफ मौसम की जल्द बढने वाली फलीदार, पौष्टिक एवं स्वादिष्ट चारे वाली फसल है। किसानों को लोबिया फसल की बिजाई संबंधी जानकारी देते हुए कुलपति कम्बोज ने कहा कि हरे चारे के अलावा दलहन, हरी फली (सब्जी) व हरी खाद के रूप में अकेले अथवा मिश्रित फसल के तौर पर भी लोबिया को उगाया जाता है। हरे चारे की अधिक पैदावार के लिए इसे सिचिंत इलाकों में मई में तथा वर्षा पर निर्भर इलाकों में बरसात शुरू होते ही बीज देना चाहिए। उन्होंने बताया कि मई में बोई गई फसल से जुलाई में इसका हरा चारा चारे की कमी वाले समय में उपलब्ध हो जाता है, अगर किसान लोबिया को ज्वार, बाजरा या मक्की के साथ 2:1 के अनुपात में लाइनों में उगाएं तो इन फसलों के चारे की गुणवता भी बढ़ जाती है। गर्मियों में दुधारू पशुओं की दूध देने की क्षमता बढ़ाने के लिए लोबिया का चारा अवश्य खिलाना चाहिए। इसके चारे में औसतन 15-20 प्रतिशत प्रोटीन और सूखे दानों में लगभग 20-25 प्रतिशत प्रोटीन होती है।

आरबीआई ने हीरो फिनकॉर्प लिमिटेड पर लगाया 3.1 लाख का जुर्माना

एजेंसी

नई दिल्ली। भारत में फाइनेंस सेक्टर पर निगरानी रखने का काम भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) करता है. इसलिए फाइनेंस सेक्टर में काम करने वाली हीरो ग्रुप की एक कंपनी पर उसने नियमों का पालन करने में लापरवाही करने के लिए 3.1 लाख रुपए का जुर्माना लगाया है. आखिर इसके पीछे क्या वजह है और क्या इस जुर्माने से कंपनी के सामान्य ग्राहकों पर कोई असर पड़ेगा?

आरबीआई ने एक बयान में जानकारी दी कि उसने हीरो ग्रुप की कंपनी हीरो फिनकॉर्प लिमिटेड पर 3.1 लाख रुपए का जुर्माना लगाया है. कंपनी पर ये जुर्माना इसलिए लगाया गया है क्योंकि उसने व्यापार करने के उचित तरीकों के लिए बनाई गई संहिता के कुछ प्रावधानों का सही से पालन नहीं किया है.

दरअसल हीरो फिनकॉर्प पर आरोप है कि उसने कर्ज लेने वाले ग्राहकों को उनकी समझ में आने वाली स्थानीय भाषा में कर्ज के नियम और शर्तों को लिखित तौर पर नहीं बताया था।

खराब कोयला बेचने के आरोप का अडानी ग्रुप ने दिया जवाब, मार्केट कैप 17.23 लाख करोड़ के पार

एजेंसी

नई दिल्ली। उद्योगपति गौतम अडानी लंबे समय से विपक्ष के निशाने पर हैं. चुनाव के दौरान अब उन पर नए आरोप लगे हैं कि उन्होंने खराब क्वालिटी के कोयले को अच्छा बताकर उसे महंगे दाम पर बेचकर करोड़ों रुपए का घोटाला किया है. लेकिन लगता है शेयर मार्केट को इससे खास फर्क नहीं पड़ा है. उनके समूह की शेयर बाजार में लिस्ट 10 कंपनियों का टोटल मार्केट कैपिटलाइजेशन जबरदस्त तरीके से बढ़ा है.

एमकैप 17 लाख करोड़ रुपए के पार

शेयर बाजार में गुरुवार को जबरदस्त तेजी दर्ज की गई. सेंसेक्स और निफ्टी दोनों ने ऑल-टाइम हाई के रिकॉर्ड स्तर को पार किया. इसका असर अडानी ग्रुप की कंपनियों पर भी देखा गया. अडानी ग्रुप की 10 लिस्टेड कंपनियों का मार्केट कैप गुरुवार शाम को 17,23,518.65 करोड़ रुपए हो गया. ये दिखाता है कि निवेशकों को अडानी ग्रुप पर लगे आरोपों को लेकर कोई खास फर्क नहीं पड़ा है. अडानी समूह की सभी लिस्टेड कंपनियों का टोटल मार्केट कैपिटलाइजेशन 16.9 लाख करोड़ रुपए तक पहुंच गया था. इस तरह ग्रुप की कंपनियों के मार्केट कैप में एक ही दिन में 33,000 करोड़ से अधिक की बढ़ोतरी हुई है.

विपक्षी दलों का आरोप है कि अडानी ग्रुप ने इंडोनेशिया से सस्ते दाम पर कोयला खरीदा. उसके बाद उसे तमिलनाडु की एक सरकारी बिजली कंपनी को महंगे दाम पर उसकी आपूर्ति की. इस कथित हेराफेरी से मार्केट पर असर नहीं पड़ा और निवेशकों ने समूह पर भरोसा जताया है. हालांकि अडानी ग्रुप ने इस सभी आरोपों को बेबुनियाद बताया है।

गूगल ने की आपको शॉपिंग कराने की तैयारी

एजेंसी

नई दिल्ली। दुनिया का सबसे बड़ा सचइंजन गूगल अब नए सेगमेंट में भी एंटर कर रहा है और भारत में अपनी पकड़ को मजबूत कर रहा है. गूगल ने पहले जियो प्लेटफॉर्म्स में निवेश किया. अभी वह अपने पिक्सल फोन को भारत में बनाने को लेकर भी वह फॉक्सकॉन के साथ बातचीत कर रहा है. अब उसने आपको शॉपिंग कराने की भी तैयारी कर ली है. गूगल भारत के सबसे बड़े ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म में से एक फ्लिपकार्ट में निवेश करने की प्लानिंग कर रहा है. वॉलमार्ट के मालिकाना हक वाली फ्लिपकार्ट में छोटी हिस्सेदारी खरीदने के लिए गूगल ने अच्छा खासा निवेश करने का प्रस्ताव दिया है. इससे गूगल एक तरह से ब्रहृशृश्ठ को भी टक्कर देगी, जो दुनिया की सबसे बड़ी ई-कॉमर्स कंपनियों में से एक है.वॉलमार्ट ने जानकारी दी कि गूगल उसकी ई-कॉमर्स कंपनी फ्लिपकार्ट में छोटी सी हिस्सेदारी खरीदने के लिए 35 करोड़ डॉलर (करीब 2,900 करोड़ रुपए) का निवेश कर सकती है. ये फ्लिपकार्ट के नए फंड रेजिंग राउंड का हिस्सा है. इस राउंड में कंपनी ने एक अरब डॉलर जुटाने का लक्ष्य रखा है. खुद वॉलमार्ट ने फ्लिपकार्ट में 60 करोड़ डॉलर निवेश की प्रतिबद्धता जताई है. हालांकि गूगल का फ्लिपकार्ट में इंवेस्टमेंट अभी रेग्युलेटरी अनुमति मिलने के बाद ही संभव होगा. गूगल का फ्लिपकार्ट में माइनॉरिटी स्टेक ही होगा।

भारत में फ्लैगशिप रेंज रोवर्स जल्द ही आ रही

मुंबई। कंपनी का कहना है कि भारत में असेंबल की गई फ्लैगशिप रेंज रोवर्स जल्द ही आ रही हैं सरकार की मेक इन इंडिया पहल को बढ़ावा देते हुए, टाटा मोटर्स के स्वामित्व वाली जगुआर लैंड रोवर (जेएलआर) ने कहा कि वह प्रमुख रेंज रोवर मॉडल की असेंबलिंग शुरू करने की योजना बना रही है।सरकार की मेक इन इंडिया पहल को बढ़ावा देते हुए, टाटा मोटर्स के स्वामित्व वाली जगुआर लैंड रोवर (जेएलआर) ने शुक्रवार को कहा कि वह पहली बार भारत में रेंज रोवर स्पोर्ट के साथ-साथ फ्लैगशिप रेंज रोवर मॉडल की असेंबलिंग शुरू करने की योजना बना रही है। कंपनी का पुणे प्लांट वर्तमान में रेंज रोवर वेलार, रेंज रोवर इवोक, जगुआर एफ-पेस और डिस्कवरी स्पोर्ट मॉडल को असेंबल करता है। भारत में असेंबल की गई रेंज रोवर्स इस महीने के अंत तक डिलीवरी के लिए उपलब्ध होंगी

आदित्य बिड़ला समूह का मार्केट कैप 100 अरब डॉलर के पार

एजेंसी

नई दिल्ली। आदित्य बिड़ला समूह (एबीजी) की कंपनियों का संयुक्त रूप से बाजार पूंजीकरण (मार्केट कैप) 100 अरब अमेरिकी डॉलर के आंकड़े को पार कर गया। समूह की कंपनियों का बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (बीएसई) पर संयुक्त मार्केट कैप 8,51,460.25 करोड़ रुपये आंका गया है। आदित्य बिड़ला समूह ने जारी एक बयान में कहा कि समूह के मार्केट कैप में बढ़ोतरी ने बाजार के मानक सूचकांकों सेंसेक्स एवं निफ्टी को सालाना आधार पर एक साल, तीन साल और पांच साल की समय-सीमा में पीछे छोड़ दिया है। आदित्य बिड़ला समूह एक भारतीय बहुराष्ट्रीय समूह है, जिसका मुख्यालय महाराष्ट्र के मुंबई में स्थित है।

उल्लेखनीय है कि आदित्य बिड़ला समूह (एबीजी) की कंपनियों में अल्ट्राटेक सीमेंट, ग्रासिम, हिंडाल्को, आदित्य बिड़ला कैपिटल, आदित्य बिड़ला सन लाइफ एएमसी, वोडाफोन आइडिया, आदित्य बिड़ला फैशन एंड रिटेल, टीसीएनएस क्लोदिंग, आदित्य बिड़ला मनी, सेंचुरी टेक्सटाइल्स, सेंचुरी एंका और पिलानी इन्वेस्टमेंट शामिल हैं।

देश का विदेशी मुद्रा भंडार बढ़कर 648.7 अरब डॉलर की नई ऊंचाई पर

एजेंसी

नई दिल्ली। लगातार तीसरे हफ्ते विदेशी मुद्रा भंडार में इजाफा हुआ है। देश का विदेशी मुद्रा भंडार 17 मई को समाप्त हफ्ते में 4.55 अरब डॉलर बढ़कर 648.7 अरब डॉलर के नए सर्वकालिक उच्चतम स्तर पर पहुंच गया है। इससे पिछले हफ्ते में विदेशी मुद्रा भंडार 2.56 अरब डॉलर बढ़कर 644.15 अरब डॉलर रहा था।

रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) ने जारी आंकड़ों में बताया कि 17 मई को समाप्त हफ्ते में विदेशी मुद्रा भंडार का अहम घटकर माने जाने वाली विदेशी मुद्रा आस्तियां 3.36 अरब डॉलर बढ़कर 569.01 अरब डॉलर पर पहुंच गई। इस दौरान स्वर्ण भंडार का आरक्षित मूल्य भी 1.24 अरब डॉलर बढ़कर 57.19 अरब डॉलर हो गया। आरबीआई के मुताबिक इस दौरान विशेष आहरण अधिकार (एसडीआर) 11.3 करोड़ डॉलर बढ़कर 18.17 अरब डॉलर रहा। हालांकि, अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष (आईएमएफ) के पास भारत की आरक्षित जमा 16.8 करोड़ डॉलर घटकर 4.33 अरब डॉलर रह गई। इससे पहले 5 अप्रैल, 2024 को

समाप्त हफ्ते में देश का विदेशी मुद्रा भंडार बढ़कर 648.56 अरब डॉलर के सर्वकालिक उच्चतम स्तर पर पहुंच गया था।

अडाणी पोर्ट्स को सेंसेक्स में शामिल करने का फैसला, दिग्गज आईटी कंपनी विप्रो की छुट्टी

एजेंसी

नई दिल्ली। बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (बीएसई) ने इस बार अपने बेंचमार्क इंडेक्स सेंसेक्स के साथ ही अपने अन्य इंडेक्सों में भी बड़ा बदलाव करने का फैसला किया है। बीएसई ने इस बार की हाफ इयरली रीबैलेंसिंग एक्सरसाइज के तहत अडाणी पोर्ट्स को सेंसेक्स में शामिल करने का फैसला लिया है। आईटी सेक्टर की दिग्गज कंपनी विप्रो सेंसेक्स से बाहर हो जाएगी। सेंसेक्स में ये बदलाव एक महीने बाद 24 जून से प्रभावी होंगे।

बीएसई की ओर से उपलब्ध कराई गई जानकारी के मुताबिक सेंसेक्स में शामिल 30 कंपनियों के स्टॉक्स की हर 6 महीने पर रीबैलेंसिंग एक्सरसाइज के तहत समीक्षा की जाती है। इस समीक्षा में कंपनियों के परफॉर्मेंस के हिसाब से उन्हें सेंसेक्स या दूसरे इंडेक्स में कायम रखा जाता है या फिर उन्हें बाहर कर किसी दूसरी कंपनी को जगह दी जाती है। रीबैलेंसिंग

एक्सरसाइज के तहत इस बार सेंसेक्स के अलावा बीएसई 100, सेंसेक्स 50, सेंसेक्स नेक्स्ट 50 और बीएसई बैंकेक्स में भी बदलाव किया जा रहा है।

बीएसई के मुताबिक बीएसई 100 इंडेक्स में रूरल इलेक्ट्रिफिकेशन कॉर्पोरेशन (आरईसी), केनरा बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, कमिन्स इंडिया और एचडीएफसी एएमसी को शामिल किया जा रहा है। अभी मौजूद एसबीआई कार्ड्स, जुबिलेंट फूडवर्क्स, पेज इंडस्ट्रीज, आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ इंश्योरेंस और जी एंटरटेनमेंट एंटरप्राइजेज को इस सूचकांक से बाहर का रास्ता दिखाया जा रहा है। इसी तरह सेंसेक्स 50 से डिवीज लेबोरेट्रीज की छुट्टी हो रही है। उसकी जगह टाटा ग्रुप की रिटेल कंपनी ट्रेंट लेगी। जानकारों के मुताबिक जिन कंपनियों के स्टॉक्स को सूचकांक में शामिल किया जाता है या सूचकांक से बाहर किया जाता है, उससे उन कंपनियों के स्टॉक्स भी प्रभावित होते हैं, क्योंकि म्युचुअल फंड हाउस की कई स्कीम इंडेक्स आधारित होती है। जब भी म्युचुअल फंड हाउस अपने इंडेक्स फंड में पैसा लगाता है, तो उससे इंडेक्स में शामिल सभी स्टॉक्स को पैसा मिलता है, जिससे कंपनियों के स्टॉक्स की कीमत में तेजी आने की संभावना बन जाती है। इसी तरह जब म्युचुअल फंड हाउस किसी इंडेक्स फंड से पैसे की निकासी करते हैं, तो उससे भी कंपनियों के स्टॉक्स के बाजार भाव पर नकारात्मक असर पड़ता है।

एक महीने में 8फीसदी टूटा कच्चा तेल

नई दिल्ली। भले ही इंटरनेशनल मार्केट में कच्चे तेल की कीमत में करीब एक फीसदी की तेजी देखने को मिली हो, लेकिन एक महीने में यही दाम करीब 8 फीसदी तक कम हो चुके हैं. खाड़ी देशों का कच्चा तेल इंटरनेशनल मार्केट में करीब 8 फीसदी तक सस्ता हो चुका है. वहीं दूसरी ओर अमेरिकी क्रूड ऑयल के दाम करीब 7 फीसदी तक कम हो चुके हैं.

जानकारों की मानें तो डिमांड पर असर पड़ने की वजह से कच्चे तेल की कीमत में गिरावट देखने को मिली है. वास्तव में अमेरिका में स्ट्रांग इकोनॉमिक डाटा आने की वजह से अनुमान है कि फेड ब्याज दरों को लंबे समय होल्ड करके रख सकता है. जिसकी वजह से डॉलर इंडेक्स में तेजी देखने को मिली है. जिसका असर कच्चे तेल की कीमत में देखने को मिलेगा.वहीं दूसरी ओर भारत में पेट्रोल और डीजल की कीमत में कोई बदलाव देखने को नहीं मिला है. देश के चारों महानगरों में वो ही दाम लागू रहेंगे, जोकि 16 मार्च को थे. तब देश की ओएमसी ने पेट्रोल और डीजल की कीमत में 2 रुपए प्रति लीटर की कटौती की थी. जानकारों के अनुसार कच्चे तेल की कीमत में इसी तरह की गिरावट देखने को मिली तो चुनाव के बाद पेट्रोल और डीजल के दाम में कटौती देखने को मिल सकती है. आइए आपको भी बताते हैं कि आखिर इंटरनेशनल मार्केट में कच्चे तेल के दाम कितने हो गए हैं.

इंटरनेशनल मार्केट में कच्चे तेल के दाम में तेजी देखने को मिली. खाड़ी देशों का तेल ब्रेंट क्रूड ऑयल 1 फीसदी की तेजी के साथ 82.12 डॉलर प्रति बैरल पर बंद हुआ. वैसे बीते एक महीने में ब्रेंट क्रूड ऑयल की कीमत में 7.70 फीसदी की गिरावट देखने को मिली है. 26 अप्रैल के बाद से ब्रेंट क्रूड ऑयल 7 डॉलर प्रति बैरल सस्ता हो चुका है.

वहीं दूसरी ओर अमेरिकी कच्चे तेल के दाम यानी डब्ल्यूटीआई में 1.11 फीसदी की तेजी देखी गई और दाम 77.72 डॉलर प्रति बैरल पर आ गए हैं. करीब एक महीने में अमेरिकी तेल के दाम में करीब 7 फीसदी की गिरावट देखने को मिल चुकी है. इसका मतलब है कि डब्ल्यूटीआई में करीब 6 डॉलर की गिरावट देखने को मिल चुकी है।

केंद्र ने 262.48 लाख टन गेहूं खरीदा, पिछले साल से ज्यादा हुई खरीदारी

एजेंसी

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव के बीच अच्छी खबर है। गेहूं की खरीदारी पिछले साल से आगे निकल गई है। केंद्र सरकार ने गेहूं खरीद विपणन वर्ष 2024-25 में 262.48 लाख टन गेहूं खरीदा है। इससे पिछले विपणन वर्ष में कुल खरीद 262.02 लाख टन रही थी। मुख्य रूप से पंजाब और हरियाणा में गेहूं की अच्छी खरीद से कुल खरीदारी को बढ़ावा मिला है।

उपभोक्ता, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मामलों के मंत्रालय ने जारी बयान में बताया कि केंद्रीय भंडारण के लिए 262.48 लाख टन रबी मौसम का अनाज गेहूं खरीदा जा चुका है। इससे 59,715 करोड़ रुपये के न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) के साथ 22.31 लाख किसानों को लाभ हुआ है। गेहूं खरीद विपणन वर्ष 2024-25 के दौरान पंजाब में 124.26 लाख टन, हरियाणा में 71.49 लाख टन, मध्य प्रदेश में 47.78 लाख टन, राजस्थान में 9.66 लाख टन और उत्तर प्रदेश में 9.07 लाख टन गेहूं की खरीद की गई है।

मंत्रालय के मुताबिक चावल की खरीद भी सुचारू रूप से जारी है। 489.15 लाख टन चावल के बराबर 728.42 लाख टन धान करीब 1,60,472 करोड़ रुपये के न्यूनतम समर्थन मूल्य पर 98.26 लाख किसानों से खरीदा गया है। खाद्य मंत्रालय ने बताया कि गेहूं और

चावल का संयुक्त भंडार वर्तमान में केंद्रीय भंडारण पूल में 600 लाख टन से अधिक है। सरकार ने विपणन वर्ष 2024-25 के लिए गेहूं खरीद लक्ष्य 30 से 32 करोड़ टन निर्धारित किया है।

सोनी पिक्चर्स के एमडी और सीईओ एनपी सिंह ने दिया इस्तीफा

एजेंसी

नई दिल्ली। पॉपुलर एंटरटेनमेंट कंपनी सोनी पिक्चर्स नेटवर्क्स इंडिया (एसपीएनआई) के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी एनपी सिंह ने 25 वर्ष के कार्यकाल के बाद अपने पद से इस्तीफा दे दिया है। हालांकि, जब तक कंपनी को कोई नया एमडी और सीईओ नहीं मिल जाता, तब तक वे पदभार संभालेंगे।

एनपी सिंह ने कंपनी स्टाफ को भेजे ई-मेल में कहा कि आज मेरे पास शेयर करने के लिए एक महत्वपूर्ण अपडेट है। सोनी पिक्चर्स नेटवर्क्स इंडिया में 25 वर्ष के कार्यकाल समेत अपने करियर के 44 साल के कार्यकाल के बाद एमडी और सीईओ के रूप में अपनी भूमिका से हटने का फैसला किया है। हालांकि, वे नए उत्तराधिकारी मिलने तक कंपनी के साथ अपनी वर्तमान भूमिका में बने रहेंगे। एनपी सिंह 1999 से एसपीएनआई के साथ कार्यरत हैं।

सोनी पिक्चर्स नेटवर्क्स इंडिया के निवर्तमान सीईओ एनपी सिंह एसपीएन के चीफ फाइनेंस ऑफिसर के रूप में शामिल हुए थे। इसके बाद कंपनी ने उन्हें एमडी और मुख्य कार्यकारी अधिकारी बनाया था। सोनी पिक्चर्स नेटवर्क्स इंडिया पहले एनपी सिंह मोदी ज़ेरॉक्स, स्पाइस टेलीकॉम, मोदीकॉर्प और हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड जैसे बड़े संस्थानों में फाइनेंस और ऑपरेशन में अहम भूमिका

निभाई है। उन्होंने दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से मास्टर की डिग्री हासिल की है।

रिकॉर्ड हाई पर पहुंचने के बाद लुढ़का शेयर बाजार, सेंसेक्स-निफ्टी सपाट स्तर पर बंद

एजेंसी

नई दिल्ली। घरेलू शेयर बाजार ने एक बार फिर मजबूती का नया रिकॉर्ड बनाया। निफ्टी ने पहली बार 23 हजार अंक के आंकड़े को पार किया, लेकिन बाद में मुनाफावसूली का दबाव बन जाने की वजह से शेयर बाजार ने अपनी बढ़त गंवा दी। पूरे दिन के कारोबार के बाद सेंसेक्स 0.01 प्रतिशत और निफ्टी 0.05 प्रतिशत की कमजोरी के साथ बंद हुए। आज दिन भर के कारोबार के दौरान ऑयल एंड गैस, मीडिया, टेलीकॉम और कैपिटल गुड्स सेक्टर के शेयर बढ़त के साथ कारोबार करते नजर आए। दूसरी ओर आईटी, एफएमसीजी, मेटल, हेल्थकेयर और रियल्टी सेक्टर के शेयरों में बिकवाली का दबाव बना रहा। ब्रॉडर मार्केट में आज मिला-जुला कारोबार होता नजर आया, जिसके कारण बीएसई का मिडकैप इंडेक्स 0.23 प्रतिशत की तेजी के साथ बंद हुआ। स्मॉलकैप इंडेक्स ने 0.20 प्रतिशत की गिरावट के साथ आज के कारोबार का अंत किया।आज बाजार की कमजोरी के कारण स्टॉक मार्केट के निवेशकों की संपत्ति में 10 कारोबारी दिन के बाद पहली बार घट गई। बीएसई में लिस्टेड कंपनियों का मार्केट कैपिटलाइजेशन आज के कारोबार के बाद घट कर 419.82 लाख करोड़ रुपये (अस्थाई) हो गया। पिछले कारोबारी दिन यानी गुरुवार को इनका मार्केट कैपिटलाइजेशन 420.22 लाख करोड़ रुपये था। इस तरह निवेशकों को आज के कारोबार से करीब 40 हजार करोड़ रुपये का नुकसान हो

गया। आज दिन भर के कारोबार में बीएसई में 3,945 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हुई। इनमें 1,700 शेयर बढ़त के साथ बंद हुए, जबकि 2,143 शेयरों में गिरावट का रुख रहा। 102 शेयर बिना किसी उतार चढ़ाव के बंद हुए। एनएसई में आज 2,258 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हुई। इनमें से 884 शेयर मुनाफा कमा कर हरे निशान में और 1,374 शेयर नुकसान उठा कर लाल निशान में बंद हुए। इसी तरह सेंसेक्स में शामिल 30 शेयरों में से 9 शेयर बढ़त के साथ और 21 शेयर गिरावट के साथ बंद हुए। निफ्टी में शामिल 14 शेयर हरे निशान में और 36 शेयर लाल निशान में बंद हुए।

बीएसई का सेंसेक्स आज 82.59 अंक की कमजोरी के साथ 75,335.45 अंक के स्तर पर खुला। गिरावट के साथ कारोबार की शुरुआत होने के बावजूद ओपनिंग के मामले में सेंसेक्स का ये अभी तक का सर्वोच्च स्तर था। कारोबार की शुरुआत होने के बाद से ही बाजार में लिवालों और बिकवालों के बीच खींचतान की स्थिति बन गई, जिसकी वजह से इस सूचकांक की चाल में भी उतार-चढ़ाव होता रहा। खरीदारी के सपोर्ट से ये सूचकांक 218.46 अंक उछल कर अभी तक के सर्वोच्च स्तर 75,636.50 अंक तक पहुंच गया। इसके बाद मुनाफावसूली शुरू हो जाने के कारण इस सूचकांक में लाल निशान में गोता लगा दिया। पूरे दिन के कारोबार के बाद सेंसेक्स 7.65 अंक की मामूली गिरावट के साथ 75,410.39 अंक के स्तर पर बंद हुआ। सेंसेक्स की तरह ही एनएसई के निफ्टी ने भी गिरावट के साथ कारोबार शुरू करने के बावजूद ओपनिंग का ऑल टाइम हाई का नया रिकार्ड बनाने में सफलता हासिल की। इस सूचकांक ने आज 36.90 अंक की कमजोरी के साथ 22,930.75 अंक के स्तर से कारोबार की शुरुआत की। बाजार खुलने के बाद से ही तेजड़ियों और मंदड़ियों के बीच एक दूसरे पर हावी होने की कोशिश शुरू हो जाने के कारण इस सूचकांक की चाल भी लगातार ऊपर नीचे होती रही।

हालांकि, खरीदारी के सपोर्ट से दोपहर 2 बजे के करीब ये सूचकांक 95.65 अंक की मजबूती के साथ पहली बार 23 हजार अंक के आंकड़े को स्तर को पार करके अभी तक के सर्वोच्च स्तर 23,026.40 अंक तक पहुंच गया। इसके बाद बाजार में बिकवाली शुरू हो जाने की वजह से ये सूचकांक ऊपरी स्तर से लुढ़क कर लाल निशान में गिर गया। पूरे दिन हुई खरीद बिक्री के बाद निफ्टी 10.55 अंक की गिरावट के साथ 22,957.10 के स्तर पर बंद हुआ।

पूरे दिन के कारोबार के बाद स्टॉक मार्केट के दिग्गज शेयरों में से एचडीएफसी बैंक 1.65 प्रतिशत, लार्सन एंड टुब्रो 1.13 प्रतिशत, भारती एयरटेल 1.05 प्रतिशत, बीपीसीएल 1.03 प्रतिशत और एक्सिस बैंक 0.75 प्रतिशत की मजबूती के साथ आज के टॉप 5 गेनर्स की सूची में शामिल हुए। दूसरी ओर, अडाणी पोर्ट्स 1.89 प्रतिशत, टाटा कंज्यूमर प्रोडक्ट्स 1.76 प्रतिशत, टेक महिंद्रा 1.18 प्रतिशत, टीसीएस 1.17 प्रतिशत और आईटीसी 1.13 प्रतिशत की गिरावट के साथ आज के टॉप 5 लूजर्स की सूची में शामिल हुए।

सस्ता हुआ सोना, चांदी की भी फीकी पड़ी चमक

एजेंसी

नई दिल्ली। घरेलू सर्राफा बाजार में आज जबरदस्त गिरावट नजर आ रही है। आज देश के ज्यादातर सर्राफा बाजारों में 24 कैरेट और 22 कैरेट सोना 1 हजार रुपये से ज्यादा सस्ता हो गया है। भाव में आई गिरावट के कारण आज 24 कैरेट सोना 73,630 रुपये से लेकर 73,410 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर बिक रहा है। इसी तरह 22 कैरेट सोना 67,490 रुपये से लेकर 67,290 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर बना हुआ है। सोने की तरह ही चांदी में भी आज 3,500 रुपये प्रति किलोग्राम तक की गिरावट आई है। इस गिरावट के कारण आज दिल्ली सर्राफा बाजार में चांदी 92,400 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर बिक रहा है।

देश की राजधानी दिल्ली में 24 कैरेट सोना आज 73,560 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 67,440 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई। इसी तरह मुंबई में 24

कैरेट सोना 73,410 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 67,290 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। चेन्नई में 24 कैरेट सोने की रिटेल कीमत 73,630 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोने की कीमत 67,490 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। इन प्रमुख शहरों के अलावा अहमदाबाद में 24 कैरेट सोना आज 73,460 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर और 22 कैरेट सोना 67,340 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर बिक रहा है। इसी तरह कोलकाता में 24 कैरेट सोना 73,410 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 67,290 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर पहुंचा हुआ है।

लखनऊ के सर्राफा बाजार में 24 कैरेट सोना आज 73,560 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर और 22 कैरेट सोना 67,440 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। पटना में 24 कैरेट सोने की कीमत 73,460 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गई है, जबकि 22 कैरेट सोना 67,340 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। इसी तरह जयपुर में 24 कैरेट सोना 73,560 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 67,440 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। देश के अन्य राज्यों की तरह कर्नाटक, तेलंगाना और ओडिशा के सर्राफा बाजार में भी सोने की कीमत में आज जोरदार गिरावट दर्ज की गई है। इन तीनों राज्यों की राजधानियों बेंगलुरु, हैदराबाद और भुवनेश्वर में 24 कैरेट सोना आज 73,410 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। इसी तरह इन तीनों शहरों के सर्राफा बाजार में 22 कैरेट सोना 67,290 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है।

दिल्ली-एनसीआर में बदला रियल एस्टेट का सीन, खूब बढ़ी सेल और इतनी घट गई खाली मकानों की संख्या

एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली-एनसीआर में मकानों की बिक्री एक बार फिर से रफ्तार पकड़ रही है। ऐसे में वे मकान जो नहीं बिक पाए थे, उसकी संख्या में भी गिरावट आई है। दिल्ली-एनसीआर के इलाकों में ऐसे मकानों की संख्या में भारी कमी आई है. वहीं देश के अन्य शहरों में भी बिना बिके मकानों की इंवेंटरी में गिरावट दर्ज की जा रही है. नोएडा में खाली पड़े मकानों की इंवेंटरी अब सबसे कम हो चली है. जबकि गुरुग्राम में इनकी संख्या सबसे ज्यादा है.रियल एस्टेट एडवाइजर कंपनी एनारॉक की रिपोर्ट के मुताबिक दिल्ली-एनसीआर में बिना बिके मकानों की संख्या घटकर 86,420 रह गई. ये 5 साल पहले मार्च 2018 के अंत में 2,00,476 यूनिट थी.

दिल्ली-एनसीआर में बीते 5 साल में बिना बिके मकानों की संख्या में 57 फीसदी कमी आई है. इसमें नोएडा और गुरुग्राम एकदम अपोजिट डायरेक्शन में खड़े हैं. गुरुग्राम में बिना बिके मकानों की संख्या 53,136 से घटकर 33,326 हो गई. इसके बावजूद दिल्ली-एनसीआर में ये बिना बिके मकानों की सबसे बड़ी इंवेंटरी है. वहीं नोएडा में ऐसे मकानों की संख्या में 71 प्रतिशत की गिरावट हुई है. नोएडा में 25,669 यूनिट में से खाली मकानों की संख्या 7,451 यूनिट पर आ गई है. ग्रेटर नोएडा में 61,628 के मुकाबले इनकी संख्या 70 प्रतिशत गिरकर 18,668 हो गई।

वेट लॉस से लेकर हेल्दी हार्ट तक, ब्लूबेरी खाने से सेहत को मिलते हैं ये 5 शानदार फायदे

ब्लूबेरी छोटा गोल और नीले रंग का एक फल है जो न सिर्फ स्वाद बल्कि सेहत के लिए भी काफी शानदार होता है। कई लोग इसे नीलबदरी के नाम से भी जानते हैं जिसकी ज्यादातर पैदावार यूरोप एशिया नॉर्थ और साउथ अमेरिका में देखने को मिलती है। अन्य फलों के मुकाबले मार्केट में यह थोड़ी महंगी मिलती है लेकिन आपकी सेहत को बेशुमार फायदे दे सकती है। आइए जानें।

खट्टा-मीठा और रसीला यह फल न सिर्फ खाने में टेस्टी लगता है, बल्कि सेहत के लिहाज से भी किसी खजाने से कम नहीं है। भले ही, अन्य फलों के मुकाबले यह थोड़ा महंगा जरूर है, लेकिन आज इस आर्टिकल में हम आपको ब्लूबेरी खाने के ऐसे लाजवाब फायदे बताएंगे, कि उसके बाद आपको भी इसपर पैसे खर्च करते हुए जरा भी नहीं सोचना पड़ेगा। आइए जानते हैं कि कैसे विटामिन सी, विटामिन के, पोटेशियम, मैंगनीज, फाइबर और कई जरूरी एंटीऑक्सीडेंट्स से भरपूर इस फल को खाने से क्या-क्या फायदे मिल सकते हैं।

ब्लूबेरी में कैलोरी की मात्रा कम, तो वहीं फाइबर भरपूर मात्रा में पाया जाता है, ऐसे में इसे खाने से आपका वजन नहीं बढ़ेगा और आप काफी देर तक फुल महसूस करेंगे और ओवरईटिंग से बच सकेंगे। बता दें, कि इसमें एन्थोसायनिन नामक तत्व भी पाया जाता है, जो वजन को कंट्रोल में रखने में काफी मददगार होता है।

हार्ट के लिए लाभकारी

ब्लड प्रेशर, कोलेस्ट्रॉल और दिल से जुड़ी कई बीमारियों के जोखिम को कम करने में ब्लूबेरी काफी फायदेमंद होती है। इसके सेवन से आप हार्ट अटैक और स्ट्रोक के खतरे को भी कम कर सकते हैं। विटामिन सी, विटामिन बी 6, एन्थोसाइनिन, पोटेशियम, और फाइबर की मौजूदगी इसे हार्ट के लिए हेल्दी बनाने का काम करती है।

बेहतर डाइजेशन

डाइजेशन यानी पाचन की नजर से भी ब्लूबेरी का सेवन आपके लिए काफी फायदेमंद है। बता दें, इसे खाने से पेट दर्द, गैस, एसिडिटी और अपच को दूर करने में भी मदद मिलती है और पाचन बेहतर होता है।

ब्रेन के लिए फायदेमंद

ब्लूबेरी में शामिल एंटीऑक्सीडेंट्स ब्रेन के लिए भी काफी फायदेमंद होते हैं। कई स्टडीज में भी यह बात सामने आ चुकी है, कि इससे स्ट्रेस को कम करने में मदद मिल सकती है। इसमें पाए जाने वाले विटामिन्स, मिनरल्स और फाइटो न्यूट्रिएंट्स सेंट्रल नर्वस सिस्टम को हेल्दी रखने का काम करते हैं।

हेल्दी स्किन

ब्लूबेरी में विटामिन सी, विटामिन ए, विटामिन ई और कई शानदार एंटीऑक्सीडेंट्स का खजाना होता है, जो आपकी स्किन को हेल्दी रखने में मदद करते हैं और बढ़ती उम्र में त्वचा को हेल्दी बनाए रखने का काम करते हैं।

कांशीराम के नाम पर राहुल को घेरने की कोशिश

अवसर की उपयोगिता के आग्रह का लाभ केवल बसपा ने ही नहीं उठाया। भाजपा ने बसपा का समर्थन करके और साझा सरकार बनाकर बहुजनों के मन में एक सॉफ्ट कॉर्नर बना लिया। जबकि कांशीराम और मायावती के निशाने पर लगातार कांग्रेस रही। कांग्रेस द्वारा बाबासाहब को भारत रत्न नहीं दिए जाने का मुद्दा बार-बार उठाया गया। इससे बहुजनों के बीच कांग्रेस की नकारात्मक पुख्ता हुई।या राहुल गांधी ने मान्यवर कांशीराम का अपमान किया है? यह सवाल इसलिए पूछा जा रहा है क्योंकि इस समय एक संक्षिप्त और एडिट वीडियो सोशल मीडिया में वायरल है। इसमें राहुल गांधी कांशीराम जी के बारे में टिप्पणी कर रहे हैं। राहुल गांधी कहते हैं कि कांशीराम जी को, उनके पीछे खड़े दलितों की आवाज के जरिए समझने की आवश्यकता है। हिंदुत्ववादी कांशीराम और अंबेडकर को भगवान बना देंगे। लेकिन यह देखना चाहिए कि वे भगवान कैसे बने? राहुल गांधी यह भी कहते हैं कि दलितों की आकांक्षाओं और संघर्षों के बिना कांशीराम कुछ भी नहीं हैं। %कांशीराम कुछ भी नहीं हैं', इस आखिरी वाक्य के आधार पर राहुल गांधी को ट्रोल किया जा रहा है। विशेषकर बहुजन-दलित नौजवानों के बीच यह बात प्रसारित जा रही है कि राहुल गांधी ने कांशीराम जी का अपमान किया है। हिन्दुत्ववादियों की यह पुरानी शैली है। गांधी के सामने डॉ अंबेडकर को खड़ा करके हिन्दुत्ववादियों ने सावरकर के लिए रास्ता तैयार किया। बहुजन तबका एक समय तक हिंदुत्ववादियों की इस चाल को नहीं समझ सका। इसका नतीजा यह हुआ कि गांधी और नेहरू की आलोचना करते हुए दलित बहुजन नहीं समझ पाया कि वह सावरकर और गोलवलकर के लिए राजपथ तैयार कर रहा है। वे भूल गए कि बाबा साहब ने हिंदुत्व के विचार की बहुत आलोचना की थी। हिंदू राष्ट्र के विचार को उन्होंने दलितों के लिए सबसे बड़ी आपदा बताया था। आरएसएस को पहचानते हुए ही उन्होंने 14 अक्टूबर 1956 को नागपुर में संघ मुख्यालय के करीब हिंदू धर्म त्यागकर बौद्ध धर्म अपनाया था। दलितों के लिए यह बाबासाहब का बड़ा संदेश था।1980-90 के दशक में मान्यवर कांशीराम ने उत्तर प्रदेश में सांस्कृतिक आंदोलन के जरिए बहुजन राजनीति को सत्ता तक पहुंचने में कामयाबी हासिल की। 1995 में पहली बार बसपा ने भाजपा के बाहरी समर्थन से सरकार बनाई। मायावती देश की पहली दलित महिला मुख्यमंत्री बनीं। फिर 1997 और 2002 में भाजपा के साथ मिलकर मायावती ने सरकार बनाई। कांशीराम के राजनीतिक विमर्श में कांग्रेस की तीखी आलोचना थी। कांग्रेस केंद्र में सत्ताधारी पार्टी थी। अगड़ी जातियों से आने वाले नेताओं का कांग्रेस में प्रभुत्व था। कांशीराम का बहुजन विमर्श जातियों के वर्चस्व के खिलाफ था। अपने समर्थकों द्वारा साहब

नाम से पुकारे जाने वाले कांशीराम ने डॉ. अंबेडकर की वैचारिकी को सत्ता पाने के लक्ष्य में तब्दील कर दिया। सत्ताधारी कांग्रेस की आलोचना करने के लिए कांशीराम ने डॉ. अंबेडकर और गांधी के बीच के विमर्श का बहुजनों में प्रचार किया। पूना पैक्ट (24 सितम्बर,1932) के संबंध में गांधी को बहुजनों के बीच खलनायक बना दिया गया। इस राजनीतिक विमर्श के कारण बहुजनों में गांधी, नेहरू और कांग्रेस के प्रति गहरी वितृष्णा हो गई।मान्यवर कांशीराम के आंदोलन के समानांतर भाजपा भी अपना प्रभाव जमाने की कोशिश कर रही थी। पिछड़ों के आरक्षण के खिलाफ अगड़ों में भड़की नफरत का राजनीतिक दोहन करने के लिए भाजपा ने राम मंदिर आंदोलन शुरू किया। कांशीराम भाजपा और कांग्रेस दोनों दलों को एक ही निगाह से देखते थे। वे कहते थे कि एक नागनाथ है तो दूसरा सांपनाथ। लेकिन कांग्रेस के खिलाफ शुरू हुआ आंदोलन बहुजनों में ज्यादा गहरा था। इधर भाजपा और संघ बहुजनों की बढ़ती ताकत को देख रहे थे। कांग्रेस को कमजोर करने के लिए भाजपा ने कांशीराम का सहयोग किया। कांशीराम ने इसे एक अवसर के रूप में देखा। उनका मानना था कि बहुजनों को अवसरवादी होना चाहिए। दरअसल, उन्हें कभी आसानी से अवसर नहीं मिलते। इसलिए उन्हें कोई अवसर नहीं छोड़ना चाहिए। इस बात को भी डॉ अंबेडकर के विचार से जोड़ दिया गया। बाबा साहब कांग्रेस के वर्चस्व वाली संविधान सभा में गए। कांग्रेस सरकार में कानून मंत्री बने। लेकिन हिंदू कोड बिल और ओबीसी आरक्षण जैसे मुद्दों पर इस्तीफा देकर बाहर आ गए। बाबा साहब ने कहा था, मैं दलितों के हितों के संरक्षण के लिए संविधान सभा में आया हूं। इसका अर्थ था कि समाज हित में अपने प्रतिद्वंद्वी के प्लेटफार्म का इस्तेमाल करने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए। कांशीराम ने ऐसे ही अवसर का इस्तेमाल करते हुए लेकिन अपनी शर्तों पर भाजपा के सहयोग से तीन बार सरकार बनाई। 1997 और 2002 में सरकार बनाने के क्रमश~ 6 माह और एक साल बाद भाजपा को झटका देकर मायावती ने गठबंधन तोड़ दिया। लेकिन अवसर के इस्तेमाल की इस थ्योरी का बहुजन समाज ने सरलीकरण किया और निजी हित में बहुतेरे नेताओं ने इसका लाभ उठाया। बाबा साहब और मान्यवर का यह कहना कतई नहीं था कि विचारों से समझौता करके और समाज को ताक पर रखकर अवसर का निजी लाभ उठाया जाए।अवसर की उपयोगिता के आग्रह का लाभ केवल बसपा ने ही नहीं उठाया। भाजपा ने बसपा का समर्थन करके और साझा सरकार बनाकर बहुजनों के मन में एक सॉफ्ट कॉर्नर बना लिया। जबकि कांशीराम और मायावती के निशाने पर लगातार कांग्रेस रही। कांग्रेस द्वारा बाबासाहब को भारत रत्न नहीं दिए जाने का मुद्दा बार-बार उठाया गया। इससे बहुजनों के बीच कांग्रेस की नकारात्मक पुख्ता हुई। अप्रत्यक्ष तौर पर इसका फायदा भाजपा को मिला। बसपा जैसे ही कमजोर हुई, उसके तमाम नेता और कुछ हद तक समाज भी अवसर की तलाश में भाजपा के साथ चला गया। बसपा के समर्थकों के दिमाग के कोने में कहीं आज भी कांग्रेस के खिलाफ एक गुस्सा है; जो कई बार उन्हें अपने समय की चुनौतियों और ज्यादा गंभीर खतरों को भी नहीं देखने देता। यही कारण है कि राहुल गांधी के बयान को बिना सोचे समझे क्रिटिसाइज किया जा रहा है।

जिस तरह आरएसएस ने गांधी के सामने अंबेडकर को लाकर असली विमर्श को मोड़ दिया था और पीछे रहकर राजनीतिक फायदा उठाया था, उसी तरह भाजपा आज राहुल गांधी को कांशीराम और बहुजनों के सामने खड़ा करके हिंदुत्व के खिलाफ लड़ाई को गुमराह करना चाहती है। राहुल गांधी भाजपा और आरएसएस के निशाने पर पहले से ही रहे हैं। गांधी परिवार की छवि खराब करके अपने लिए राजनीतिक दायरा पैदा करना, हमेशा से उनका मकसद रहा है। हिन्दुत्ववादी इसमें बहुत हद तक कामयाब भी हुए हैं। लेकिन राहुल गांधी को टारगेट करने की उनकी शैली का विश्लेषण करना जरूरी है। जब तक राहुल गांधी पारंपरिक कांग्रेसी शैली में बात करते रहे, तब तक उन्हें मंदबुद्धि और पप्पू जैसे शब्दों के जरिए अपमानित किया जाता रहा। उनका मजाक उड़ाया जाता रहा। लेकिन जैसे ही राहुल गांधी ने सामाजिक न्याय के मुद्दे को तरजीह दी और आदिवासी, दलित, पिछड़ों के अधिकारों की बात की तो उन्हें टुकड़े-टुकड़े गैंग और अर्बन नक्सल का समर्थक और सहयोगी बताया जाने लगा। राहुल गांधी ने समझ लिया है कि सावरकर और गोलवलकर के हिंदुत्व का मुकाबला सामाजिक न्याय और अंबेडकरवादी मूल्यों के जरिए ही हो सकता है। भारत जोड़ो यात्रा में खुलकर यह बात दिखने लगी। राहुल गांधी ने आदिवासियों को इस धरती का पहला मालिक बताया। उनके जल, जंगल और जमीन के अधिकारों का मुद्दा उठाया।जातिगत जनगणना, आरक्षण के दायरे को बढ़ाना, निजी क्षेत्र और उच्च न्यायपालिका में आरक्षण बहाल करने जैसे मुद्दों के जरिए राहुल गांधी ने अपनी सामाजिक राजनीतिक प्रतिबद्धता स्पष्ट कर दी। इसी क्रम में वे लगातार दलित बहुजन बुद्धिजीवियों से विमर्श कर रहे हैं। इसी विमर्श का एक प्रसंग है जिसमें राहुल गांधी कहते हैं कि हमारा ध्येय समाज के किसी नायक को भगवान बनाकर पूजना नहीं है बल्कि समाज के संघर्ष और उसकी आकांक्षाओं को अभिव्यक्ति देना है। उस नायक के लक्ष्य को आगे बढ़ाना है। उन्हीं के शब्दों में, %बीजेपी लोगों की पोजिशनिंग भगवान की तरह करती है, हमारी पोजिशनिंग यह है कि ये भगवान कैसे बना, उसे भगवान किसने बनाया।' उन लोगों की मदद करना, उनको आगे बढ़ाना, उनकी बात करना कांग्रेस की पोजिशनिंग है। यानी कांग्रेस केवल प्रतीकों की राजनीति नहीं करना चाहती। वास्तव में, इस पूरे विमर्श में कहीं भी मान्यवर कांशीराम के लिए कोई अपमानजनक टिप्पणी या शब्द का प्रयोग राहुल गांधी ने नहीं किया है। दरअसल, यह भी बीजेपी-आरएसएस का ट्रैप है जिसमें बहुजन समाज का एक छोटा सा भावुक समुदाय फंस गया है।

संपादकीय

चुनाव आयोग के सामने चुनौती

दुनिया के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश कहे जाने वाले भारत में इस समय हो रहे चुनावों में लोकतंत्र की साख ही खतरे में पड़ गई है। यह संभवत~ पहली बार है जब आम चुनावों में जनता से जुड़े सारे मुद्दों के अलावा सबसे अहम मुद्दा संविधान की रक्षा का बन गया है। कांग्रेस नेता तो अब अपने प्रचार में बाकायदा संविधान की एक छोटी प्रति साथ ले जाने लगे हैं, जिसे लोगों को दिखाकर वे याद दिलाते हैं कि इस संविधान के कारण ही हमारे नागरिक अधिकार और लोकतंत्र सुरक्षित हैं। मगर भाजपा इस संविधान को ही बदलने का इरादा रखती है। प्रधानमंत्री मोदी इस आरोप को कई बार गलत ठहरा चुके हैं। लेकिन इस बार सात चरणों में हो रहे चुनावों में सत्तारुढ़ दल के साथ-साथ संवैधानिक संस्थाएं जिस तरह से काम कर रही हैं, उससे संविधान और जनाधिकार दोनों को लेकर चिंताएं उपजना स्वाभाविक है।

चुनावों के ठीक पहले इलेक्टोरल बॉन्ड के मुद्दे पर सुप्रीम कोर्ट ने आदेश दिया था कि स्टेट बैंक ऑफ इंडिया इसके आंकड़े उपलब्ध कराए। लेकिन बैंक ने इन आंकड़ों को सार्वजनिक करने में आनाकानी की। जिसके बाद सुप्रीम कोर्ट को सख्ती दिखानी पड़ी और तब जाकर इस मामले की असलियत लोगों के सामने आई। इसी तरह कोविड काल में बनाए गए पीएम केयर्स फंड की जानकारी भी सार्वजनिक करने की मांग बार-बार उठती रही है। इस पर सूचना के अधिकार के तहत जानकारी मांगी गई, तो बताया गया कि यह सूचना के अधिकार के अंतर्गत नहीं आता है। जिस कोष में लाखों-करोड़ों रूपयों का दान लिया गया, उसका कोई लेखा-जोखा सार्वजनिक नहीं किया जा रहा, यह भी आश्चर्य की बात है। इसी प्रकार ईवीएम को लेकर भी कई सवाल उठे और वीवीपैट के मिलान की याचिका जब सुप्रीम कोर्ट में दाखिल हुई, तब चुनाव आयोग ने ईवीएम पर कई ऐसे खुलासे किए, जिनकी जानकारी इससे पहले जनता को नहीं थी। और अब ऐसा ही एक और प्रकरण सामने आया है, जिसमें चुनाव आयोग ने जानकारी देने से इंकार किया है।

एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफार्म्स (एडीआऱ) और कॉमन कॉज़ नाम की दो संस्थाओं ने अदालत में एक आवेदन देकर इस बार के चुनावों में मतदान के प्रतिशत के आंकड़े सार्वजनिक करने की मांग उठाई है। लेकिन चुनाव आयोग ने इससे इंकार करते हुए कहा है कि फॉर्म 17सी के आधार पर प्रमाणित मतदान प्रतिशत डेटा साझा करने के लिए चुनाव आयोग कानूनन बाध्य नहीं है। आयोग ने अदालत में दिए अपने हलफनामे में कहा है कि वेबसाइट पर मतदान की संख्या बताने वाले फॉर्म 17सी को अपलोड करने से गड़बड़ियां हो सकती हैं। इमेज के साथ छेड़छाड़ की संभावना है। गौरतलब है कि फार्म 17 सी वह महत्वपूर्ण दस्तावेज है, जो हर मतदान केंद्र पर महत्वपूर्ण विवरण दर्ज करता है। इनमें इस्तेमाल की गई इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनों (ईवीएम) की पहचान संख्या, मतदान केंद्र को सौंपे गए पंजीकृत मतदाताओं की कुल संख्या और रजिस्टर (फॉर्म 17 ए) के अनुसार वास्तव में मतदान करने वाले मतदाताओं की कु ल संख्या शामिल होती है। इसके अतिरिक्त, यह उन मतदाताओं की संख्या को नोट करता है जिन्होंने रजिस्टर पर हस्ताक्षर करने के बाद मतदान नहीं करना चुना या नोटा किया।

यह जाहिर है कि कानून और जनता के विश्वास का हवाला देकर चुनाव आयोग हरेक बूथ पर डाले गए वोटों का आंकड़ा देने से इंकार कर रहा है, जबकि मतदान के बाद वह गिने गए वोटों का आंकड़ा बताता ही है। आयोग के इस रवैये पर वरिष्ठ वकील कपिल सिब्बल ने आश्चर्य जताते हुए लिखा है कि चुनाव आयोग ने सुप्रीम कोर्ट से कहा~ फॉर्म 17 अपलोड करने का कोई कानूनी आदेश नहीं है जो मतदान केंद्र पर डाले गए वोटों का रिकॉर्ड है। सचमुच चौंकाने वाला है! यदि गिने गए वोट अपलोड किए गए हैं तो डाले गए वोट क्यों नहीं अपलोड किए जा सकते? ऐसे आयोग पर हम कैसे भरोसा करें! इसी तरह आरटीआई कार्यकर्ता अंजलि भारद्वाज ने भी टिप्पणी की है कि ईसीआई भूल गया है कि हमारे लोकतंत्र में लोगों को सूचना का अधिकार है! वास्तव में चुनाव संचालन नियमों का नियम 93 लोगों को फॉर्म 17सी सहित चुनाव पत्रों का निरीक्षण करने और उनकी प्रतियां मांगने की अनुमति देता है।चुनाव आयोग के इंकार के बाद कानून के कई जानकार इस पर सवाल उठा रहे हैं। फिलहाल शुक्रवार को इस मामले पर सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई होगी, तब देखना होगा कि आयोग डाले गए वोटों के आंकड़े सार्वजनिक न करने के और क्या तर्क पेश करता है। लेकिन फिलहाल उसके इंकार से एक बार फिर लोकतंत्र में पारदर्शी चुनाव कराने की उसकी जिम्मेदारी पर सवालिया निशान खड़े हो रहे हैं। यह भी संभवत~ पहली बार ही हो रहा है कि किसी चुनाव में लगातार चुनाव आयोग की भूमिका को लेकर सड़क से लेकर अदालत तक बार-बार सवाल उठ रहे हैं।

निष्पक्ष और स्वतंत्र चुनाव के जरिए ही देश में लोकतंत्र सुरक्षित रखा जा सकता है। अन्यथा चुनाव कराने की जरूरत ही नहीं है। सत्तारुढ़ भाजपा तो पहले ही अगले शासनकाल की बातें करने लगी है।

केजरीवाल के खिलाफ मुकदमों के नतीजे पर टिका आप का राजनीतिक भविष्य

वर्तमान में, आप का केवल 20 निर्वाचन क्षेत्रों में महत्वपूर्ण राजनीतिक प्रभाव पड़ेगा। केजरीवाल का राष्ट्रीय प्रभाव उनकी पार्टी के प्रदर्शन पर निर्भर करता है। आप के पास वर्तमान में लोकसभा में एक और राज्य सभा में दस सीटें हैं। पार्टी ने अन्य राज्यों में अपना प्रभाव बढ़ाया है और अप्रैल 2023 में इसे राष्ट्रीय पार्टी का दर्जा दिया गया।

ल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने पिछले एक दशक में कई बाधाओं को पार किया है। फिर भी, उनका अटूट लचीलापन प्रेरणा का प्रतीक रहा है। वह और उनकी पार्टी इस वक्त शराब नीति मामले में सबसे बड़े संकट का सामना कर रहे हैं।चुनौतियों के बावजूद केजरीवाल की राजनीतिक यात्रा उनकी अदम्य कर्मठता का प्रमाण है। 49 दिनों के संक्षिप्त कार्यकाल और 2014 में दिल्ली की सभी सात लोकसभा सीटें हारने के बाद, उन्होंने 2015 के दिल्ली विधानसभा चुनावों में 70 में से 67 सीटें हासिल करके उल्लेखनीय वापसी की।पिछले महीने दिल्ली शराब नीति मामले में केजरीवाल की गिरफ्तारी, जिसमें भ्रष्टाचार और सत्ता के दुरुपयोग के आरोप शामिल हैं, ने आम आदमी पार्टी के भविष्य पर अनिश्चितता की छाया डाल दी है। क्या यह पार्टी की राह का अंत होगा, या क्या वे इस तूफान का सामना कर सकते हैं और अपनी राजनीतिक यात्रा जारी रख सकते हैं?

शीर्ष अदालत द्वारा केजरीवाल को जमानत देने का फैसला, जिससे उन्हें मौजूदा चुनावों में अपनी पार्टी के लिए प्रचार करने की अनुमति मिल सकी, केजरीवाल के समर्थकों के लिए आशा की किरण है। यह सकारात्मक विकास केजरीवाल की सफलता का मार्ग प्रशस्त करता है, खासकर अगर उन्हें जनता की सहानुभूति मिलती है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कथित उत्पीड़न और अपने सहयोगियों की कैद को उजागर करते हुए केजरीवाल खुद को दमित व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करते हैं। केजरीवाल और उनकी पार्टी जनता को यह दिखाने की कोशिश कर रही है कि जेल में उनके साथ कैसा दुर्व्यवहार किया गया और कैसे उन्हें इंसुलिन और मधुमेह की दवा देने से इनकार कर दिया गया।नवंबर 2012 में आम आदमी पार्टी(आप) की स्थापना के बाद से केजरीवाल की गिरफ्तारी पार्टी के लिए सबसे बड़ा संकट है। पार्टी को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा है, जिसमें आंतरिक संघर्ष, भ्रष्टाचार के आरोप और आम आदमी की पार्टी के रूप में अपनी छवि बनाये रखने की आवश्यकता शामिल है। पिछले कुछ वर्षों में, इंडिया अगेंस्ट करप्शन के दिनों से केजरीवाल के कई सहयोगियों को हटा दिया गया है, समेत

कई ऐसे आरोप हैं। केजरीवाल ने अपने इर्द-गिर्द केंद्रित एक व्यक्तित्व आधारित पार्टी की शुरुआत की है।आम आदमी पार्टी का सत्ता में आना काफी नाटकीय रहा है। इसकी शुरुआत 2011 में अन्ना हजारे के नेतृत्व में इंडिया अगेंस्ट करप्शन आंदोलन से हुई थी। पार्टी कुछ ही महीनों के भीतर सत्ता में आ गई, लेकिन 48 दिनों में केजरीवाल का इस्तीफा आश्चर्यजनक नहीं था। हालांकि, अगले दो विधानसभा चुनावों में उन्होंने भारी बहुमत से जीत हासिल कर वापसी की। इन घटनाओं ने पार्टी के राजनीतिक प्रक्षेप पथ औ केजरीवाल के लचीलेपन के बारे में जिज्ञासा जगा दी है। जरीवाल हमेशा महत्वाकांक्षी रहे हैं। उन्होंने खुद को प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार के रूप में पेश किया और 2014 में बनारस में मोदी के खिलाफ भी खड़े हुए लेकिन हार गये। इस साहसिक कदम से केजरीवाल और उनकी पार्टी का रुतबा काफी बढ़ गया।हाल ही में गठित इंडिया गठबंधन, जो एक महत्वपूर्ण राजनीतिक गठबंधन है और जिसका उद्देश्य भाजपा के प्रभुत्व को चुनौती देना है, में आप कांग्रेस के अलावा एक से अधिक राज्यों पर शासन करने वाली एकमात्र पार्टी के रूप में खड़ी है। यह गठबंधन उनकी पार्टी के दिल्ली और पंजाब से बाहर विस्तार का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।हालांकि, वर्तमान में, आप का केवल 20 निर्वाचन क्षेत्रों में महत्वपूर्ण राजनीतिक प्रभाव पड़ेगा। केजरीवाल का राष्ट्रीय प्रभाव उनकी पार्टी के प्रदर्शन पर निर्भर करता है। आप के पास वर्तमान में लोकसभा में एक और राज्य सभा में दस सीटें हैं। पार्टी ने अन्य राज्यों में अपना प्रभाव बढ़ाया है और अप्रैल 2023 में इसे राष्ट्रीय पार्टी का दर्जा दिया गया।

भारतीय राजनीति में आम आदमी पार्टी का सत्ता में आना दिलचस्प है। भाजपा या वामपंथी दलों के विपरीत इसका कोई ठोस वैचारिक रुख नहीं है। यह ए.आई.ए. डी.एम.के., डी.एम.के., समाजवादी पार्टी, बीजू जनता दल, या राष्ट्रीय जनता दल जैसी क्षेत्रीय या समाजवादी पृष्ठभूमि पर निर्भर नहीं है। इसके बजाय, इसने भ्रष्टाचार-विरोधी और मुफ्तखोरी संस्कृति के विकास का समर्थन करके शक्ति प्राप्त की है।

आप अब दिल्ली में कांग्रेस पार्टी के साथ लोकसभा चुनाव लड़ रही है, जबकि पंजाब में आप 13 सीटों पर स्वतंत्र रूप से चुनाव लड़ रही है। यह गठबंधन केजरीवाल की राजनीतिक यात्रा के लिए एक आशाजनक दृष्टिकोण पेश करता है। आम आदमी पार्टी सिर्फ एक राजनीतिक इकाई नहीं है। यह कांग्रेस द्वारा छोड़े गये शून्य को भरने और हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान और गुजरात जैसे राजनीतिक रूप से द्विध्रुवीय राज्यों को लक्षित करने के लिए तैयार है।मोदी ने %मोदी की गारंटी% का वायदा किया है, जबकि केजरीवाल ने दस सूत्री एजेंडे की रूपरेखा तैयार की है। इस एजेंडे में भारतीय भूमि को चीनी कब्जे से %मुक्त% कराना शामिल है यदि इंडिया ब्लॉक ने केंद्र में सरकार बनाई। दिल्ली को राज्य का दर्जा दिलाना, 24/7 बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करना और मुफ्त शिक्षा प्रदान करने के वायदे केजरीवाल के राष्ट्रीय मुद्दों पर फोकस को दर्शाते हैं।दल्ली शराब नीति मामला आम आदमी पार्टी के लिए असुविधाजनक हो गया है और भाजपा के लिए सुविधाजनक, चूंकि चुनाव चल रहे हैं। इससे यह सवाल उठता है कि क्या यह आप के लिए सड़क का अंत है? क्या गोपाल राय, सौरभ भारद्वाज, संदीप पाठक, राघव चड्ढा और आतिशी जैसे दूसरे पायदान के नेता पार्टी चला सकते हैं, या केजरीवाल अपनी सामान्य किस्मत के साथ वापसी करेंगे? जरीवाल आशावादी हैं और उम्मीद करते हैं कि भाग्य उनका साथ देगा। यह सकारात्मक दृष्टिकोण है। अब तक वह इसी दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़ते गये हैं। अगर उनकी पार्टी मौजूदा लोकसभा चुनाव में सम्मानजनक संख्या में सीटें हासिल कर लेती है तो उनकी लोकप्रियता बढ़ जायेगी। केवल मतदाता ही इस पर निर्णय ले सकते हैं और उनका निर्णय भारतीय राजनीति में केजरीवाल और आम आदमी पार्टी के भविष्य को आकार देगा।

एंक्लेट्स स्टाइल का ट्रेंडी फंडा

मैंने पायल है खनकाई..., झनक झनक पायल बाजे..., मै नाचूं बिन पायल घुघरू टूट गए तो क्या...। इसी तरह के अनेको गाने कहीं न कहीं पायल के बारे कुछ कहते हैं। कुछ साल पहले छन छन करते पायल की मधुर ध्वनि थोड़ी कम सुनाई पड़ने लगी थी लेकिन फैशन के भी हजारो रंग होते हैं। पायल ने लिटेस्ट फैशन के अनुसार अपने आप को ढाला और एकदम नए रूप में फिर से अपने जलवे दिखाने आ गई। आइए जानते हैं स्टाइलिश पायल यानीकि एंक्लेट्स के बारे में।

फैशन में अब हर जगह ग्लैमरस का तड़का लगने लगा है। ड्रेस से लेकर एक्ससीरीज तक। तो भला इसमें गहने क्यों पीछे रहें। एंक्लेट्स भी फैशन का तड़का लगाकर मार्केट में छा गई है। आपको स्टाइलिश बनाने के लिए कई तरह की एंक्लेट्स मार्केट में है। आप इन्हें अपनी पर्सनैलिटी के हिसाब से चूज कर सकती हैं। आज कल की कालेज गोविंग गर्ल्स अपने लुक को लेकर सबसे अधिक परेशान रहती हैं। वे अपने पैरों को भी ग्लैमरस और स्टाइलिश बनाने के लिए पूरी जोर आजमाइश करती रहती हैं और इसके लिए तरह- तरह के एंक्लेट्स ट्राई करती रहती हैं। मार्के ट में इनके कई डिजाइंस मौजूद हैं। बस जरूरी है सही एंक्लेट्स के चुनाव का। मार्केट में इनकी बहुत सी वैरायटी है मगर अपने पैरों के साइज और कलर को देखकर ही सही एंकलेट पसंद करें।

डिजाइन का रखें ध्यान

पैरों में एंक्लेट्स तो अच्छे लगते हैं लेकिन इसके लिए जरूरी है कि आप अपने पैरों के अनुसार ही इसका चुनाव करें। बहुत से लोग ऐसे हैं जो किसी भी डिजाइन और स्टाइल की एंकलेट्स कैरी कर लेते हैं। मार्केट में सिल्वर, गोल्ड, चेन, नग, मल्टी स्टोन और मल्टी कलर वाली एंकलेट्स हैं जो आपको परफेक्ट लुक देंगी, मगर खरीदने से पहले इस बात पर जरूर ध्यान दें कि किस तरह की एंकलेट्स आपके पैरों को सूट करेगी।

चेन दे सिंपल लुक

यदि आप चाहती हैं कि आप ऐसा एंक्लेट्स पहने जिससे आप के पैर सिंपल लुक के साथ अच्छे लगें तो इसके लिए जरूरी है कि आप चेन वाले एंक्लेट्स ट्राई करें। ये एंकलेटस बहुत ही सिंपल होते हैं। इनकी बहुत सी वैरायटी भी मिल जाती है। इसमें आप चाहें तो सिंगल लेयर से लेकर चार लेयर तक की एंकलेट्स कैरी कर सकती हैं। इसके साथ मैचिंग नेकलेस भी पहनना अच्छा रहेगा। इसे ऑफिस गोइंग गर्ल्स भी कैरी कर सकती हैं।

लेदर का एंक्लेट्स

बहुत सी लड़कियों की पर्सनैलिटी टॉम बाय जैसी होती है। ऐसी लड़कियों पर लेदर के एंक्लेट्स खूब फबते हैं। इस तरह की एंक्लेट्स कैरी करते समय यह ध्यान देना चाहिए कि ये ज्यादा चौड़ी न हो। अधिक चौड़ी होने पर लुक अच्छा नहीं लगता।

ऑरनामेंटल

क्रिस्टल के बने एंक्लेट्स बहुत ही खूबसूरत होने के साथ स्टाइलिश भी हैं। इसे पहनने के बाद आपको किसी तरह की खास एक्सेसरीज की जरूरत नहीं है। सिंपल और सोबर ड्रेस के साथ आप इसे पहन सकती हैं। ब्लैक, वाइट और ग्रे कलर के आउटफिट के साथ ये ज्यादा खूबसूरत लगती हैं।

नग वाला एंक्लेट्स

एक बार फिर से नग वाला एंक्लेट्स फैशन में लौट आया है। आप अपनी साड़ी, सूट और ड्रेस की मैचिंग को ध्यान में रखकर इनको पहन सकती हैं। इस तरह की एंक्लेट्स कुछ खास अंदाज और मल्टी मल्टी कलर में भी मौजूद है। यह सभी प्रकार के ड्रेसे पर परफेक्ट लुक देता है। वैसे इसमें डार्क कलर चलन अधिक है।

भारी नग वाला

हैवी नग वाली एंक्लेट्स आप तौर पर शादी व पार्टियों के मौके पर पहना जाता है। इसमें सिंगल से लेकर पांच लेयर तक की एंक्लेट्स आती हैं, जो आप अपनी जरूरत के हिसाब से पहन सकती हैं।

बीड्स दे सॉफ्ट लुक

इस तरह के एंकलेट्स की खासियत है कि आप इसे किसी भी ड्रेस के साथ पहन सकती हैं। ये एंकलेट्स आपको सिंपल लुक देती हैं। इन्हें पहनते समय ज्यादा मेकअप की जरूरत नहीं पड़ती। यदि बीड्स का कलर आपकी ड्रेस से मेल खाता हुआ हो तो यह आप के लुक में चार चांद लगा देगा।

पर्स पर नहीं है भारी

इन एंक्लेट्स की सबसे खास बात यह है कि इनकी कीमतें सभी लोगों की पहुंच में हैं। लोकल मार्केट में ये 20 से लेकर 50 रुपये तक है। वहीं शोरूमों में इनकी कीमतें 200 से लेकर 500 रुपये तक है।

ड्रेप्ड ड्रेस

जैसा कि इसके नाम से ही लग रहा है कि यह कोई ऐसा ड्रेस है जो लपेटा हुआ होता है। यदि आप इस ड्रेस को देखें तो ऐसा लगेगा कि किसी ने टॉवल या बेडशीट लपेट लिया हो लेकिन ऐसा नहीं है। यह एक पूरा का पूरा ड्रेस है। अपने देश में इसका चलन अभी शुरूआती दौर में हैं लेकिन विदेशों में यह खूब पसंद किया जा रहा है। रिऐलिटी शो बिग बॉस में हॉलिवुड एक्टर्स पामेला एंडरसन ने इस ड्रेस को पहन कर लोंगो को ड्रेप्ड ड्रेस से रूबरू कराया था। अधिकांश लोग तो समझ ही नहीं पाए थे कि टॉवल जैसी दिखने वाली यह ड्रेस आखिर में है क्या? क्या पॉमेला ने कोई कपड़ा लपेटा है या यह कोई खास ड्रेस है। फैशन डिजाइनर मानते हैं कि ड्रेप्ड ड्रेस फिटेड हो या लूज, अगर इसे अच्छे से कैरी करेंगी, तो वह खूब फबेगी। ड्रेप्ड ड्रेसेस को अभी तक बड़े महानगरों में ही पार्टीयों में पहने देखा गया है।

जज्बा आत्मविश्वास का

एक स्वयंसेवी संस्था ने उनको प्रशिक्षित करने की व्यवस्था की है अगली बार टैक्सी बुलाने पर अगर आसमानी रंग की कमीज, काली पैंट और जूते पहने महिलाएं टैक्सी चलाती नजर आएं, तो चौंकिएगा नहीं। भारत की राजधानी दिल्ली के एक स्वयंसेवी संस्था ने देश में पहली बार महिलाओं को टैक्सी चलाकर रोजगार कमाने का मौका दिया है।

मेगा कैब नाम की संस्था के साथ काम कर रही सभी महिलाओं ने गाड़ी चलाने की शिक्षा और तकनीकी प्रशिक्षण आईटीडीआर (इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रेनिंग, ड्राइविंग और रिसर्च) से लिया है। साथ ही साथ दुर्घटना की स्थिति में उपयोगी प्राथमिक उपचार और आत्मरक्षा के लिए कराटे भी सीख रखा है। अभी महिला टैक्सी चालकों का प्रशिक्षण काल चल रहा है, जिसमें कंपनी वाले उन्हें ढाई हजार रुपए महीना मेहनताना देते हैं और पीएफ भी काटा जाता है। जहां तक घरवालों के सहयोग और सहमति की बात है, वहां कंपनी वाले नियुक्ति के समय ही घरवालों से यह लिखित रूप से ले लेते हैं कि इससे उन्हें कोई आपत्ति नहीं।

साहस का परिचय : टैक्सी चालक अनुराधा का कहना हैं कि मैं इस नौकरी से बहुत खुश हूं। जहां पहले मैं कहीं अकेली नहीं जा पाती थी, वहीं नौकरी करने के बाद अकेली जाती भी हूं और लोगों को पहुंचाती भी हूं। इससे मेरा आत्मविश्वास दोगुना हो गया है। पति की घर चलाने में मदद भी हो जाती है और बच्चे इसलिए खुश हैं कि उनकी मम्मी पैंट-कमीज पहनती हैं और गाड़ी भी चलाती हैं।

ये हैं सुविधाएं : यह तो रही ड्राइवरों की समझ, पर अपनी महिला ड्राइवरों के लिए क्या खास इंतजाम हैं। आपको बता दें कि इन महिलाओं को हफ्ते में छः दिन काम पर आना होता हैं। ड्यूटी सुबह दस बजे से शाम सात बजे तक होती है। हर टैक्सी में वॉकी-टॉकी है, जिससे सीधी नियंत्रण कक्ष में बात की जा सकती है। उन्हें कार चलाने के अलावा आत्मरक्षा के लिए कराटे का भी प्रशिक्षण दिया गया है। गाड़ी बिगड़ने पर या टायर पंक्चर होने पर, वैसे तो यह महिलाएं खुद गाड़ी ठीक करने में सक्षम हैं, पर ज्यादा खराबी होने पर तुरंत दूसरा ड्राइवर वहां भेजा जाता है जहां गाड़ी खराब है और महिला चालक को मदद पहुंचाई जाती है।

क्या कहते हैं यात्री : महिला टैक्सी ड्राइवरों के साथ सफर कर चुकी श्रेया यादव कहती हैं, यह जानकर अच्छा लगा कि अब लड़कियां और महिलाएं भी टैक्सी चलाती हैं तथा अब से मुझे सिर्फ महिला ड्राइवर चाहिए, क्योंकि मैं उनके साथ खुद को ज्यादा सहज महसूस करती हूं। बहुत से परिवार महिला ड्राइवर इसलिए चाहते हैं, क्योंकि उनके घर में बहू और बेटियां हैं और कई इसलिए क्योंकि उन्हें लगता है कि महिलाएं पुरुषों के बजाय अच्छी गाड़ी चलाती हैं।

महिलाएं कमाती हैं ज्यादा

जमाना बदल चुका है महिलाएं हर क्षेत्र में पुरुषों से कदम से कदम मिला कर आगे बढ़ रही हैं। ब्रिटेन में हर तीसरी महिला अपने पति से अधिक धन कमाती है और इस तरह वह घर का खर्चा चलाने में अहम् भूमिका निभा रही है।

वुमेन सर्वे 2010 के अनुसार 30 प्रतिशत महिलाएं अपने पति से अधिक धन कमा रही हैं और लगभग 20 फीसदी महिलाएं ऐसी हैं, जो अपने पति के बराबर पैसा कमा रही हैं। दस परिवारों में से एक परिवार में बच्चों की देखभाल पति करता है, जबकि पत्नी नौकरी करती है। दस प्रतिशत महिलाओं ने स्वीकार किया कि इस भूमिका ने उनके रिश्तों पर तनाव डाला। कुछ का कहना था कि इसके चलते उन्हें रिश्ते तोड़ने पड़े। सर्वेक्षण के अनुसार गृहिणियों में से लगभग आधे ने खुद धन अर्जित नहीं करने को लेकर असंतोष जताया, जबकि करीब 2100 महिलाओं ने कहा कि बच्चे होने के बाद वह पूरी तरह घर में बंधे रहने से अच्छा कोई न कोई पार्ट टाइम नौकरी करना पसंद करती हैं। भारतीय महिलाएं भी अब नौकरी करने के क्षेत्र में ब्रिटेन से पीछे नहीं और वह दिन अब ज्यादा दूर नहीं, जब भारत में भी गृहिणियां धन-अर्जन में पीछे नहीं रहेंगी।

खाने की गलत आदतें बनाती हैं मधुमेह का रोगी

हेल्थ फैक्ट्स

स्वस्थ रहने के लिए मीठा और नमक कम लें

- यह मायने नहीं रखता है कि आप दिन में कितना अच्छा खाते हैं लेकिन उसे किस समय और कितनी मात्रा में खाते हैं यह मायने रखता है
- खाने की कुछ सामग्री जैसे स्वीट स्नैक, डीप फ्राइड स्नैक आदि खाना मधुमेह होने के सबसे बड़े कारण है
- हाई ग्लेसेमिक फूड जैसे-पास्ता, मैगी, कोल्ड ड्रिंक, बर्गर आदि खाने से शरीर में ब्लड शुगर बढ़ती है
- डिनर के बाद डेजर्ट का सेवन बहुत रिस्की होता है क्योंकि खाने में पहले ही शुगर मौजूद होती है और इसके बाद भी मीठा आपके ब्लड शुगर में कितना इजाफा कर देगा शायद आपको इसका अंदाजा भी नहीं हो पाएगा

हमारा शरीर एक मशीन है और मशीन में कुछ भी ज्यादा डाला जाएगा तो वह अनियंत्रित हो जाएगी जैसे खाने में नमक ज्यादा होगा तो हाई बीपी, यदि खाने में मीठा ज्यादा लेंगे तो ब्लड शुगर हो जाएगी। खाने में मिर्च-मसाले ज्यादा लेंगे तो आंतों और किडनी की प्रॉब्लम हो जाएगी। खाने में तला-भुना ज्यादा लेंगे तो दिल की बीमारी हो जाएगी। पूरे विश्व में आज मीठे की बीमारी यानी शुगर अनाप-शनाप भोजन की आदतों के चलते एक आम संकट बनती जा रही है। मल्टीनेशनल कम्पनियां, खाने को प्रिजर्व करके लोगों के सामने पेश करती हैं जिससे लोग उसके आदी हो जाते हैं और उनको मधुमेह जैसे रोग होने का रिस्क बढ़ जाता है। फास्ट फूड और जंक फूड खाने की गंदी आदतें सबसे ज्यादा यंग जेनरेशन और बच्चों में देखने को मिलती हैं। ऐसे खाद्य पदार्थों को खाने से बॉडी में केलोस्ट्रॉल बढ़ जाता है जिससे मोटापा होता है और मोटापा ही अधिकांश बीमारियों की जड़ है। यह बात साफ है कि हाई ग्लेसेमिक फूड जैसे-पास्ता, मैगी, कोल्ड ड्रिंक, बर्गर आदि खाने से शरीर में ब्लड शुगर बढ़ती है जिससे शरीर में डायबटीज हो जाती है क्योंकि बॉडी में इंसुलिन कम हो जाती है। ऐसी ही कई और भी खाने की गलत आदतें हैं जो लोगों में डायबटीज का कारण बनती है।

किन आदतों से होती है डायबटीज

ब्रेकफास्ट न करना: कई लोग सुबह नाश्ता नहीं करते या नाश्ता करने में ढिलाई बरतते हैं। नाश्ता करने से पूरे दिन शरीर को ऊर्जा मिलती है और यह सबसे हेल्दी आदत होती है। अगर आप सदैव सुबह समय पर नाश्ता करते हैं तो डायबटीज का खतरा कम हो जाता है। भूखे रहने से शरीर में शुगर लेवल बढ़ जाता है जिससे डायबटीज होने का खतरा बढ़ जाता है।

उच्च जीआई फूड खाना : फास्ट फूड और जंक फूड, उच्च जीआई फूड होते हैं। इनके सेवन से डायबटीज होने का शत-प्रतिशत खतरा रहता है क्योंकि इन्हें खाने से बॉडी में जल्दी से ग्लूकोज स्त्रवित होता है और ब्लड शुगर लेवल बढ़ जाता है।

बैड वसा का सेवन करना : हर तरीके का फैट, शरीर व स्वास्थ्य के लिए हानिकारक नहीं होता है। ऑलिव ऑयल और फिश ऑयल, शरीर को ताकत देते हैं। लेकिन फास्ट फूड या जंक फूड में अनहेल्दी फैट होते हैं जो शरीर में चर्बी को बढ़ाते हैं जो ताकत नहीं देते। इनमें जीरो फाइबर होता है।

स्नैक्स : यह मायने नहीं रखता है कि आप दिन में कितना अच्छा खाते हैं लेकिन उसे किस समय और कितनी मात्रा में खाते हैं यह मायने रखता है। इसके अलावा, खाने की कुछ सामग्री जैसे-स्वीट स्नैक, डीप फ्राइड स्नैक (जैसे समोसा) आदि खाना मधुमेह होने के सबसे बड़े कारण बनते हैं।

कोल्ड ड्रिंक : कई लोग खाने के दौरान कोल्ड ड्रिंक पीते हैं जो सबसे हानिकारक होते हैं। इससे मोटापा तो बढ़ता ही है साथ में शरीर भी खराब होता है यानी कई रोग लग जाते हैं।

फलों-सब्जियों का सेवन न करना : फलों और सब्जियों में भरपूर मात्रा में पोषक तत्व और फाइबर होते हैं जो शरीर को मजबूत बनाते हैं और ब्लड शुगर को नियंत्रित रखते हैं, इनसे पाचन क्रिया दुरुस्त रहती है। कई लोग फल-सब्जियों को नहीं खाते, इससे उनके शरीर में शुगर लेवल अंसतुलित हो जाता है।

हानिकारक है किसी भी समय खा लेना : स्वास्थ्यवर्धक खाद्य पदार्थों को खाने की आदत अच्छी होती है। वहीं हर टाइम कुछ न कुछ खाने की आदत अच्छी नहीं होती। कुछ लोगों को कभी भी और कहीं भी कुछ भी खा लेने में एतराज नहीं होता जैसे आधी रात में उठकर खाने लगना आदि। इससे पाचन क्रिया तो खराब होती ही है साथ ही शुगर लेवल बढ़ जाता है।

खाने के बाद डेजर्ट : मार्केटिंग के जर्बदस्त तरीके ने यह ट्रेंड ला दिया है कि खाने के बाद डेजर्ट जैसे आइसक्रीम, मिठाई खाई जाती है। फैक्ट यह है कि डिनर के बाद डेजर्ट का सेवन बहुत रिस्की होता है क्योंकि जो आपने खाना खाया है उसमें पहले ही शुगर मौजूद होती है और इसके बाद भी मीठा आपकी ब्लड शुगर में कितना इजाफा कर देगा शायद आपको इसका अंदाजा भी नहीं होगा।

बच्चों को एडिक्ट होने से बचाएं

लंदन। किसी भी चीज की लत हमेशा बुरी ही कहलाती है जबकि समय-समय पर किए जा वाले कार्यो में यह बात लागू नहीं होती। लंदन में हुए एक शोध में बच्चों के विभिन्न तरह एडिक्शन्स को लेकर शोध किया गया। इसमें मुख्य रूप से टीवी, मोबाइल और वीडियो गेम को शामिल किया गया। जिसमें पाया गया कि तकरीबन 84 प्रतिशत बच्चे वीडियो गेम खेल के एडिक्ट निकले, जबकि अन्य 16 प्रतिशत का आंकड़ा अन्य चीजों में व्यस्तता का निकल वह भी थोड़े-थोड़े समय के अंतराल में। इस शोध के नतीजों में पाया गया कि बच्चों के लं समय तक टेलीविजन देखने या मोबाइल पर गेम्स खेलने से उनके स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ने साथ--साथ उनमें भावनात्मक समस्याएं भी पैदा होती हैं। लंदन में हुए एक नए शोध में य चेतावनी जारी की गई है। इतना ही नहीं 7 साल की उम्र के बच्चों के इंटरनेट इस्तेमाल नियंत्रित नहीं करने पर उनका बॉडी मास इंडेक्स (बीएमआई) भी बढ़ जाता है। लड़कियों लिए यह समस्या ज्यादा गंभीर है। चार साल की बच्चियों के सप्ताहांत में वीडियो गेम्स औ कम्प्यूटर का इस्तेमाल करने से उनके छह साल के होने तक उनमें भावनात्मक समस्याएं पै होने लगती हैं। ज्यादा टीवी देखने से लड़के और लड़कियों दोनों का परिवार के साथ भावनात्म संबंध खत्म होने का जोखिम भी बढ़ जाता है।

पैरेन्ट्स थोड़ा ध्यान दें :

बच्चों के एडिक्शन को नरजअंदाज करने की आदत सबसे पहले पैरेन्ट्स को बदलना होगी सबसे पहली ड्यूटी उन्हीं की बनती है कि वे बच्चे की रोजमर्रा की आदतों पर ज्यादा से ज्या गौर करें और उन्हें किसी भी एडिक्शन से बचाने में उनकी मदद करें। अगर बच्चा टेलीविज देख रहा है या वीडियो गेम खेल रहा है तो अभिभावकों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उसकी सामग्री उनकी आयु के हिसाब से उपयुक्त है। उसे कितना समय इन चीजों में बिता चाहिए यह भी तय होना जरूरी है। तभी काफी हद तक बच्चों के व्यवहार में सुधार लाया सकता है।

यह शोध यूरोप के दो से छह साल की आयु के 3600 बच्चों पर किया गया। यह शोध 'जर्न जेएएमए पीडिएट्रिक्स' में प्रकाशित हुआ है।

टाईम पास

आज का राशिफल

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो आ): ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं। समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है। कार्यक्षेत्र में आगे बढ़ने में रुकावट का एहसास होगा। विरोधियों के सक्रिय होने की संभावना है। कारोबारी यात्रा को फिलहाल टालें। जो चल रहा है उसे सावधानीपूर्वक संभालें। शुभांक-1-3-6

वृष (इ उ ए ओ वा वी वू वे वो): परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। पर प्रपंच में ना पड़कर काम पर ध्यान दीजिए। कल का परिश्रम आज लाभ देगा। आलस्य का त्याग करें। कारोबारी काम में नवीन तालमेल और समन्वय बन जाएगा। यार-दोस्तों के साथ साझे में किए जा रहे काम में लाभ मिल जाएगा। शुभांक-3-4-5

मिथुन (का की कू घ ङ छ के को हा): जोखिम से दूर रहना ही बुद्धिमानी होगी। महत्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। कामकाज में आ रही बाधा दूर होगी। बाहरी और अंदरूनी सहयोग मिलता चला जाएगा। पर प्रपंच में ना पड़कर अपने काम पर ध्यान दीजिए। शुभांक-5-6-6

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो): लेन-देन में आ रही बाधा को दूर करने के प्रयास सफल होंगे। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे। परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। नौकरी में सावधानीपूर्वक कार्य करें। शुभांक-7-8-9

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे): अपनों का सहयोग प्राप्त होगा। पत्नी व संतान पक्ष से थोड़ी चिंता रहेगी। शारीरिक सुख के लिए व्यसनों का त्याग करें। पठन-पाठन में स्थिति कमजोर रहेगी। खान-पान में सावधानी रखें। व्यापार में प्रगति होगी। अपने अधीनस्त लोगों से कम सहयोग मिलेगा। स्त्री-संतान पक्ष का सहयोग मिलेगा। शुभांक-7-8-9

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो): रुका हुआ लाभ आज प्राप्त हो सकता है। पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे। जोखिम से दूर रहना ही बुद्धिमानी होगी। शुभ कार्यों की प्रवृत्ति बनेगी और शुभ समाचार भी मिलेंगे। किसी से कहा सुनी न हो यह ध्यान रहे। लाभकारी गतिविधियों में सक्रियता रहेगी। शुभांक-7-8-9

तुला (रा री रु रे रो ता ती तू ते): ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं। समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है। कार्यक्षेत्र में आगे बढ़ने में रुकावट का एहसास होगा। विरोधियों के सक्रिय होने की संभावना है। कारोबारी यात्रा को फिलहाल टालें। जो चल रहा है उसे सावधानीपूर्वक संभालें। शुभांक-4-7-9

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो य यी यू): विरोधियों के सक्रिय होने की संभावना है। ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं। समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है। शुभ कार्यों में अड़चनें और परिवार के बुजुर्ग-जनों से मतभेद रहेगा। किसी से वाद-विवाद अथवा कहासुनी होने का भय रहेगा। कार्य भार बढ़ेगा। शुभांक-5-7-9

धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे): कुछ आर्थिक चिंताएं भी कम होंगी। नियोजित धन से लाभ होने लगेगा। घर के सदस्य मदद करेंगे और साथ ही आर्थिक बदहाली से भी मुक्ति मिलने लगेगी। बढ़ते घाटे से कुछ राहत मिलने लगेगी। समय का सदुपयोग करें। साधन और भोग-विलास के प्रचुर अवसर होंग। शुभांक-4-7-8

मकर (भे जा जी खी खू खे खो गा गी): कुछ कार्य भी सिद्ध होंगे। व्यर्थ की भाग-दौड़ से यदि बचा ही जाए तो अच्छा है। प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी। महत्त्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा। परामर्श व परिस्थिति का सहयोग मिलेगा। शुभांक-6-8-9

कुंभ (गू गे गो सा सी सू से सो दा): कल का परिश्रम आज लाभ देगा। आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी। आगे बढ़ने के अवसर लाभकारी सिद्ध हो रहे है। कुछ आर्थिक संकोच पैदा हो सकते है। कोई प्रिय वस्तु अथवा नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होंगे। धार्मिक आस्थाएं फलीभूत होंगी। सुख-आनंद कारक समय है। शुभांक-4-7-8

मीन (दी दू थ झ ञ दे दो चा ची): लाभदायक कार्यों की चेष्टाएं प्रबल होंगी। सक्रियता से अल्प लाभ का हर्ष होगा। कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य बनाने के लिए भाग-दौड़ रहेगी। सुखद समय की अनुभूतियां प्रबल होगी। मनोविनोद बढ़ेंगे। व्ययाधिक्य का अवसर आ सकता है। कार्यों का लाभदायक परिणाम होगा। आध्यात्मिक रुचि बनेगी। शुभांक-4-6-9

हंसी के फूव्वारें

'सुधीर, आज जब मैं पढ़ा रहा था तो तुम बातें कर रहे थें. अध्यापक ने कहा.'

'नहीं सर, आपको भ्रम हो गया लगता है मैं तो नींद में कभी बाते नहीं करता हूँ.'

▯ ▯ ▯

'कल रात अंधेरे में एक चोर मेरे कमरे में घुस आया.' एक लड़की ने अपने प्रेमी को बताया.

'फिर क्या उसने कुछ चुराया ?' प्रेमी ने पूछा.

'हां, बहुत कुछ चुराकर ले गया, मैं समझी कि तुम आये हो.'

▯ ▯ ▯

मालिक(नौकर से) : रामू इस वर्ष तुम चार बार अपने दादा के मरने की छुट्टी ले चुके हो अब किस बात की छुट्टी चाहिए?

रामू: मालिक मेरी दादी की शादी है.

▯ ▯ ▯

एक महिला ने अपनी सखी को बताया, 'मेरे लिए पति की देखभाल करना मुश्किल काम नहीं, आखिर मैं अपने चार बच्चों को पाल चुकी हूँ.'

▯ ▯ ▯

रात्रि का समय था. हवलदार ने एक साइकिल सवार को बिना रोशनी लगाये आते देखा तो उसने रोका और पूछा- 'यह साइकिल तुम्हारी है?'

'जी नहीं.'

'तुम्हारा नाम'

'जी वह मेरा अपना है.'

काकुरो पहेली - 4065

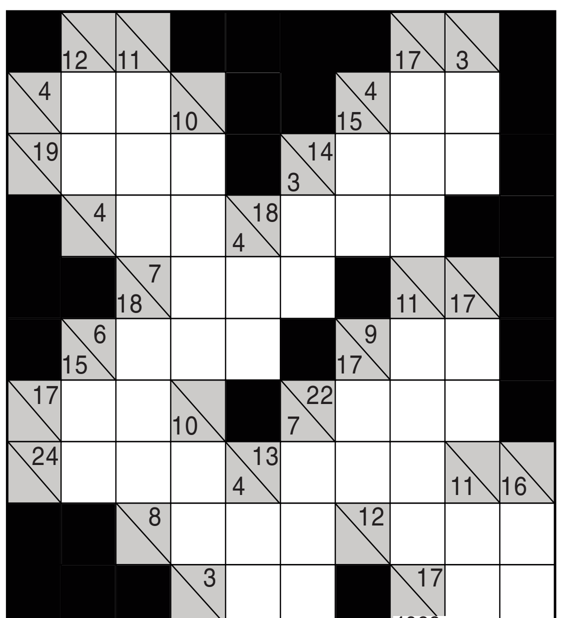

4063

खाली वर्गों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर नीचे से ऊपर व दाएं से बाएं की जोड़ हल्के रंग के आधे वर्ग की संख्या से मेल खानी चाहिए. किसी भी अंक का उस जोड़ में पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता.

उदाहरणत:

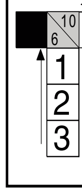

6+8+9=23
7+8+9=24
1+2+3+4+5=15
1+2+3+4+6=16

काकुरो - 342 का हल

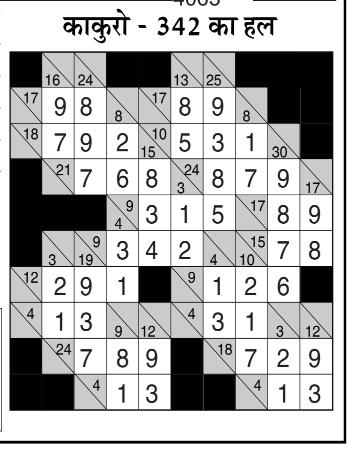

फिल्म वर्ग पहेली - 4065

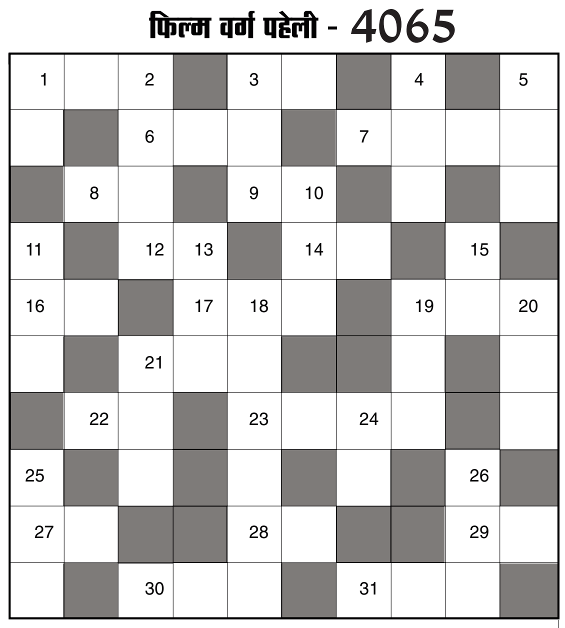

बायें से दायें:-

१. राजेश खन्ना, स्मिता की 'दुनिया में कितना गम है' गीत वाली फिल्म-३
३. बॉबी, काजोल, मीनाषा की 'दुनिया हसीनों का' गात वाली फिल्म-२
६. अनिल, मीनाक्षी की 'सौ सवालों का जवाब' गीत वाली फिल्म-३
७. 'यूं हसरतों के दाग' गात वाली प्रदीपकुमार, नर्गिस की फिल्म-४
८. अनिल, माधुरी की 'एक बात मान लो तुम' गीत वाली फिल्म-२
९. 'काली नागिन के जैसी' गीत वाली फिल्म-२
१२. राजेश खन्ना को फिल्म जगत में किस नाम से जाना जाता है?-२
१४. फिल्म 'कॉफी हाउस' में नायिका कौन थी?-२
१६. 'आजकल पाँव जमी' गीत वाली विनोद मेहरा, रेखा की फिल्म-२
१७. राजेश, ऋषि, पूनम की 'रंग चला बहार चली' गीत वाली फिल्म-३
१९. 'मेरा रंगदे बसंती' गीत वाली मनोज कुमार, प्रेम चोपड़ा की फिल्म-३
२१. जैकी, मनीषा की 'लड़की जो आए बाजाक में' गीत वाली फिल्म-३
२२. भारतीय सिनेमा की 'वीनस' मधुबाला की अंतिम फिल्म-२
२३. 'सर से सरक गई' गीत वाली गोविंदा, ऐश्वर्या की फिल्म-४
२७. अमिताभ, अमृता की 'विल यू मैरी मी' गीत वाली फिल्म-२
२८. फिल्म 'आँखें' में धर्मेन्द्र के साथ नायिका कौन थी-२
२९. 'नैनों में महबूब के' गीत वाली फिल्म-२
३०. सनी, डिम्पल की 'भूरी भूरी आँखों वाला' गीत वाली फिल्म-३
३१. 'सुनता है मेरा खुदा' गीत वाली अनिल, माधुरी की फिल्म-३

ऊपर से नीचे:-

१. 'आजा गुफाओं में' गीत वाली फिल्म-२
२. धर्मेन्द्र, नसीर, आदित्य, सोनू वालिया, पल्लवी, एकता की फिल्म-४
३. आमिरखान, रानी मुखर्जी की 'आँखों से तूने' गीत वाली फिल्म-३
४. 'गोरी कँवारी सी हसीना का' गीत वाली अक्षय, करिश्मा की फिल्म-३
५. 'बदन में चाँदनी' गीत वाली सनी देओल, मीनाक्षी की फिल्म-३
१०. ऋषिकपूर, श्रीदेवी की 'तूने बेचैन इतना ज्यादा' गीत वाली फिल्म-३
११. 'जब दिल से दिल' गीत वाली दिलीप, संजीव कुमार, वैजयंती की फिल्म-३
१३. धर्मेन्द्र, मीनाकुमारी की 'तोरा मन दर्पण' गीत वाली फिल्म-३
१५. फिल्म 'हम है राही प्यार के' में नायिका कौन थी-२
१८. 'क्या लिखूं कैसे लिखूं' गीत वाली फिल्म-२,४
१९. फिल्म 'कश्मीर की कली' में नायिका कौन थी-३
२०. जीतेंद्र, राजेश खन्ना, नंदा की 'किस लिए मैंने' गीत वाली फिल्म-१,२
२१. 'कई सदियों से' गीत वाली शत्रुघ्न, रीना राय की फिल्म-३
२४. अनिल, माधुरी की 'खुशियों का दिन आया है' गीत वाली फिल्म-२
२५. 'कोई हमदम न रहा' गीत वाली फिल्म-३
२६. सलमान, संजय, शिल्पा की 'अरे बाबा अरे बाबा' गीत वाली फिल्म-३

फिल्म वर्ग पहेली - 342

सूडोकु -4065

		2				1		
				2	5	7	3	
	9	4		6	7			2
	5		4		3			9
	8			9			7	
1			6		8		2	
6			7	4		9	5	
	4	5	8	3				
		8				6		

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते .
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु 4064 हल

9	1	6	2	3	7	4	5	8
8	2	3	4	5	9	1	7	6
4	5	7	1	6	8	3	9	2
5	6	8	7	1	2	9	3	4
1	7	4	9	8	3	2	6	5
2	3	9	5	4	6	8	1	7
7	4	1	8	9	5	6	2	3
3	8	5	6	2	1	7	4	9
6	9	2	3	7	4	5	8	1

शब्द पहेली 4065

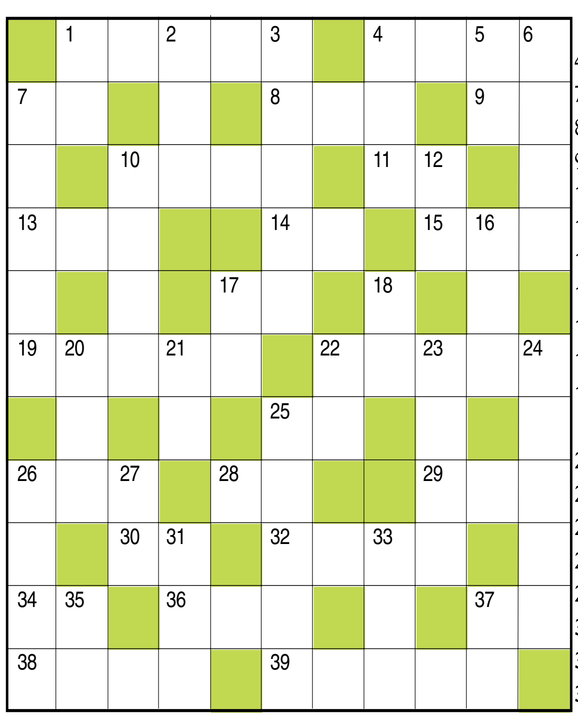

बाएँ से दाएँ

1.राजीव गांधी की पत्नी का नाम-3,2
4.उदारता,बडप्पन-4
7.भोजन,खाद्य पदार्थ-2
8.प्रहरी,रक्षा करने वाला-3
9.अपशिष्ट पदार्थ-2
10.कामदेव,चंद्रमा-4
11.नाड़ी,नस-2
13.जबरन,जबरदस्ती-3
14.वायदा,वचन-2
15.भवन,आलय-3
17.आर्ट,हुनर-2
19.ख्वाबगाह, आरामगाह, सोने का कमरा-5
22.उद्देश्यहीनता-5
25.परिणाम-2
26.अंजन,नेत्रांजन-3
28.सांझ,संध्या-2
29.अधीन-3
30.निश्चित-2
32.निष्ठावान,सत्तानिष्ठ-4
34.बेइमान,सेंधमार-2
36.दाम,मूल्य-3
37.एक छोटी सवारी गाड़ी-2
38.मुस्लिम कैलेंडर का एक महीना-4
39.अश्रु,आंसू-5

ऊपर से नीचे

1.स्वर्ण,कनक-2
2.गुजर करना-3
3.धैर्यवान-3,2
4.राशिचक्र की एक राशि-3
5.आंशिक भीगा हुआ-2
6.सामंजस्य-4
7.यायावर,बंजारा-5
10.चुनाव,वोट्ंटग-4
12.दुख,कष्ट-2
16.यज्ञ,होम-3
17.कमरा,रूम-2
18.उम्मीद,आस-2
20.जुड़वा-3
21.प्याला-2
22.हृदय,हार्ट-2
23.निकृष्टतर-4
24.बलवान,दमदार-5
25.स्वदेशवासी-5
26.आलसी,निठल्ली-4
27.बुरी आदत-2
31.भरोसा,विश्वास-3
33.आंचल,पल्लू-3
35.अंग्रेजी शराब का एक प्रकार-2
37.समय, वक्त-2

शब्द पहेली 4064 का हल

गाजियाबाद में हत्या और लूट की वारदात में वांछित आरोपी पुलिस मुठभेड़ में गिरफ्तार

एजेंसी

गाजियाबाद । गाजियाबाद पुलिस और हत्या और लूट में वांछित चल रहे एक बदमाश के बीच 25 मई की सुबह तकरीबन 4 बजे चेकिंग के दौरान मुठभेड़ हो गई। पुलिस ने बदमाश को गिरफ्तार कर लिया है। पकड़े गए बदमाश पर हत्या और लूट के कई मामले दर्ज हैं। बदमाश के पास से एक अवैध तमंचा और बिना नंबर प्लेट की एक स्कूटी बरामद हुई है। पुलिस ने बताया कि थाना क्रॉसिंग रिपब्लिक पुलिस ने 25 मई को हत्या और लूट की घटना के एक अभियुक्त को मुठभेड़ के दौरान गिरफ्तार किया है। पुलिस ने उसके कब्जे से लूट के 3400 रुपए, एक तमंचा, 3 जिंदा व 1 खोखा कारतूस 315 बोर बरामद किया है।

इसके अलावा बदमाश के पास से घटना मे इस्तेमाल हुई, बिना नम्बर प्लेट एक्टिवा स्कूटी बरामद हुई है। पुलिस के मुताबिक, 25 मई को प्रभारी निरीक्षक थाना क्रॉसिंग रिपब्लिक पुलिस बल के साथ थाना क्षेत्र में अपराध नियंत्रण के लिए सघन चेकिंग में व्यस्त थे और थाना क्षेत्र में संवेदनशील स्थानों पर चेकिंग कराई जा रही थी। वाटर प्लांट अंडरपास पर चेकिंग टीम को चुनौती देते हुए एक संदिग्ध व्यक्ति बिना नम्बर की स्कूटी एक्टिवा से तिगड़ी गोल चक्कर सर्विस रोड से तिगड़ी कट की तरफ भागने लगा। बदमाश का शक होने पर पुलिस टीम ने इसकी सूचना वायरलेस के माध्यम से थाना क्रॉसिंग रिपब्लिक व चैकिंग में मौजूद अन्य पुलिस टीमों को दी। इसके बाद उसका पीछा किया गया।

श्रीनगर में रिश्वत लेते एसएचओ गिरफ्तार

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) ने श्रीनगर में एक पुलिस अधिकारी को रिश्वत लेते हुए रंगेहाथ गिरफ्तार कर लिया। एसीबी सूत्रों ने कहा कि श्रीनगर के पंथा चौक पुलिस स्टेशन के स्टेशन हाउस ऑफिसर (एसएचओ) इंस्पेक्टर, आजम खान को एक ठेकेदार से 1.50 लाख रुपये लेते गिरफ्तार किया गया। सूत्रों ने बताया कि एसएचओ ने ठेकेदार से किसी मामले में 2.50 लाख रुपये की मांग की थी। वह पहली किस्त के रूप में ठेकेदार से 1.50 लाख रुपये ले रहा था। इसी दौरान एसीबी की टीम ने उसे दबोच लिया। उसके पास से रिश्वत की राशि बरामद कर ली गई। सूत्र ने कहा, आरोपी को गिरफ्तार कर यह पता लगाया जा रहा है कि इस मामले में और कितने लोग शामिल थे।

केन्द्रीय कारागृह का औचक निरीक्षण

जोधपुर। राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, जयपुर के एक्शन प्लान में प्रदत्त निर्देशों की पालना में व जिला विधिक सेवा प्राधिकरण अध्यक्ष एवं जिला एवं सेशन न्यायाधीश जोधपुर महानगर चन्द्र शेखर शर्मा के निर्देशानुसार जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, जोधपुर महानगर के सचिव पुखराज गहलोत द्वारा केन्द्रीय कारागृह का साप्ताहिक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान केंद्रीय कारागृह के अधीक्षक प्रदीप लखावत, जेलर तुलसीराम एवं अन्य कारागृह के कर्मचारीगण उपस्थित रहे। निरीक्षण के दौरान केंद्रीय कारागृह में स्वच्छता, साफ-सफाई की व्यवस्थाओं के साथ-साथ जेल में निरुद्ध बंदियों से वार्ता कर उनको प्रदत्त निःशुल्क विधिक सहायता के बारे में अवगत कराते हुए उनको उपलब्ध करवाए जाने वाले भोजन की गुणवत्ता, उनके स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सुविधा व उनके लिए उपलब्ध आधारभूत सुविधाओं के बारे में जानकारी प्राप्त कर आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए गए।

2024 के चुनाव को केंद्र शासित प्रदेश में एक त्योहार की तरह मनाया जा रहा-रविंदर रैना

राजौरी। जम्मू-कश्मीर भाजपा अध्यक्ष रविंदर रैना ने शनिवार को राजौरी में अपना वोट डाला और कहा कि 2024 के चुनाव को केंद्र शासित प्रदेश में एक त्योहार की तरह मनाया जा रहा है। रैना ने कहा कि भारतीय लोकतंत्र का त्योहार, लोकसभा चुनाव हो रहे हैं और पूरे जम्मू-कश्मीर में उत्साह का माहौल है। उन्होंने कहा कि 2024 के लोकसभा चुनाव की सरगर्मी जम्मू-कश्मीर में त्योहार की तरह चल रही है। श्रीनगर संसदीय सीट पर 40 फीसदी मतदान हुआ जबकि उत्तरी कश्मीर के बारामूला में 60 फीसदी मतदान हुआ और आज अनंतनाग-राजौरी संसदीय सीट पर भी सुबह से ही लोगों की लंबी कतारें लगी हुई हैं और मतदान हो रहा है। उन्होंने कहा कि यह हमारे लोकतंत्र की जीत है। उन्होंने कहा कि यह इलाका नियंत्रण रेखा के करीब है और यहां भी लोग पूरे उत्साह के साथ वोट देने आ रहे हैं। पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) प्रमुख और जम्मू-कश्मीर की पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती को नेशनल कॉन्फ्रेंस (एनसी) के उम्मीदवार मियां अल्ताफ अहमद के खिलाफ कड़ी टक्कर का सामना करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अपनी पार्टी के जफर इकबाल मन्हास भी चुनाव लड़ रहे हैं जिससे मुकाबला त्रिकोणीय हो गया है। इससे पहले चुनाव आयोग ने रसद, संचार और कनेक्टिविटी की प्राकृतिक बाधाओं के बारे में विभिन्न मुद्दों के कारण मतदान की तारीख को फिर से निर्धारित करने के लिए अभ्यावेदन प्राप्त होने के बाद अनंतनाग-राजौरी निर्वाचन क्षेत्र में मतदान की तारीख को 7 मई से संशोधित कर 25 मई कर दिया था।

सोनिया, राहुल, प्रियंका ने किया मतदान,नई दिल्ली सीट पर नहीं है कांग्रेस का उम्मीदवार

एजेंसी

नई दिल्ली । कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष सोनिया गांधी व पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी ने शनिवार सुबह नई दिल्ली सीट के एक मतदान केंद्र पर वोट डाला। मतदान के बाद राहुल गांधी ने अपनी मां सोनिया गांधी के साथ एक सेल्फी भी ली। गौरतलब है कि कांग्रेस के वरिष्ठतम नेताओं में शुमार सोनिया गांधी, राहुल गांधी व प्रियंका गांधी वाड्रा ने जिस सीट पर मतदान किया है वहां से इस बार कांग्रेस का कोई उम्मीदवार नहीं है।

आम आदमी पार्टी से हुए गठबंधन के चलते नई दिल्ली संसदीय क्षेत्र से इस बार कांग्रेस ने अपना उम्मीदवार नहीं उतारा है। यहां आम आदमी पार्टी के उम्मीदवार सोमनाथ भारती मैदान में हैं। उनके मुकाबले भारतीय जनता पार्टी की उम्मीदवार बांसुरी स्वराज हैं। ऐसे में माना जा रहा है कि सोनिया, राहुल व प्रियंका तीनों ने ही इस बार आम आदमी पार्टी को वोट किया। राहुल और सोनिया एक साथ मतदान करने पहुंचे थे। वहीं प्रियंका गांधी वाड्रा और लोकसभा चुनाव के दौरान बेरोजगारी और बढ़ती महंगाई देशभर में सबसे बड़े मुद्दे हैं।

उनके बच्चों ने भी दिल्ली में मतदान किया।

मतदान के उपरांत कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने विश्वास जताया कि लोकसभा के इन चुनावों में इंडिया गठबंधन जीतेगा। प्रियंका गांधी ने कहा कि मौजूदा

इस दौरान उन्होंने कहा कि हम अपने आपसी मतभेद अलग रखकर भारत संविधान व लोकतंत्र के लिए वोट दे रहे हैं। प्रियंका के बेटे रेहान राजीव वाड्रा ने इन चुनावों को महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि वह सभी युवाओं से संविधान बचाने और सकारात्मक बदलाव के लिए वोट करने का अनुरोध करते हैं।

लोकसभा चुनाव के छठे चरण का मतदान शनिवार सुबह 7 बजे शुरू हुआ जो शाम छह बजे तक चलेगा।

छठे चरण में दिल्ली की सभी सातों सीटों समेत 58 संसदीय क्षेत्रों में मतदान हो रहा है। 8 राज्यों/केन्द्र-शासित प्रदेशों की इन 58 सीटों पर 889 उम्मीदवार चुनाव मैदान में हैं। 58 सीटों पर हो रहे मतदान के लिए 1.14 लाख मतदान केंद्र बनाए गए हैं। दिल्ली से भाजपा के मनोज तिवारी, बांसुरी स्वराज, कमलजीत सहरावत, हर्ष मल्होत्रा, योगेंद्र चंदोलिया, रामबीर सिंह बिधुड़ी व प्रवीण खंडेलवाल चुनाव लड़ रहे हैं जबकि आम आदमी पार्टी और कांग्रेस गठबंधन की ओर से कन्हैया कुमार, जयप्रकाश अग्रवाल, महाबल मिश्रा, उदित राज, कुलदीप कुमार, सहीराम व सोमनाथ भारती उम्मीदवार हैं।

धार्मिक आधार पर आरक्षण का प्रावधान नहीं, फिर भी पिछड़े मुसलमानों को आरक्षण : केसी त्यागी

एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली शराब घोटाले मामले को लेकर सियासत गर्म है। भाजपा और उसके सहयोगी दल दिल्ली की केजरीवाल सरकार और इंडिया गठबंधन पर हमलावर हैं। इसी कड़ी में जेडीयू नेता केसी त्यागी ने बड़ा बयान दिया है। केसी त्यागी ने कहा कि दिल्ली में शराब घोटाले का मामला हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट में विचाराधीन है। केजरीवाल दिल्ली के चुने हुए मुख्यमंत्री हैं। मामला कोर्ट में है, ऐसे में इस पर कोई राजनीतिक टिप्पणी नहीं करना चाहिए।

स्वाति मालीवाल मामले में केसी त्यागी ने कहा कि पूरा मामला पुलिस के संज्ञान में है। यह दुर्भाग्यपूर्ण घटना है और इसकी जांच जारी है। सपा सांसद एसटी हसन की ओर से इंडिया गठबंधन की सरकार बनने पर मुसलमानों को आरक्षण दिये जाने के बयान पर केसी त्यागी ने कहा, धार्मिक आधार पर आरक्षण का कोई प्रावधान नहीं है। इसके बावजूद 82 प्रतिशत पिछड़े मुसलमानों को मंडल कमीशन के आधार पर आरक्षण दिया गया। चुनाव आयोग की ओर से वोटिंग प्रतिशत जारी करने हो रही देरी को लेकर केसी त्यागी ने कहा कि चुनाव आयोग की भूमिका पर सवाल खड़े हो रहे हैं, ऐसे में चुनाव आयोग को सामने आकर अपना स्टैंड क्लियर करना चाहिए।

अनंतनाग-राजौरी सीट पर वोटिंग के बीच महबूबा मुफ्ती धरने पर बैठीं

एजेंसी

अनंतनाग । पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) की अध्यक्ष और जम्मू-कश्मीर की पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती शनिवार को धरने पर बैठ गईं। उन्होंने आरोप लगाया कि वोटिंग प्रक्रिया में भागीदारी को रोकने के लिए उनकी पार्टी के कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार किया गया है।

अनंतनाग-राजौरी लोकसभा सीट से पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) की उम्मीदवार महबूबा मुफ्ती ने बिजबेहरा इलाके में श्रीनगर-जम्मू नेशनल हाईवे को जाम कर दिया और हाईवे पर ही धरने पर बैठ गईं। महबूबा मुफ्ती ने दावा किया कि उनकी पार्टी के कार्यकर्ताओं और कुछ मतदान एजेंटों को वोटिंग प्रक्रिया में हिस्सा लेने से रोकने के लिए गिरफ्तार किया गया है।

कुछ अधिकारी महबूबा मुफ्ती को धरना खत्म करने के लिए मनाने आए। तो उन्होंने उनसे पूछा, मेरी पार्टी के कार्यकर्ताओं और मतदान एजेंटों

को क्यों गिरफ्तार किया गया? क्या वोटिंग प्रक्रिया में भागीदारी ही सरकार का लक्ष्य है? उन्होंने कहा, मैं सुबह से कोई कॉल नहीं कर पाई हूं। अनंतनाग लोकसभा क्षेत्र में वोटिंग के दिन सर्विस को अचानक निलंबन करने का कोई स्पष्टीकरण नहीं है। महबूबा मुफ्ती ने चुनाव आयोग को पत्र लिखकर लोकतांत्रिक प्रक्रिया को पक्षपातपूर्ण होने से बचाने के लिए तत्काल हस्तक्षेप की मांग की है।

पोर्शे दुर्घटना - पुणे का बिल्डर विशाल अग्रवाल 14 दिन की न्यायिक हिरासत में

एजेंसी

पुणे। पुणे के बिल्डर विशाल एस. अग्रवाल को 14 दिनों की न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। अग्रवाल को नाबालिग बेटे द्वारा पोर्शे कार चलाते हुए दुर्घटना के सिलसिले में गिरफ्तार किया गया था। यह जानकारी एक अधिकारी ने दी।

अग्रवाल की दो दिन की पुलिस रिमांड समाप्त होने के बाद उन्हें मजिस्ट्रेट की अदालत में पेश किया गया। वहां से उन्हें 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। बचाव पक्ष के एक वकील ने कहा कि अग्रवाल के लिए सोमवार को ऊपरी अदालत में जमानत याचिका दायर की जाएगी। पुणे पुलिस द्वारा अग्रवाल के मामले में सबूत नष्ट करने के प्रयास से संबंधित और धाराएं जोड़ने की संभावना है। उन्होंने कथित तौर पर अपने ड्राइवर से अपने बेटे के अपराध का दोष खुद लेने के लिए कहा था। पुलिस ने गलत जानकारी देने के लिए अग्रवाल पर मामला दर्ज करने की भी योजना

बनाई है। दो महीने पहले बेंगलुरु से खरीदी गई पोर्शे कार बिना पंजीकरण नंबर के सड़कों पर चल रही थी। इसके अलावा, इसी मामले में अब तक गिरफ्तार किए गए अन्य छह लोगों को भी अदालत में सुनवाई के लिए पेश किया गया है। बिल्डर के नाबालिग बेटे को पहले ही पांच जून तक नेहरू उद्योग केंद्र के सुधार गृह में भेज दिया गया है।

इस बीच, कांग्रेस, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (सपा), सीपीआई और अन्य संगठनों ने शहर में नियमों का उल्लंघन करने वाले बार और पब के खिलाफ कार्रवाई की मांग करते हुए विरोध प्रदर्शन किया।

बेंगलुरु कैफे विस्फोट मामले में आतंकी साजिश का पूर्व दोषी गिरफ्तार

एजेंसी

बेंगलुरु। बेंगलुरु में रामेश्वरम कैफे विस्फोट मामले में चार राज्यों में बड़े पैमाने पर कार्रवाई शुरू करने के तीन दिन बाद, राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने एक और आरोपी को गिरफ्तार किया। यह लश्कर-ए-तैयबा (एलईटी) आतंकी साजिश मामले का पूर्व दोषी है।

एनआईए की ओर से जारी आधिकारिक बयान के मुताबिक, गिरफ्तार शख्स की पहचान कर्नाटक के हुबली निवासी शोएब अहमद मिर्जा (35) उर्फ छोटू के रूप में हुई। मिर्जा एक मार्च को बेंगलुरु के रामेश्वरम कैफे में हुए विस्फोट के सिलसिले में गिरफ्तार

होने वाला पांचवां आरोपी है। विस्फोट में 10 लोग घायल हो गए थे। एनआईए की जांच से पता चला है कि मिर्जा को पहले लश्कर आतंकी साजिश मामले में दोषी ठहराया गया था, और बाद में जेल से रिहा कर दिया गया था। 2018 में, उसने आरोपी अब्दुल मथीन ताहा से दोस्ती की और उसे विदेश में रहने वाले संदिग्ध ऑनलाइन हैंडलर से मिलवाया।

मिर्जा ने हैंडलर और ताहा के बीच संवाद के लिए एक ई-मेल आईडी भी प्रदान की। ताहा को 12 अप्रैल को सह-आरोपी मुसाविर हुसैन शाज़िब के साथ कोलकाता से गिरफ्तार किया गया था। एनआईए ने मामले में अब तक देश भर में 29 स्थानों पर तलाशी ली है।

धर्मार्थ ट्रस्ट महारानी यशो राज्य लक्ष्मी को उनकी पुण्य तिथि पर श्रद्धांजलि अर्पित की

एजेंसी

जम्मू। जम्मू-कश्मीर धर्मार्थ ट्रस्ट के चेयरमेन ट्रस्टी, महाराजा डॉ करण सिंह की पत्नी महारानी यशो राज्य लक्ष्मी को श्री रघुनाथ जी मंदिर, जम्मू के परिसर में कर्णेश्वर मंदिर में आयोजित एक कार्यक्रम में सम्मानजनक श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर, ट्रस्ट के अध्यक्ष ब्रिगेडियर आरएस लंगेह (सेवानिवृत्त) और अशोक कुमार (आईपीएस सेवानिवृत्त) सचिव ने कर्णेश्वर मंदिर में पूजा की और दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की। इस अवसर पर बोलते हुए ब्रिगेडियर आरएस लंगेह ने कहा कि भले ही वह दुनिया छोड़ गई हैं लेकिन उन्होंने जम्मू-कश्मीर के लोगों के दिलों में एक स्थायी जगह बना ली है। राज्य को सामंतवाद से लोकतंत्र में बदलने के दौरान महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए लोग उन्हें सदियों तक याद रखेंगे। उन्होंने अपना जीवन महिला लोगों के कल्याण के लिए समर्पित कर दिया और डोगरा, कश्मीरी और लद्दाखी संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए बहुत योगदान दिया और उनके नेक कार्य राज्य की महिला लोगों को प्रेरित करने वाली प्रेरक शक्ति बने हुए हैं। सचिव अशोक कुमार ने सामाजिक सरोकारों और सांस्कृतिक संरक्षण के प्रति महारानी यशो राज्य लक्ष्मी के समर्पण पर भी प्रकाश डाला।

उन्होंने कहा कि महारानी यशो राज्य लक्ष्मी का हमारे समाज में योगदान अतुलनीय है। महिलाओं को सशक्त बनाने और हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने के उनके प्रयासों ने हमारे समुदाय पर एक अमिट छाप छोड़ी है। उनकी विरासत सभी के लिए प्रेरणा का प्रतीक है, जो हमें सेवा के महत्व की याद दिलाती है।

प्रदेश में सभी सम्बंधित विभाग के आपसी समन्वय से हो भूजल प्रबंधन मजबूत : मुख्य सचिव

जयपुर। मुख्य सचिव सुधांश पंत ने सामुदायिक भागीदारी को प्रोत्साहित कर प्रदेश में अटल भूजल योजना का प्रभावी क्रियान्वयन के निर्देश दिए है। उन्होंने कहा कि राज्य में जल संरक्षण को जन आन्दोलन का रूप देने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि यह योजना प्रदेश में भूजल प्रबन्धन की दिशा में महत्वपूर्ण साबित हो सकती है।

पंत शासन सचिवालय में अटल भूजल योजना की राज्य अन्तर्विभागीय सञ्चालन समिति की पंचम बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। उन्होंने बैठक में योजना के नोडल विभाग एवं कार्यक्रम क्रियान्वयन एजेंसी भू जल विभाग और अन्य सहभागी विभागों से योजना की प्रगति

के बारे में जानकारी ली। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि राज्य में अटल भूजल योजना के क्रियान्वयन को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए योजना से सम्बंधित सभी विभाग आपसी समन्वय के साथ कार्य कर अधूरी परियोजनाओं को त्वरित गति से पूरा करें। उन्होंने अधिकारियों को साप्ताहिक स्तर पर योजना की समीक्षा करने के भी निर्देश दिए और कहा कि योजना के तहत दिए जाने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रमों को नियमित रूप से संचालित किया जाए।

बैठक में अतिरिक्त मुख्य सचिव, जल संसाधन विभाग, अभय कुमार, अतिरिक्त मुख्य सचिव, ऊर्जा विभाग, आलोक, प्रमुख शासन सचिव, कृषि एवं उद्यानिकी, वैभव गालरिया, शासन सचिव भूजल विभाग समित शर्मा एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे।

योगी ने गोरखनाथ मंदिर में किया दर्शन पूजन

एजेंसी

गोरखपुर। लोकसभा चुनाव के सातवें चरण के लिए ताबड़तोड़ चुनाव प्रचार में जुटे मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गोरखपुर प्रवास के दौरान शनिवार सुबह गोरखनाथ मंदिर की गोशाला में गोसेवा की। मंदिर में दर्शन-पूजन करने आए बच्चों को पास बुलाकर उन पर प्यार-दुलार लुटाता। चॉकलेट देकर और खूब पढ़ने-आगे बढ़ने का आशीर्वाद प्रदान कर उन्हें विदा किया। गोरखपुर मंडल में एक के बाद एक पांच चुनावी जनसभाओं को संबोधित करने के बाद मुख्यमंत्री एवं गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ शाम को गोरखनाथ मंदिर पहुंचे थे। मंदिर परिसर स्थित अपने आवास में रात्रि प्रवास करने के बाद शनिवार

सुबह उनकी दिनचर्या परंपरागत रही। महायोगी गुरु गोरखनाथ का दर्शन पूजन करने के बाद उन्होंने अपने ब्रह्मलीन गुरुदेव महंत अवेद्यनाथ की समाधि पर जाकर मत्था टेका और उनका आशीर्वाद लिया। तत्पश्चात हर बार की तरह वह मंदिर परिसर के भ्रमण पर निकले। भ्रमण करते हुए वह गोशाला में पहुंचे। यहां गोवंश को उनके नाम से आवाज देकर अपने पास बुलाया। उन्हें रोटी-गुड खिलाकर उनकी सेवा की। थी उन्होंने गोशाला के स्वयंसेवकों को भीषण गर्मी में गोवंश की देखभाल के लिए उठाए जाने वाले जरूरी कदमों को लेकर निर्देशित किया। गोसेवा के दौरान कई गोवंश से वह कुछ देर खेलते भी रहे। परिसर भ्रमण के दौरान मुख्यमंत्री को देखकर मंदिर में दर्शन पुजन करने बड़ी संख्या में आए श्रद्धालु उत्साहित होकर जय श्रीराम का उद्घोष करने लगे। सीएम ने हाथ उठाकर सबका अभिवादन स्वीकार किया और कुशलक्षेम पूछा। कई श्रद्धालुओं के साथ उनके बच्चे भी गुरु गोरखनाथ का दर्शन करने आए थे। सीएम योगी ने बच्चों को अपने पास बुला लिया, सबके माथे पर हाथ फेरकर प्यार-दुलार और आशीर्वाद देने लगे। उन्होंने बच्चों से काफी आत्मीयता से बात की, हंसी ठिठोली भी की। फिर सभी को चॉकलेट गिफ्ट किया।

12वीं में कम नंबर आने पर दो लड़कियों ने की आत्महत्या

एजेंसी

मुंबई। मीरा-भाईंदर वसई विरार पुलिस आयुक्तालय क्षेत्र के अलग-अलग पुलिस स्टेशन क्षेत्र में दो लड़कियों ने फाँसी लगाकर आत्महत्या किये जाने की घटना सामने आई है। दोनों मामल में विरार और पेल्हार पुलिस स्टेशन ने सीआरपी 174 के तहत अपराध पंजीकरण कर आगे की विवेचना में जुट गई है। मिली जानकारी के अनुसार,पेल्हार पुलिस स्टेशन अंतर्गत रिया श्यामरथी यादव (18),संतोष भुवन नालासोपारा पूर्व में रहती थी।बताया जाता है कि,रिया को 12वीं में सिर्फ 54 फीसदी मार्क्स आए। इसी कारण उसने 22 मई को घर की छत के अटारी के लोहे के एंगल पर साड़ी से फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। दुसरी घटना में प्रियंका विजयशंकर झा (18),निवासी-फुलपाड़ा रोड, विरार पूर्व में रहती थी। बताया जाता है कि,प्रियंका को 12वीं कक्षा में 41.50 प्रतिशत अंक मिले थे। प्रियंका घर में डिप्रेशन में रहती थी।जिसके चलते उसने 22 मई को घर की रसोई में फांसी लगा ली। पुलिस दोनो मामलो की जांच में जुटी है।

सरिया फैक्ट्री में लगी आग, चपेट में आकर दो मजूदरों की मौत, पांच घायल

एजेंसी

अलीगढ़। जनपद के थाना हरदुआगंज क्षेत्र में स्थित एक सरिया फैक्ट्री में बीती रात आग लग गई। आग ने फैक्ट्री को पूरी तरह से अपनी चपेट में ले लिया और वहां काम करने वाले कई मजदूर फंस गए। आग की सूचना पर पुलिस, फायर ब्रिगेड कर्मी मौके पर पहुंचे और राहत व रेस्क्यू आपरेशन चलाकर पांच घंटे की मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया।

आग में फंसे पांच लोगों को झुलसी हालत में जे.एन. मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया है। आग की चपेट में आने से दो मजदूरों की मौत हो गई, जबकि पांच मजदूर गंभीर रूप से झुलस गए। घायलों को उपचार अस्पताल में जारी है। अस्पताल में जिनका उपचार जारी है उनमें हरदुआगंज निवासी हरीशबाबू, हेल्पर सुमित सोलंकी, पप्पू पाल, क्रेन चालक धर्मेंद्र, आपरेटर एटा चुंगी निवासी कालीचरण हैं। जबकि जवां क्षेत्र के सुनामई रायपुर निवासी सुभाष चौहान व हरदुआगंज क्षेत्र के भटौला निवासी सतीश ठाकुर की मृत्यु हो गई।

जिलाधिकारी विशाख जी

अय्यर और वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक संजीव सुमन ने थाना हरदुआगंज क्षेत्रांतर्गत फैक्ट्री में आग लगने की सूचना पर तत्काल पुलिस एवं प्रशासनिक अधिकारियों, फायर सर्विस टीमों द्वारा मौके पर पहुंचकर रेस्क्यू एवं राहत बचाव कार्य किया गया।

डीएम विशाख जी अय्यर ने बताया कि मूलरूप से आगरा के लोहामंडी के रहने वाले हाल पता मालिक मैरिस रोड स्थित दुर्गाबाड़ी निवासी बाबूलाल जैन कि हरदुआगंज इलाके में स्थित सरिया फैक्ट्री में आग लगी थी। आग को पूर्ण रूप से बुझा दिया गया है। आग की चपेट में आए पांच घायल लोगों को उपचार हेतु जे.एन.मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया है।

वहीं दो लोगों की मौत हो गई। दोनों मृतकों के शव को पोस्टमार्टम हेतु भेजकर आवश्यक कार्यवाही की गई। आग के कारणों की जांच हेतु टीम लगाई गई है। मौके पर शांति है। डीएम व एसएसपी ने मेडिकल कॉलेज पहुंचकर घायलों को समुचित उपचार हेतु संबधित को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए।

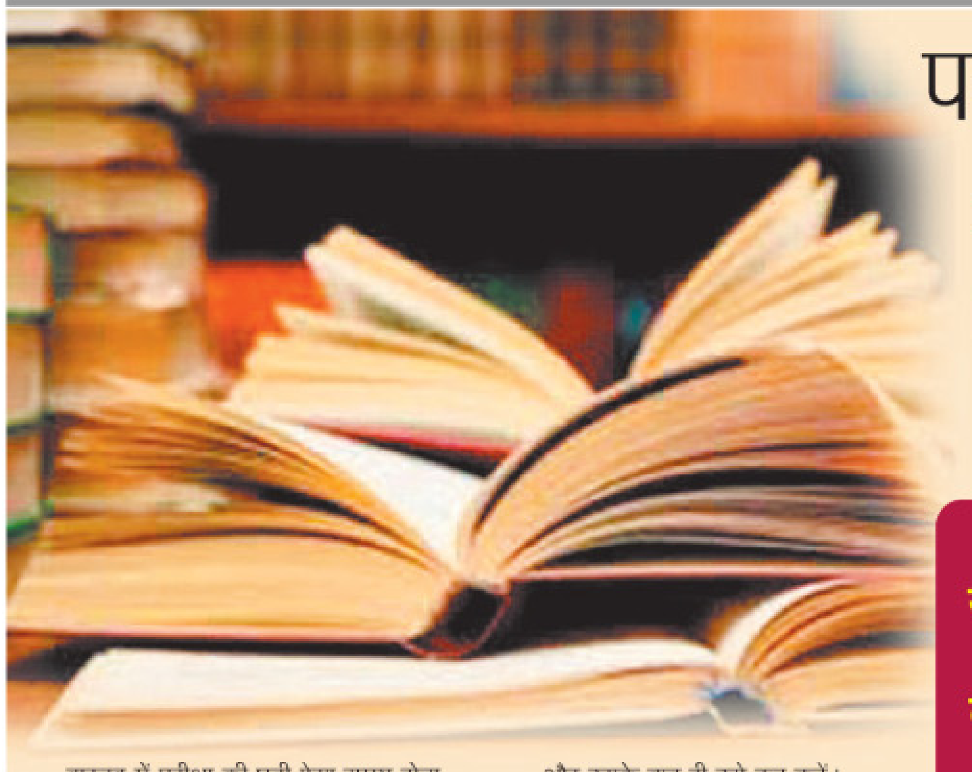

परीक्षा में सफलता पाने का मूल मंत्र

यदि तुम इस बार क्लास में फर्स्ट रैंक पर नहीं आई, तो याद रखना कि तुम्हारे सारे गिफ्ट्स कैंसल..., गोवा का ट्रिप तो कैंसल ही समझना यदि तुमने टॉप नहीं किया..., देखो बेटा कम नंबर लाकर हमारी नाक मत कटवा देना, यदि 90 प्रतिशत नहीं आए तो मनपसंद कालेज में एडमिशन नहीं मिलेगा..., ये सब एग्जाम से पहले हर पेरैंट्स को कहते हुए सुना जा सकता है, जो बच्चों में एग्जाम की टैंशन दोगुना कर देते हैं।

वास्तव में परीक्षा की घड़ी ऐसा समय होता है, जब बच्चे हों या बड़े हर कोई घबरा जाता है। छोटे बच्चों के लिए परीक्षा किसी हौव्वे से कम नहीं होती। एक ओर पेरैंट्स की उनसे अपेक्षाएं और दूसरी ओर उनका चंचल मन, दोनों उनके लिए दुविधा का कारण बन जाते हैं। परीक्षा में जहां तनाव के कारण बच्चों का पढ़ाई में मन नहीं लगता, वहीं दूसरी ओर बच्चों के लिए परीक्षा में अच्छे अंक लाना भी मजबूरी बन जाती है।

सफलता का मूल मंत्र

1. सबसे पहले पढ़ाई करने के लिए एक टाइम टेबल बनाएं और उसी के अनुसार अपनी पढ़ाई करें।
2. पढ़ाई करते वक्त एकाग्रता होनी बहुत जरूरी होती है। इसके लिए सुबह जल्दी उठ कर ध्यान करें, जिससे आपकी एकाग्रता बनी रहे।
3. हर रोज कोई टैस्ट पेपर बना कर एक निर्धारित समय सीमा में उसको हल करने का प्रयास करें। उसके बाद अपनी उत्तर पुस्तिका को जांच कर अपना मूल्यांकन स्वयं करें।
4. लगातार घंटों बैठ कर पढ़ाई करने से बेहतर है कुछ समय एकाग्रचित्त होकर पढ़ाई की जाए।
5. पढ़ाई के बीच-बीच में दो-तीन घंटे बाद एक ब्रेक अवश्य लें।
6. देर रात तक पढ़ने की अपेक्षा सुबह जल्दी उठ कर पढ़ाई करें।
7. आप चाहें तो अपने दोस्तों के साथ बैठ कर भी पढ़ाई कर सकते हैं।
8. पढ़ाई के दौरान और परीक्षा के लिए जाते समय कभी भी ऐसे नकारात्मक विचार मन में न आने दें कि जो पेपर में आएगा वह हल कर पाऊंगा या नहीं।
9. पूरे आत्मविश्वास के साथ पेपर देने जाएं। इससे पेपर हल करने में काफी मदद मिलेगी।
10. हमेशा यह सोचें कि मेहनत करके आप भी अव्वल आ सकते हैं।
11. परीक्षा में सबसे पहले पूरा प्रश्नपत्र पढ़ें और उसके बाद ही उसे हल करें। हड़बड़ी में प्रश्नपत्र हल करने की भूल न करें।
12. जिस प्रश्न को हल कर रहे हैं, उस पर पूरी तरह ध्यान केंद्रित रखें। इस दौरान अन्य प्रश्नों के बारे में विचार न करें, परंतु समय का ध्यान जरूर रखें।

न बनाएं दबाव

अपने बच्चे की क्षमता, रुचियों, इच्छा और क्लास में उसकी पोजीशन जानने की पेरैंट्स की कोई इच्छा नहीं रहती तथा बच्चे पर हर संभव तरीके से दबाव डाला जाता है, जिसके परिणामस्वरूप बच्चा बीमार भी हो सकता है तथा फेल होने पर घातक कदम तक उठा लेता है। अतः बच्चे को बिना किसी दबाव के इम्तिहान देने देना ही उसे तनाव मुक्त बनाता है।

उस पर कभी ज्यादा अंक लाने या किसी अन्य बच्चे जैसा बनने का दबाव न डालें। हर बच्चा अपने आप में विलक्षण होता है, बस उसे पहचानने की कोशिश करें। उसे आपके विवेकपूर्ण मार्गदर्शन की आवश्यकता है, इसलिए उसकी असफलताओं पर उसे धिक्कारें नहीं, बल्कि विषम परिस्थितियों में उसे संभले रहने की शिक्षा दें।

प्रेरित करें

हर बच्चे की बुद्धि, योग्यता और दक्षता भिन्न-भिन्न होती है, इसलिए तुलना विपरीत परिणाम सामने ला सकती है। किसी बच्चे पर अधिक अंक लाने के दबाव का परिणाम अक्सर उल्टा होता है। अपने बच्चे को परीक्षा के लिए अधिक से अधिक तैयारी करने के लिए प्रेरित करना तो अच्छी बात है, परंतु उसके लिए लक्ष्य निर्धारित कर प्राप्त करने का दबाव बनाना गलत है।

इससे वह प्रेरित होने की अपेक्षा कुंठित ज्यादा होता है। यदि बच्चा पेरैंट्स की इच्छानुसार परिणाम नहीं ला पाता तो उसे प्रताड़ित न करें। इस बात का विश्वास रखें कि हर बच्चा अपने पेरैंट्स की अपेक्षाओं पर हमेशा खरा उतरने का प्रयास करता है।

बच्चे का संबल बनें

जब वह ऐसा नहीं कर पाता तो वह खुद ही बहुत निराशा, हताशा और आत्मग्लानि महसूस करता है। इस नाजुक समय में बच्चे को पेरैंट्स से संबल की जरूरत होती है। ऐसी स्थिति में बच्चे को अपमानित करने से बचें, क्योंकि यह वह संवेदनशील स्थिति होती है कि बच्चा आत्महत्या जैसे घातक कदम तक उठा सकता है।

बदलें दृष्टिकोण

यदि आशानुरूप परिणाम नहीं आए, तो उसे धीरज बंधाएं और समझाएं कि कोई एक परीक्षा उनके लिए उससे महत्वपूर्ण नहीं है। अभी जीवन बहुत बड़ा है और उसे खुद को सिद्ध करने के अनेक मौके मिलेंगे। अभिभावकों का यह दृष्टिकोण बच्चे को अच्छा प्रदर्शन करने को प्रेरित करेगा।

रखें ध्यान

1. हर बच्चा किसी विशेष प्रतिभा के साथ पैदा होता है। इस बात को समझें व बच्चे को भी समझाएं।
2. अपने बच्चे को कामयाब नहीं, काबिल बनने के लिए पढ़ने को कहें।
3. उसे अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने का साधन मत समझें।
4. उसकी रुचियों और आदतों को समझते हुए उसे समझने का प्रयास करें तथा उसी के अनुरूप करियर चयन में उसका साथ दें।
5. किसी बात को उस पर थोपें नहीं, बल्कि उसे सिर्फ सुझाव दें।

असफलता के बीच से निकलती है सफलता

किसी ने सच कहा है कि असफलता के बीच से ही सफलता का रास्ता निकलता है। यह अलग बात है कि हम असफलता के बाद ही इतना परेशान हो जाते हैं कि अगली बार कुछ भी पाने की कोशिश नहीं करते हैं। जिसके कारण हमारी सफलता का दौर शुरू होने से पहले ही बाधित हो जाता है। खास बात तो यह है कि इसी भीड़ से कुछ लोग अपने आपको हतोत्साहित नहीं करते बल्कि असफलता के बीच से ही सफलता के नए-नए आयाम ढूंढ लेते हैं। जो इस आयाम के सहार लेकर कुछ नया करने का प्रयास करते रहते हैं वे निसंदेह एक दिन कुछ खास कर जाते हैं जिसके कारण उनकी पहचान देश में ही नहीं बल्कि विदेश में भी नहीं, इतिहास के पन्नों में सुनहरे अक्षरों में सदा के लिए लिख दिए जाते हैं। हम यहां आगे बढ़ने से पहले बल्ब के आविष्कारक थामस एडिसन की एक छोटी सी घटना पर प्रकाश डालना चाहूंगा। गौर करने की बात तो यह है कि एक बार जब थामस ने बल्ब का आविष्कार किया तो लोगों ने उनसे प्रश्न किया कि-आप का प्रयोग करीब दो हजार बार फेल होने के बाद आप को अब जाकर सफलता मिली है। इसके जवाब में एडिसन ने कहा कि आपकी सोच गलत है क्योंकि मैं मेरा प्रयोग दो हजार बार फेल नहीं हुआ, बल्कि बल्ब का आविष्कार का प्रयोग दो हजार प्रयोग के बाद पूरा हुआ। इस वाक्य से बहुत ही सकारात्मक सोच की अनुभूति होती है। अगर हमारे अंदर इस तरह की सोच होगी तो हमारे बीच से हजारों की संख्या में थामस एडिसन और न्यूटन जैसे सकारात्मक और सफल व्यक्तियों का आगाज होता रहेगा।

सफल होना हर किसी के जीवन का लक्ष्य होता है। सभी लोग सफल होना चाहते हैं और उसके लिए कोशिश भी करते हैं। जिसके लिए हम अपनी लाइफ का अच्छा खासा समय उसे सजाने में लगा देते हैं। यह अलग बात है कि हमारी सफलता का अनुपात कुछ समय ज्यादा तो कुछ समय कम होता है। कुछ लोगों को सफलता ज्यादा मिलती है तो कुछ लोगों को सफलता देर से मिलती है। इसके पीछे सभी के विचार भी अलग होते हैं। इसके लिए सबके विचार भी अलग-अलग होते हैं।

सफलता का मंत्र-

हमेशा लक्ष्य ज्यादा से ज्यादा तय करें। सबसे बड़ी बात तो यह है कि अगर हम सौ प्रतिशत सफलता का लक्ष्य बनाएंगे तो कुछ हद तक तो सफलता जरूर मिलेगी। अगर हमें पूरी सफलता नहीं मिलेगी तो भी हम कुछ हद तक तो सफलता पा ही जाएंगे। सफलता के लिए जरूरी है कि हमारे अंदर आत्मविश्वास के साथ आत्मज्ञान और संयम भी हो। हमेशा सकारात्मक सोच रखे और नकारात्मक सोच को दरकिनार कर दें। हमें हमेशा अपने लक्ष्य को याद रखना चाहिए। लक्ष्य के अनुसार ही काम करना चाहिए। जहां तक संभव हो अपने आपको भ्रांतियों से बचाकर ही रखें और अपने को समय के अनुसार ही ढालें। सफलता की सभी कहानियां उसके असफलता से ही निकलती हैं। आज में जीने वाला व्यक्ति सदा, खुशहाल भविष्य का भागीदारी होता है। यहां हमारा यह बिल्कुल भी नहीं कहना है कि आज को आप पूरी तरह ऐश में बीता दें, यानी बर्बाद कर दें तो आप का भविष्य उज्ज्वल है। यहां आज में जीने का तात्पर्य बहुत ही सामान्य है कि आप आज में जीए और भविष्य के लिए तैयारियां करें, उदाहरण के तौर पर अगर हम परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं तो हमें वर्तमान में जी कर यानी पूरी तरह से अटेंटिव होकर अपनी पढ़ाई करनी चाहिए। इस दौरान उसे न तो नौकरी के बारे में सोचना चाहिए और न ही उसे परीक्षा के परिणाम के बारे में सोचना चाहिए। अगर वह स्टूडेंट, विभिन्न तरह के परिणामों यानी सवालों के घेरे में पड़ जाएगा तो वह वर्तमान दौर की जरुरत पढ़ाई नहीं कर पाएगा। फिर न तो परीक्षा का रिजल्ट आएगा और नही अच्छी नौकरी की उम्मीद की जा सकती है। हमें कभी भी शॉट कट फार्मूला नहीं अपनाना चाहिए। गौर करने की बात तो यह है कि शॉटकट हमेशा छोटा होता है और वह असफलता को आमंत्रित करता है। अगर गलती से सफलता मिल भी जाती है तो वह ज्यादा दिनों तक नहीं टिकती है क्योंकि वह भी शॉट कट से निकलती है तो वह भी शॉट होती है। हमे जिंदगी में फूल-प्रूफ प्लान बनाना चाहिए ताकि सफलता में कोई भी संदेह न रहे। सबसे अहम और जरूरी बात यह है कि हर किसी को अपने अंदर आत्मविश्वास और भरोसा जरूर रखना चाहिए। क्योंकि आत्मविश्वास होने पर बड़ी से बड़ी चुनौतियां बड़े ही आसानी से प्राप्त की जा सकती है। सफलता का एक अन्य जरूरी सूत्र है कि हम अपने आपको आत्मसंतुलित रखें यानी कि अपने को नियमों के अनुसार बाधकर चले। जिससे सफलता जरूर मिलती है। अपने आपको सदा इधर-उधर की बातों से दूर रखें जहां तक संभव हो जितना जरूरी हो वहीं तक लोगों से बात करे। लोगों को सदा इंटरटेन करने के बारे में न सोचे। अगर आपको लगे कि इसती संगति आपको परेशान यानी असफलता की तरफ ले जाती है तो आपको इसका छोडने में देरी नही करनी चाहिए। इसी संदर्भ में किसी जानकार का वक्तव्य हम व्यक्त करना चाहेंगे कि कुसंगति से अच्छा है कि हम बिना संगति के रहें।

गौर करने की बात तो यह है कि सफलता से सदा आत्मसंतुष्टि होती है जिसका स्वाद तो बस वही समझ सकता है कि जिसने सच्चे अर्थों में सफलता प्राप्त की हो यानी जिसने अपनी लगन और मेहनत से तैयारी की हो और उसे उसी अनुपात में सफलता मिली हो। सफलता के बाद हमें नेम, फेम के साथ एक सुकून मिलता है जो बड़ा ही आरामदायक और आनंददायक होता है। लेकिन इन सब के बावजूद व्यक्ति को कभी यह नहीं भूलना चाहिए कि उसकी शुरूआत कहा से हुई थी।

स्वयं को तरक्की की राह पर परखें

महाभारत का युद्ध कहीं बाहर नहीं, हमारे मन में ही चलता है। मन में अच्छे और बुरे विचारों की लड़ाई ही महाभारत है। यहां हमारा मन अर्जुन है और विवेक रूपी चेतना कृष्ण।

युद्ध के दौरान जब अर्जुन अपने सभी सगे-संबंधियों, गुरुओं आदि को सामने देखते हैं तो उनके मन में मोह पैदा हो जाता है। उन्हें लगता है कि ये सब तो मेरे अपने हैं, मैं इनको कैसे मार सकता हूं। इससे तो अच्छा है कि मैं युद्ध ही न करूं। ऐसी बातें सोच कर दुखी अर्जुन भगवान कृष्ण की शरण में बैठ गए।

तब भगवान कृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया। कहा, 'हे अर्जुन, जड़ मत बनो। यह तुम्हारे चरित्र के अनुरूप नहीं है। हृदय की तुच्छ दुर्बलता को त्यागकर युद्ध के लिए खड़े हो जाओ।'

कई बार व्यक्ति को किसी काम को करने से उसका दुर्बल मन डराता है। इस वजह से वह आगे नहीं बढ़ पाता मगर याद रखना चाहिए कि जीवन में तरक्की दुर्बलता से नहीं बल्कि मजबूत इरादों से मिलती है। दिनचर्या के हर काम को युद्ध की तरह समझना चाहिए और उसको उत्साह के साथ पूरा करना चाहिए। मन को कभी कमजोर नहीं पड़ने देना चाहिए। मन डराएगा लेकिन हमें डरना नहीं है। जीवन आगे बढ़ने के लिए है, डर कर या निराश होकर बैठ जाने के लिए नहीं।

कैसे प्रेरित करें व्यक्ति को उन्नति व प्रगति की तरफ

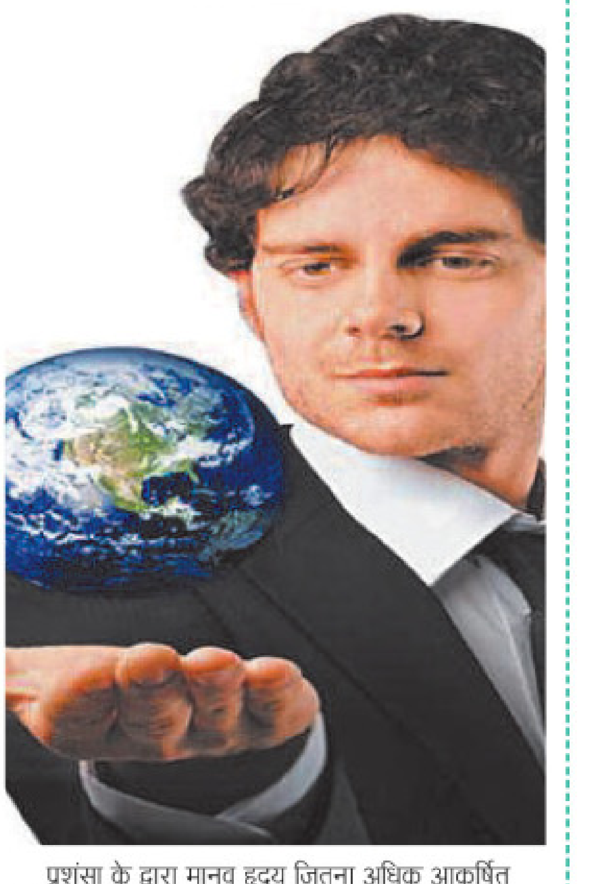

प्रशंसा के द्वारा मानव हृदय जितना अधिक आकर्षित और आंदोलित होता है, उतना और किसी प्रकार नहीं होता। प्रशंसा, झूठी चापलूसी और चाटुकारिता से सर्वथा भिन्न है। सभी चाहते हैं कि हमारे गुणों को दूसरे भी परखें,सम्मान करें। प्रशंसा-प्रोत्साहन द्वारा अनेक व्यक्तियों को ऊंचा उठाने, आगे बढ़ाने में सहायक बनने का सत्प्रयोजन पूरा किया जा सकता है। इसका जादू सभी पर प्रभाव डालता है।

हो सकता है कि कोई क्रियाशील व्यक्ति आपकी प्रशंसा-प्रोत्साहन पाकर आभावों-प्रतिकूलताओं के बीच भी आगे बढ़ने का साहस नए सिरे से जुटा ले और उन्नति के प्रकाशपूर्ण पथ पर चलता हुआ, एक दिन ऊंची चोटी पर जा पहुंचे। इस महान कर्म-साधना में आप भी अनायास ही पुण्य के भागीदार बन बैठेंगे।

अनेक ऐसे लोग जो व्यक्तिगत रूप से उन्नतिशील होते हैं और जिनमें योग्यता के अंकुर विद्यमान होते हैं, समीपस्थ लोगों की झिड़क, तिरस्कार, उपेक्षा के कारण दब जाते हैं। उनका मन मर जाता है और वे उसी को अपनी नियति मान बैठते हैं। उनके गुणों को परखकर प्रशंसा-प्रोत्साहन के दो शब्द उनके कानों में डालने की कंजूसी न की जाए, तो इन्हीं थोड़े शब्दों का रस ही उनके अन्त:करण को ऊंचे स्तर की तृप्ति देता है, जिससे उनकी सारी थकान मिट जाती है, स्फूर्ति और उमंग उमड़ पड़ती है।

उन्नति के अवरुद्ध स्रोत खुल जाते हैं, अविकसित सत्प्रवृत्तियां प्रस्फुटित हो जाती हैं, छिपी योग्यताएं जाग्रत हो जाती हैं और निराशा के अंधकार में उन्हें पुन: आशा का दीपक जगमगाता दृष्टिगोचर होने लगता है। प्रशंसा के उपरांत यह परामर्श भी दिया जा सकता है कि उसमें जो थोड़ा-बहुत दोष-दुर्गुण हैं उन्हें किस प्रकार छोड़ें, अधिक प्रतिभावान बनें। यदि आप दूसरों के मुरझाए हृदयों को सींचने का, कानों की राह आत्माओं को अमृत पिलाने का धर्म-कार्य करते हैं, तो परोपकारी मेघों जैसे श्रेय के भागी हैं।

मुक्केबाजी विश्व क्वालीफायरः सिवाच ने मुकुका को हराकर भारत को विजयी शुरुआत दिलाई

एजेंसी

बैंकॉक। राष्ट्रीय चैंपियन सचिन सिवाच (57 किग्रा) ने यहां पेरिस 2024 ओलंपिक के लिए दूसरे मुक्केबाजी विश्व क्वालीफायर के शुरुआती दौर में न्यूजीलैंड के एलेक्स मुकुका पर प्रभावशाली जीत दर्ज की। स्ट्रैंड्जा मेमोरियल के स्वर्ण पदक विजेता सिवाच ने पूरे मुकाबले के दौरान अपने प्रतिद्वंद्वी पर दबाव बनाए रखा और जजों के सर्वसम्मत 5-0 के फैसले से जीत दर्ज की। सचिन पहले ही राउंड से आक्रामक हो गए थे और मुकाबले पर नियंत्रण कर लिया था। पहले दो राउंड आराम से जीतने के बाद सचिन ने अपने प्रतिद्वंद्वी वापसी का कोई मौका नहीं दिया और मैच जल्द ही समाप्त कर दिया। भारत ने दूसरे विश्व क्वालीफायर में सात पुरुष और तीन महिला मुक्केबाजों को मैदान में उतारा है। सभी मुक्केबाजों को पेरिस ओलंपिक के लिए अपनी बर्थ बुक करने का मौका पाने के लिए कम से कम सेमीफाइनल में जगह बनानी होगी। मार्च में पिछले विश्व क्वालीफायर में भारतीय मुक्केबाजों का प्रदर्शन निराशाजनक था और केवल 2023 विश्व चैम्पियनशिप के कांस्य पदक विजेता निशांत देव ही शुरुआती दौर से आगे बढ़ पाये थे। अब तक निकहत जरीन (50 किग्रा), प्रीति पवार (54 किग्रा) और लवलीना बोरगोहेन (75 किग्रा) ने पेरिस में अपना स्थान सुरक्षित किया है।

मलेशिया मास्टर्स बैडमिंटन टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में पहुंची पीवी सिंधु

कुआलालम्पुर। डबल ओलंपिक पदक विजेता पी.वी. सिंधु ने मलेशिया मास्टर्स बैडमिंटन टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में जगह बना ली है। सिंधु ने यहां खेले गए क्वार्टरफाइनल मुकाबले में शीर्ष वरीयता प्राप्त चीन की हान यू को शिकस्त दी। दुनिया की 15वें नंबर की खिलाड़ी सिंधु ने 55 मिनट तक चले क्वार्टरफाइनल मुकाबले में हान को 21-13, 14-21, 21-12 से हराकर सेमीफाइनल में प्रवेश किया। पूर्व विश्व चैंपियन सिंधु अब अंतिम चार चरण में इंडोनेशिया की पुत्रि कुसुमा वर्दानी और थाईलैंड की बुसानन ओंगबामरुंगफान के बीच होने वाले मैच की विजेता से भिड़ेंगी। अन्य परिणामों में, अश्मिता चालिहा का शानदार प्रदर्शन क्वार्टर फाइनल में चीन की छठी वरीयता प्राप्त झांग यी मैन से 10-21, 15-21 से हार के साथ समाप्त हुआ।

तीरंदाजी विश्व कप चरण 2 : भारतीय कंपाउंड मिश्रित टीम फाइनल में, दीपिका सेमीफाइनल में

येचियोन। भारतीय तीरंदाज ज्योति सुरेखा वेन्नम और प्रियांश ने यहां तीरंदाजी विश्व कप चरण 2 में कंपाउंड मिश्रित टीम फाइनल में प्रवेश कर लिया है, जिससे भारत का एक और पदक पक्का हो गया। ज्योति, परनीत कौर और अदिति स्वामी की कंपाउंड महिला टीम ने बुधवार को फाइनल में जगह बनाकर भारत के लिए पहले ही एक पदक पक्का कर लिया था। युवा कंपाउंड तीरंदाज प्रथमेश फुगे की नजर भी व्यक्तिगत वर्ग के सेमीफाइनल में पहुंचकर पदक पक्का करने पर है। भारतीय कंपाउंड मिश्रित टीम, जो विश्व रैंकिंग में नंबर 2 पर है, ने 16 तीरों से केवल दो अंक गंवाए और मेजबान देश की हान सेउंगयोन और यांग जेवोन की जोड़ी को कड़े सेमीफाइनल में 158-157 से हरा दिया। शनिवार को स्वर्ण पदक मैच में ज्योति और प्रियांश का सामना अमेरिका की ओलिविया डीन और सॉयर सुलिवन से होगा। चौथी वरीयता प्राप्त जोड़ी ने पहले 16वें राउंड में वियतनाम को 159-152 से हराया था।

उलटफेर का शिकार हुए जोकोविच, सेमीफाइनल में टॉमस मचाक से हारे

जिनेवा। दुनिया के नंबर एक खिलाड़ी नोवाक जोकोविच जिनेवा ओपन में उलटफेर का शिकार हो गये और सेमीफाइनल में चेक गणराज्य के टॉमस मचाक से 6-4, 0-6, 6-1 से हार गये। मचाक, जो अपने पहले एटीपी टूर-स्तरीय सेमीफाइनल में प्रतिस्पर्धा कर रहे थे, ने पहले सेट में अपनी ताकत दिखाई जब वह 4-1 से पिछड़ने के बाद वापस आए और सेट 6-4 से अपने नाम किया। सर्बियाई खिलाड़ी ने दूसरे सेट में बेहतरीन जवाब देते हुए 6-0 से जीत दर्ज की और तीसरे सेट में भी उसी लय को जारी रखते हुए 1-0 से बढ़त बना ली। हालाँकि, यहां से मचाक ने फिर से वापसी की और सेट 6-1 से जीतने के साथ मैच भी अपने नाम कर लिया। 37 वर्षीय जोकोविच को अपने 23 वर्षीय प्रतिद्वंद्वी के खिलाफ कई बार शारीरिक रूप से संघर्ष करना पड़ा और पहले सेट के अंत में उन्हें मेडिकल टाइमआउट मिला। दूसरी वरीयता प्राप्त नॉर्वे के कैस्पर रूड और इटली के फ्लेवियो कोबोली के बीच दूसरा सेमीफाइनल मैच बारिश के कारण स्थगित कर दिया गया। डबल में, मार्सेलो अरेवलो और मेट पाविक सेमीफाइनल जीतने के बाद फाइनल में लॉयड ग्लासपूल और जीन-जूलियन रोजर से भिड़ेंगे।

1 जून से होगा टी20 वर्ल्ड कप का आगाज

एजेंसी

नई दिल्ली। आईसीसी मेन्स टी20 वर्ल्ड कप 2024 की शुरुआत में अब ज्यादा दिन नहीं बचे हैं. आगामी टी20 वर्ल्ड कप 1 जून से लेकर 29 जून तक वेस्टइंडीज और संयुक्त राज्य अमेरिका में खेला जाना है. आगामी वर्ल्ड कप में सह-मेजबान यूएसए पर भी सबकी निगाहें होंगी. यूएसए की टीम काफी शानदार फॉर्म में है और उसने बांग्लादेश जैसी तगड़ी टीम को को तीन मैचों की टी20 सीरीज में हराकर अपने इरादे जता दिए हैं.

आगामी टी20 वर्ल्ड कप में अमेरिकी टीम भारत के ही ग्रुप में है. उस ग्रुप में भारत और यूएसए के अलावा पाकिस्तान, आयरलैंड और कनाडा भी है. यूएसए को भारतीय टीम कतई हल्के में नहीं लेना चाहेगी. भारतीय टीम को यूएसए से कड़ी टक्कर मिल सकती है. अमेरिकी टीम में कुछ अच्छे प्लेयर्स मौजूद हैं जो घरेलू परिस्थितियों का फायदा उठा सकते हैं.

सौरभ नेत्रवलकरः 32 साल के सौरभ नेत्रवलकर बाएं हाथ के तेज गेंदबाज हैं और उनका जन्म 16 अक्टूबर 1991 को मुंबई में हुआ था. सौरभ नेत्रवलकर 2010 के अंडर-19 विश्व कप में केएल राहुल, जयदेव उनादकट और मयंक अग्रवाल जैसे स्टार भारतीय खिलाड़ियों संग खेल चुके हैं.

हैदराबाद दूसरी बार आईपीएल के फाइनल में पहुंचा, कोलकाता से करेगी मुकाबला

एजेंसी

नई दिल्ली। आईपीएल 2024 के दूसरे क्वालिफायर मुकाबले में सनराइजर्स हैदराबाद ने कमाल का प्रदर्शन करते हुए राजस्थान रॉयल्स को 36 रनों से हरा दिया. चेन्नई के एम चिदंबरम स्टेडियम में खेले गए नॉक आउट मैच में हैदराबाद ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में 175 रन बनाए. जवाब में राजस्थान की टीम इस लक्ष्य को हासिल नहीं कर पाई. इसके साथ ही सनराइजर्स हैदराबाद ने तीसरी बार आईपीएल फाइनल में जगह बना ली और अब इस टीम का खिताबी मुकाबला कोलकाता नाइट राइडर्स के खिलाफ 26 मई को होगा.

सनराइजर्स हैदराबाद की जीत के हीरो हेनरिक क्लासेन, अभिषेक शर्मा और शाहबाज अहमद रहे. हेनरिक क्लासेन ने चेन्नई की मुश्किल परिस्थितियों में 34 गेंदों में 50 रनों की पारी खेली. उनके बल्ले से 4 छक्के निकले. गेंदबाजी में शाहबाज अहमद ने 4 ओवर में 23 रन देकर 3 विकेट झटके. वहीं बल्ले से कहर बरपाने वाले अभिषेक शर्मा ने 4 ओवर में 24 रन देकर 2 अहम विकेट चटकाए. राजस्थान रॉयल्स के अलावा कोई बल्लेबाज कुछ नहीं कर सका. संजू सैमसन 10 रन ही बना पाए. रियान पराग 6 रन बना

की बल्लेबाजी दूसरे क्वालिफायर में फेल रही. यशस्वी जायसवाल ने 21 गेंदों में 42 रन बनाए और ध्रुव जुरेल ने अर्धशतक लगाया. इन दोनों पाए. हेटमायर 4 और पॉवेल 6 ही रनों का योगदान दे पाए. राजस्थान की टीम 20 ओवर में 139 रन ही बना पाई.

रियल मैड्रिड के मिडफील्डर टचौमेनी चोट के कारण चैंपियंस लीग फाइनल में नहीं खेल पाएंगे

एजेंसी

मैड्रिड। डॉर्टमुंड के खिलाफ चैंपियंस लीग फाइनल से पहले, रियल मैड्रिड के मैनेजर कार्लो एंसेलोटी ने पुष्टि की है कि मिडफील्डर ऑरेलियन टचौमेनी पैर की चोट के कारण शिखर मुकाबले में नहीं खेल पाएंगे।इस महीने बायर्न म्यूनिख पर चैंपियंस लीग सेमीफाइनल में जीत के दौरान स्ट्रेस फ्रैक्चर से जूझने के बाद से चौआमेनी ने क्लब के लिए नहीं खेला है। 24 वर्षीय खिलाड़ी ने इस सीज़न में सभी प्रतियोगिताओं में स्पेनिश चैंपियन के लिए 38 मैच खेले हैं। एन्सेलोटी ने रियल बेटिस के खिलाफ अपने आखिरी ला लीगा मैच से पहले संवाददाताओं से कहा, वह व्यक्तिगत काम कर रहे हैं लेकिन वह (चैंपियंस लीग) फाइनल के लिए तैयार नहीं हैं। देखते हैं कि क्या वह यूरो के लिए तैयार हैं। त्चौआमेनी को यूरोपीय चैंपियनशिप के लिए फ्रांस की 25 सदस्यीय टीम में भी नामित किया गया था, लेकिन हालिया चोट के कारण जर्मनी में अगले

महीने होने वाले टूर्नामेंट में उनकी भागीदारी संदिग्ध हो गई है।

सीज़न का आखिरी घरेलू खेल टीम और समर्थकों के लिए मिडफील्डर टोनी क्रोस को सम्मानित करने का अवसर होगा, जो यूरो 2024 के बाद सेवानिवृत्त होंगे। 34 वर्षीय खिलाड़ी रियल मैड्रिड के सबसे कुशल खिलाड़ियों में से एक हैं, जिन्होंने चार चैंपियंस लीग खिताब जीते हैं। टीम के साथ.जर्मन, जिसने पहले बायर्न म्यूनिख के साथ चैंपियनशिप जीती थी, रियल मैड्रिड के महान पाको जेंटो के बाद छह यूरोपीय खिताब जीतने वाले इतिहास में केवल दूसरे खिलाड़ी बनने की कगार पर है।एन्सेलोटी ने कहा, मुझे नहीं लगता कि यह उनके लिए कोई कठिन निर्णय था। अनुभवी खिलाड़ियों और दिग्गजों को अपना भाग्य चुनना होगा। टोनी ने यह निर्णय लिया है और इसका सम्मान किया जाना चाहिए। हमें जितना हो सके उन्हें अलविदा कहना होगा। मैं उनके फैसले का सम्मान करता हूं। इस तरह अलविदा कहना आदर्श होगा। फिर आपको ऐसा करने का साहस रखना होगा और उन्होंने जो किया है, उसके लिए मेरे मन में बहुत सम्मान है। ऐसा कोई व्यक्ति लगभग असंभव है, लेकिन इस दस्ते के पास युवा लोगों में संसाधन हैं ताकि वे जिम्मेदारी ले सकें और पिछले 10 वर्षों में निर्धारित पथ का पालन कर सकें। रियल मैड्रिड 2 जून को लंदन के वेम्बली स्टेडियम में चैंपियंस लीग फाइनल में डॉर्टमुंड से भिड़ेगा।

सचिन सिवाच भारत को दिलाई शुरुआत विजयी

एजेंसी

नई दिल्ली।बॉक्सिंग वर्ल्ड क्वालीफायरः एलेक्स मुकुका पर हावी हुए सचिन सिवाच, भारत को दिलाई विजयी शुरुआत बैंकॉक में पेरिस ओलंपिक के लिए दूसरे मुक्केबाजी विश्व क्वालीफायर के शुरुआती दिन राष्ट्रीय चैंपियन सचिन सिवाच के जबरदस्त पंच ने 57 किग्रा वर्ग में 64 राउंड के मुकाबले में न्यूजीलैंड के एलेक्स मुकुका के खिलाफ निर्णायक जीत सुनिश्चित की। बैंकॉक में पेरिस ओलंपिक के लिए दूसरे मुक्केबाजी विश्व क्वालीफायर के शुरुआती दिन राष्ट्रीय चैंपियन सचिन सिवाच के जोरदार पंच ने 57 किग्रा वर्ग में 64 राउंड के मुकाबले में न्यूजीलैंड के एलेक्स मुकुका के खिलाफ निर्णायक जीत सुनिश्चित की।2024 स्ट्रैंड्जा मेमोरियल के स्वर्ण पदक विजेता ने शुरू से ही अपने प्रतिद्वंद्वी मुकुका पर दबदबा बनाए रखा और पूरे मुकाबले में दबाव बनाए रखा ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि उन्हें जजों से 5-0 का सर्वसम्मत फैसला मिले और 10 सदस्यीय भारतीय दल को विजयी शुरुआत मिले। सिवाच ने पहले ही राउंड में अपने इरादे स्पष्ट कर दिए क्योंकि वह शुरू से ही आक्रामक हो गए और कुछ बाएं-दाएं संयोजन के साथ मुकाबले पर नियंत्रण कर लिया। यदि मुकुका दूसरे दौर में सफलता की उम्मीद कर रहा था, तो उसकी उम्मीदें जल्द ही धराशायी हो गईं क्योंकि भारतीय लगातार हमले कर रहा था। पहले दो राउंड आराम से अपनी जेब में रखते हुए, सिवाच ने सुनिश्चित किया कि उनके प्रतिद्वंद्वी से लड़ाई का कोई मौका नहीं था और कार्यवाही समाप्त कर दी। भारत ने दूसरे विश्व क्वालीफायर में सात पुरुषों और तीन महिलाओं को मैदान में उतारा है और सभी मुक्केबाजों को पेरिस ओलंपिक के लिए अपना स्थान बुक करने का मौका पाने के लिए कम से कम सेमीफाइनल में जगह बनानी होगी। शनिवार को सीनियर नेशनल में कांस्य पदक विजेता अभिमन्यु लौरा 80 किग्रा भार वर्ग के शुरुआती दौर में बुल्गारिया के क्रिस्टियान निकोलोव से भिड़ेंगे। 2022 राष्ट्रमंडल खेलों के स्वर्ण पदक विजेता अमित पंघाल (51 किग्रा) और 2022 एशियाई खेलों के कांस्य पदक विजेता नरेंद्र बेरवाल (+92 किग्रा) को पहले ही अपने संबंधित भार वर्गों के शुरुआती दौर में बाई मिल चुकी है।

बीसीसीआई ने मुख्य कोच की भूमिका के लिए किसी ऑस्ट्रेलियाई से संपर्क नहीं किया: जय शाह

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) के सचिव जय शाह ने उन खबरों का खंडन किया है कि उन्होंने या भारतीय क्रिकेट की शीर्ष संस्था ने टीम इंडिया के मुख्य कोच की भूमिका के लिए किसी पूर्व ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेटर से संपर्क किया था। भारतीय पुरुष टीम के मुख्य कोच के रूप में राहुल द्रविड़ का कार्यकाल जून में टी20 विश्व कप समाप्त होने के बाद समाप्त होने वाला है।जय शाह ने कहा कि बीसीसीआई द्वारा टीम इंडिया के मुख्य कोच की भूमिका के लिए किसी पूर्व ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेटर से संपर्क करने की खबरें पूरी तरह से गलत हैं।उन्होंने कहा कि भारत के मुख्य कोच के लिए घरेलू क्रिकेट की गहन जानकारी होना जरूरी है। जय शाह ने एक बयान में कहा,न तो मैंने और न ही बीसीसीआई ने कोचिंग की पेशकश के साथ किसी पूर्व ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेटर से संपर्क किया है। कुछ मीडिया वर्गों में चल रही रिपोर्टें पूरी तरह से गलत हैं। हमारी राष्ट्रीय टीम के लिए सही कोच ढूंढना एक सावधानीपूर्वक और गहन प्रक्रिया है। हम ऐसे व्यक्तियों की पहचान करने पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं जिसे भारतीय क्रिकेट संरचना की गहरी समझ है और टीम इंडिया को अगले स्तर पर ले जाने के लिए यह महत्वपूर्ण है कि हमारे कोच को हमारे घरेलू क्रिकेट ढांचे की गहन जानकारी हो।

रिंकू F46 भाला फेंक स्पर्धा में तीसरे स्थान पर रहे

एजेंसी

मैड्रिड। भारत के रिंकू हुडा यहां विश्व पैरा एथलेटिक्स चैंपियनशिप में पुरुषों की एफ46 भाला फेंक स्पर्धा में तीसरे स्थान पर रहे, लेकिन एक प्रतियोगी द्वारा विरोध दर्ज कराने के बाद आयोजकों ने परिणाम रोक दिया है।रिंकू के 62.77 मीटर के चौथे राउंड थ्रो ने उन्हें तीसरे स्थान पर पहुंचा दिया, लेकिन दूसरे स्थान पर रहीं श्रीलंका की प्रियंता हेराथ (64.59 मीटर) ने शीर्ष स्थान धारक क्यूबा के गुइलेर्मो वरोना गोंजालेज (65.16 मीटर) के खिलाफ स्पष्ट रूप से विरोध दर्ज कराया।मुख्य कोच सत्यनारायण ने पीटीआई को बताया, श्रीलंकाई ने विरोध दर्ज कराया और इसीलिए परिणाम अभी तक आधिकारिक घोषित नहीं किया गया है। किसी भी

स्थिति में, रिंकू के लिए पदक पक्का है। एक अन्य भारतीय अजीत सिंह 12 सदस्यीय फाइनल में 62.11 मीटर के साथ चौथे स्थान पर रहे।हालाँकि, निराशा हुई, भारत के विश्व रिकॉर्ड धारक और पिछले साल के हांग्जो पैरा एशियाई खेलों के स्वर्ण पदक विजेता सुंदर सिंह गुर्जर 59.03 मीटर के थ्रो के साथ आठवें स्थान पर रहे।

उनके नाम 68.60 मीटर का विश्व रिकॉर्ड है।बुधवार को, भारत ने 12 पदक (5 स्वर्ण, 4 रजत, 3 कांस्य) के साथ चैंपियनशिप में अपना अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन पीछे छोड़ दिया था।

भारत ने कोई पदक नहीं जीता. इसकी वजह से देश पदक तालिका में पहले तीसरे स्थान से गिरकर छठे स्थान पर आ गया है।भारत का पिछला सर्वश्रेष्ठ 10 पदक (3 स्वर्ण, 4 रजत और 3 कांस्य) था जो उसने पेरिस में 2023 संस्करण में जीता था।

कुवैत के खिलाफ फीफा विश्व कप क्वालीफायर के लिए भारतीय टीमः गोगोई, हम्माद चोटों के कारण बाहर

एजेंसी

नई दिल्ली। फॉरवर्ड पार्थिब गोगोई और डिफेंडर मुहम्मद हम्माद को चोटों के कारण बाहर रखा गया क्योंकि भारत ने 6 जून को कुवैत के खिलाफ विश्व कप क्वालीफाइंग मैच के लिए 27 सदस्यीय टीम की घोषणा की, जो लंबे समय से सेवारत कप्तान और शीर्ष स्ट्राइकर सुनील छेत्री के अंतरराष्ट्रीय करियर के अंत का प्रतीक होगा। कोलकाता में होने वाले मैच के लिए टीम की घोषणा मुख्य कोच इगोर स्टिमैक ने की। कुल 32 खिलाड़ी भुवनेश्वर में डेरा डाले हुए थे, जिनमें से पांच - फुरबा लाचेनपा, पार्थिब, इमरान खान, हम्माद और जितिन एमएस - को शिविर से रिहा कर दिया गया है। स्टिमैक ने एक मीडिया विज्ञप्ति में कहा, ÷वे सभी बहुत पेशेवर और मेहनती थे। उनके बीच प्रतिस्पर्धा वास्तव में मजबूत थी, खासकर जितिन और पार्थिब के पदों पर।÷ चोटों की प्रकृति बताए बिना उन्होंने कहा, पार्थिब और हम्माद को कुछ दिन पहले मामूली चोटें आई और

उन्हें 7-14 दिनों के आराम की जरूरत होगी।

शेष खिलाड़ी 29 मई तक भुवनेश्वर में प्रशिक्षण जारी रखेंगे जब वे कोलकाता की यात्रा करेंगे। ब्लू टाइगर्स का सामना 6 जून को विवेकानन्द युवा भारती क्रीड़ांगन में कुवैत से होगा। कुवैत के खिलाफ मैच के बाद, भारत ग्रुप ए के अपने आखिरी दो मैचों में 11 जून को कतर से भिड़ने के लिए रवाना होगा। भारत वर्तमान में चार मैचों में चार अंकों के साथ ग्रुप में दूसरे स्थान पर है। समूह की शीर्ष दो टीमें फीफा विश्व कप क्वालीफायर के राउंड 3 के लिए क्वालीफाई करेंगी और एएफसी एशियाई कप सऊदी अरब 2027 में अपनी जगह बुक करेंगी। 39 वर्षीय छेत्री ने 17 मई को अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल से संन्यास लेने के अपने फैसले की घोषणा की।

कुवैत के खिलाफ मैच से उनके 19 साल के शानदार करियर का अंत हो जाएगा, जिसके दौरान वह 94 स्ट्राइक के साथ भारत के शीर्ष गोल-स्कोरर बने।वह अपनी स्वांसोंग प्रतियोगिता के अंत में 151 मैचों में प्रतिस्पर्धा करने के बाद भारत के सबसे कैप्ड खिलाड़ी के रूप में मैदान छोड़ देंगे।सक्रिय खिलाड़ियों में गोल स्कोररों की सूची में छेत्री क्रिस्टियानो रोनाल्डो और लियोनेल मेस्सी के बाद तीसरे स्थान पर रहेंगे। वह वर्तमान में अंतरराष्ट्रीय गोल करने वालों की सर्वकालिक सूची में चौथे स्थान पर है।

टीम÷ ======= गोलकीपरः गुरप्रीत सिंह संधू, अमरिंदर सिंह, विशाल कैथ।

डिफेंडरः अमेय रानावाडे, अनवर अली, जय गुप्ता, लालचुंगनुंगा, मेहताब सिंह, नरेंद्र, निखिल पुजारी, राहुल भेके, सुभाशीष बोस।

मिडफील्डरः अनिरुद्ध थापा, ब्रैंडन फर्नांडिस, एडमंड लालरिंडिका, जेकसन सिंह थौनाओजम, लालियानजुआला चांगटे, लिस्टन कोलाको, महेश सिंह नाओरेम, नंदकुमार सेकर, सहल अब्दुल समद, सुरेश सिंह वांगजाम।

फॉरवर्ड÷ डेविड लालह्लानसंगा, मनवीर सिंह, रहीम अली, सुनील छेत्री, विक्रम प्रताप सिंह

लखनऊ जिला बाक्सिंग टूर्नामेंट : तेज प्रताप, दक्ष व अनुज बने सर्वश्रेष्ठ मुक्केबाज

एजेंसी

लखनऊ। तेज प्रताप सिंह, दक्ष गोपाल, अनुज गौतम और जितेंद्र प्रताप सिंह ने लखनऊ जिला बाक्सिंग टूर्नामेंट ने रिंग में शानदार प्रदर्शन से सर्वश्रेष्ठ मुक्केबाज की ट्रॉफी जीत ली। दूसरी ओर महिला वर्ग में केडी सिंह बाबू स्टेडियम की सनाया पाल, काजल पाण्डेय, वैष्णवी पाल, आयुषी द्विवेदी और अंजली यादव ने स्वर्ण पदक व सुरभि कश्यप, सलोनी गुप्ता, सुजीता कुमारी, श्रेया सिंह ने रजत पदक जीते। केडी सिंह बाबू स्टेडियम के नवनिर्मित बाक्सिंग हाल में बाक्सिंग एसोसिएशन लखनऊ व क्षेत्रीय क्रीड़ा कार्यालय लखनऊ के समन्वय से आयोजित प्रतियोगिता में केडी सिंह बाबू स्टेडियम के मुक्केबाजों ने कुल 16 स्वर्ण व 11 रजत अपने नाम किए। सर्वश्रेष्ठ मुक्केबाज मिनी बालक वर्ग में केडी सिंह के तेज प्रताप सिंह, सब जूनियर में सीबीए के दक्ष गोपाल, जूनियर में जोश बाक्सिंग अकादमी के अनुज गौतम और सीनियर में केडी सिंह के जितेंद्र प्रताप सिंह चुने गए। समापन

समारोह में मुख्य अतिथि भगवती सिंह (संयुक्त शिक्षा निदेशक, शिविर कार्यालय, माध्यमिक शिक्षा, उत्तर प्रदेश) और विशिष्ट अतिथिगण उत्तर प्रदेश ओलंपिक संघ के महासचिव डा.आनन्देश्वर पाण्डेय और उत्तर प्रदेश एमेच्योर बाक्सिंग एसोसिएशन के सचिव प्रमोद कुमार ने विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए। समापन समारोह की अध्यक्षता बाक्सिंग एसोसिएशन लखनऊ के अध्यक्ष अतुल अग्निहोत्री ने की जबकि सचिव सहदेव सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर लखनऊ मंडल के क्षेत्रीय क्रीड़ाधिकारी अजय कुमार सेठी, बाक्सिंग एसोसिएशन लखनऊ चेयरमैन दीपक शर्मा, आयोजन अध्यक्ष आरसी वर्मा (समाजसेवी) आयोजन सचिव प्रणव श्रीवास्तव, उपाध्यक्ष मनोज पटेल एवं केडी सिंह बाबू स्टेडियम के बाक्सिंग कोच कृपाशंकर व अन्य मौजूद थे।

45-48 किग्रा में जोश बाक्सिंग अकादमी (जेबीए) की कांति ने केडी सिंह बाबू स्टेडियम की सलोनी गुप्ता को, 48-50 किग्रा में जेबीए की प्रीति ने जेबीए की ही प्रतिभा को, 52-54 किग्रा में केडी सिंह बाबू स्टेडियम की सनाया पाल ने केडी सिंह की ही सुजीता कुमारी को हराया। 54-57 किग्रा में केडी सिंह बाबू स्टेडियम की काजल पाण्डेय ने किड्स फिट्स स्पोर्ट्स जोन (केएफएसजेड) की अगम्या को, 57-60 किग्रा में केडी सिंह बाबू स्टेडियम की वैष्णवी पाल ने सरोजनीनगर बाक्सिंग अकादमी (एसनबीए) की शिवानी गौतम को, 63-66 किग्रा में केडी सिंह बाबू स्टेडियम की आयुषी द्विवेदी ने बाबू स्टेडियम की ही श्रेया सिंह को और 75-81 किग्रा में केडी सिंह बाबू स्टेडियम की अंजली यादव ने एसटीएमएस की वैष्णवी खन्ना को हराया।

एएफसी अंडर-20 पुरुष एशियाई कप 2025 की मेजबानी करेगा चीन

एजेंसी

दुबई। चीन एएफसी अंडर-20 पुरुष एशियाई फुटबॉल कप 2025 की मेजबानी करेगा। एशियाई फुटबॉल परिसंघ (एएफसी) ने उक्त घोषणा की।

एएफसी के एक बयान में कहा गया कि संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के अल ऐन में आयोजित एक बैठक में एएफसी प्रतियोगिता समिति ने 2025 अंडर-20 एशियाई कप की मेजबानी के अधिकार चीनी फुटबॉल एसोसिएशन को देने का फैसला किया, जबकि 2025 एएफसी अंडर-17 एशियन कप सऊदी अरब फुटबॉल फेडरेशन को प्रदान किया गया है।इसके अतिरिक्त, फीफा अंडर-17 विश्व कप के पुरुष और महिला दोनों संस्करणों को द्विवार्षिक के बजाय सालाना आयोजित करने के फीफा के

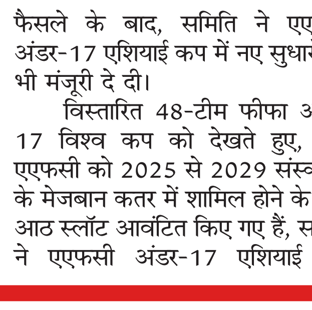

फैसले के बाद, समिति ने एएफसी अंडर-17 एशियाई कप में नए सुधारों को भी मंजूरी दे दी।

विस्तारित 48-टीम फीफा अंडर-17 विश्व कप को देखते हुए, जहां एएफसी को 2025 से 2029 संस्करणों के मेजबान कतर में शामिल होने के लिए आठ स्लॉट आवंटित किए गए हैं, समिति ने एएफसी अंडर-17 एशियाई कप सालाना के क्वालीफायर और फाइनल आयोजित करने के निर्णय को मंजूरी दे दी है।

यह निर्णय खेल योग्यता के सिद्धांतों को बनाए रखने और अधिक प्रतिस्पर्धी कॉन्टिनेंटल मैचों के निरंतर प्रदर्शन के माध्यम से एशियाई युवा टीमों के प्रगतिशील विकास को सुनिश्चित करने के लिए लिया गया।

हॉकी इंडिया ने जरमनप्रीत सिंह को 100 अंतरराष्ट्रीय मैच पूरे करने पर दी बधाई

एंटवर्प। हॉकी इंडिया ने जरमनप्रीत सिंह को 100 अंतरराष्ट्रीय मैच पूरे करने पर बधाई दी है। जरमनप्रीत ने बेल्जियम के खिलाफ एफआईएच हॉकी प्रो लीग 2023/24 मैच के दौरान यह उपलब्धि हासिल की। अपनी निपुणता के लिए पहचाने जाने वाले पंजाब के डिफेंडर जरमनप्रीत ने ब्रेडा में 2018 पुरुष हॉकी चैंपियंस ट्रॉफी में भारतीय पुरुष हॉकी टीम के लिए पदार्पण किया, जहां भारत दूसरे स्थान पर रहा। वह उस टीम का हिस्सा थे जिसने मस्कट, ओमान में 2018 पुरुष एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी में स्वर्ण पदक जीता था। 27 वर्षीय खिलाड़ी ने ढाका, में 2021 पुरुष एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी में भारतीय टीम के तीसरे स्थान पर रहने में एक अभिन्न भूमिका निभाई।

तो इस वजह से 6 सालों तक बॉलीवुड से दूर रहीं

प्रीति जिंटा

खुद बताई वजह

बॉलीवुड एक्ट्रेस प्रीति जिंटा 6 सालों से किसी भी फिल्म में नहीं दिखी हैं. उनकी आखिरी फिल्म 'ब्रदर सुपरहिट' थी, जो साल 2018 में रिलीज हुई थी. अब वो अगले साल 'लाहौर 1947' में दिखने वाली हैं. ये फिल्म आमिर खान के प्रोडक्शन हाउस में बन रही है. इस फिल्म में सनी देओल लीड रोल में दिखने वाले हैं. अब प्रीति ने खुद सालों तक फिल्मों से दूर रहने के पीछे की वजह बताई है.प्रीति ने डीडी इंडिया को दिए एक इंटरव्यू में बताया है कि वो पिछले 6 सालों से अपने बिजनेस को समय दे रही थीं. उन्होंने ये भी कहा कि वो अपने परिवार को समय देना चाहती थीं. उन्होंने कहा, मैं फिल्म नहीं करना चाहती थी. मैं बिजनेस पर फोकस कर रही थी. मैं अपनी पर्सनल लाइफ पर फोकस रखना चाहती थी. लोग ये भूल जाते हैं कि महिलाओं के लिए एक एक्टर के तौर पर क्राफ्ट जरूरी होता है, लेकिन एक बायोलॉजिकल क्लॉक भी होता है.

प्रीति जिंटा ने और क्या कहा ?

आगे उन्होंने कहा, मैंने किसी एक्टर को या फिर इंडस्ट्री में किसी को भी डेट नहीं किया है. इसलिए, लॉजिक की बात ये थी कि मेरे पास मेरा परिवार था. कई तरह से अपनी जिंदगी जीना शानदार होता है, लेकिन आपको अपनी जिंदगी जीना नहीं भूलना चाहिए, इसलिए, मैं बच्चा चाहती थी. फिल्म तो हमेशा के लिए है.

कब रिलीज हो रही लाहौर 1947 ?

अभी इस फिल्म की ऑफिशियल रिलीज डेट तो नहीं आई है, लेकिन ऐसा माना जा रहा है कि 'लाहौर 1947' साल 2025 में रिपब्लिक डे के मौके पर रिलीज हो सकती है. इस फिल्म को प्रोड्यूस करने के साथ-साथ आमिर स्क्रीन पर भी नजर आएंगे. हालांकि, फिल्म में वो कैमियो रोल में होंगे. इस फिल्म को राजकुमार संतोषी डायरेक्ट कर रहे हैं. इसमें शबाना आजमी, अली फजल, अभिमन्यु सिंह भी दिखने वाले हैं. अभी इस फिल्म की शूटिंग चल रही है. कुछ समय पहले एक रिपोर्ट में बताया गया था कि जून तक शूटिंग खत्म हो जाएगी.

मीनाक्षी शेषाद्रि

ने डांस का वीडियो डाला, लोगों ने कमेंट बॉक्स गंदगी से भर दिया

80 और 90 के दशक में अपनी खूबसूरती और एक्टिंग से सबका दिल जीतने वाली मीनाक्षी शेषाद्रि ने फिल्मों से दूरी बना ली है. उन्होंने अपने करियर में 'घातक', 'दामिनी' और 'घायल' जैसी हिट फिल्में दी हैं. मीनाक्षी अब लगभग 60 साल की हो चुकी हैं लेकिन वो आज भी सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव रहती हैं और अक्सर अपने फैन्स के साथ तस्वीरें और वीडियो शेयर करती रहती हैं. उन्होंने इंस्टाग्राम पर अपना एक डांस वीडियो शेयर किया था. इस क्लिप को देखने से ये साफ हो जाता है कि उन्हें बॉलीवुड की बेहतरीन अभिनेत्रियों में से एक क्यों माना जाता है.मीनाक्षी शेषाद्रि ने करीब 3 हफ्ते पहले सोशल मीडिया पर एक वीडियो शेयर किया था. इसमें मीनाक्षी ब्लैक आउटफिट पहने क्लासिकल डांस करती नजर आ रही हैं. इसमें उनके बेहतरीन एक्सप्रेशन देखने को मिल रहे हैं. लेकिन, लोग इस पर भद्दे कमेंट्स कर रहे हैं. कुछ लोग उनकी उम्र को लेकर उन्हें ट्रोल कर रहे हैं तो कुछ लोग उन्हें सलाह दे रहे हैं कि अब उनका समय चला गया है. उनके लुक्स को लेकर भी तरह-तरह की बातें बनाई जा रही हैं. एक यूजर ने लिखा- डांस तो बढ़िया है लेकिन अब राम-राम करने का समय आ गया है, दादी रहने दो बहुत किया जीवन में. एक बंदे ने लिखा- अब तेरा जमाना गया. कई लोग उनकी शक्ल को गोविंदा ने मिलती-जुलती बता रहे हैं.

मीनाक्षी शेषाद्रि के फैन्स ने दिया ऐसा जवाब

कहते हैं हीरे की परख सिर्फ जौहरी ही कर सकता है. इन भद्दे कमेंट्स के बीच कुछ सोशल मीडिया यूजर्स उनकी तारीफ भी कर रहे हैं. इसके साथ ही वो उन्हें ऐसे घटिया कमेंट्स पर ध्यान न देने की सलाह भी दे रहे हैं. ट्रोलर्स को जवाब देते हुए मीनाक्षी के फैन ने कहा, हमें 40 की उम्र में कमर दर्द जैसी समस्या होने लगती है. वो 60 की उम्र में भी इतना अच्छा डांस कर रही हैं. एक यूजर ने उनकी तारीफ करते हुए लिखा, आज भी चेहरे पर वही चमक, डांस में वही तेज और एक्टिंग में वही ताजगी है.मीनाक्षी शेषाद्रि ने ये वीडियो इंटरनेशनल डांस डे और फिल्म 'दामिनी' की एनिवर्सरी के खास मौके पर शेयर किया था. इस वीडियो के साथ मीनाक्षी ने एक नोट भी शेयर किया है. उन्होंने कहा था कि तांडव नृत्य भारतीय परंपरा का अहम हिस्सा है.

'सिकंदर' के लिए सलमान खान की बहुत बड़ी प्लानिंग, 'टाइगर'-'दबंग' का एक्शन भी लगेगा फीका!

सलमान खान के खाते में कई बड़ी फिल्में हैं. हाल ही में उन्होंने अपने नए प्रोजेक्ट का ऐलान किया, जो है- 'सिकंदर'. फिल्म को ए.आर मुरुगादास डायरेक्ट कर रहे हैं. पिक्चर में सलमान खान के अपोजिट रश्मिका मंदाना नजर आने वाली हैं. इस साल सलमान खान की कोई भी फिल्म नहीं आने वाली, वो बस तैयारियां करेंगे. दरअसल बीता साल उनके लिए कुछ खास नहीं रहा था. दो फिल्में आईं. पहली- किसी का भाई किसी की जान और दूसरी- टाइगर 3. जहां पहली मल्टीस्टारर पिक्चर बुरी तरह से पिट गई. वहीं, 'टाइगर 3' उम्मीद पर खरा नहीं उतर सकी. ईद के मौके पर फिल्म और टाइटल का ऐलान किया गया था. वहीं अगले साल यानी 2025 ईद पर इसे सिनेमाघरों में लाया जाएगा.

साल 2025 में कई बड़ी फिल्में आने वाली हैं. इन्हीं में सलमान खान की 'सिकंदर' भी शामिल है. फिल्म की शूटिंग अबतक शुरू नहीं हुई है. पिक्चर प्री-प्रोडक्शन स्टेज पर है. हाल ही में 'मिड डे' की एक रिपोर्ट सामने आई है. इससे पता लगा कि, ए.आर मुरुगादार 'सिकंदर' के फ्लोर पर आने से पहले 'एसके23' को पूरा करना चाहते हैं.

कब शुरू होगी 'सिकंदर' की शूटिंग ?

दरअसल ए.आर मुरुगादास 'सिकंदर' के शुरुआती शेड्यूल को मई में शूट करने का प्लान कर रहे थे. पर जून में शिवकार्तिकेयन की फिल्म की वापसी हो गई. अब ऐसा कहा जा रहा है कि जुलाई से मुरुगादास 'सिकंदर' पर काम शुरू कर देंगे. फिल्म को अगले साल ईद पर रिलीज करना है. ऐसे में डायरेक्टर के बिजी शेड्यूल के बावजूद तय वक्त पर फिल्म को पूरा करने की पूरी कोशिशें की जा रही है. यह भी पता लगा कि, किसी भी देरी से बचने के लिए मुरुगादास ने स्क23 को पूरा करने के लिए एक टीम लगाई है.

जबकि इसी रिपोर्ट से पता लगा कि, फिल्म का प्री-प्रोडक्शन मई में शुरू हुआ है. वहीं, जून से फिल्म की शूटिंग शुरू कर दी जाएगी. फिल्म का पहला शेड्यूल मुंबई में शूट होगा. फिलहाल इसके लिए लोकेशंस की तलाश भी की जा रही है. वहीं, दूसरी ओर सलमान खान मई के आखिर में एक फोटोशूट में शामिल होंगे. वहीं 20 जून के बाद मुख्य फोटोग्राफी शुरू कर दी जाएगी.

कहां-कहां होगी फिल्म की शूटिंग ?

ए.आर मुरुगादास के लिए एक्शन सीक्वेंस ही पहली प्राथमिकता है. यही वजह है कि एक्शन डायरेक्टर्स जरूरी हिस्सों का शूट करने में बिजी हैं. सलमान खान ने भी इसकी तैयारी शुरू कर दी है. ऐसा भी कहा जा रहा है कि, सलमान खान इन एक्शन सीन्स को खुद करने पर जोर दे रहे हैं.

टॉप 10 से बाहर हो गया जेठालाल का 'तारक मेहता', माधुरी दीक्षित और नेहा कक्कड़ भी नहीं बचा पाईं रियलिटी शो की रेटिंग

BARC के 20वें हफ्ते की टीआरपी रिपोर्ट 'तारक मेहता का उल्टा चश्मा' के लिए बुरी खबर लेकर आई है. जेठालाल का ये शो अब टीवी के टॉप 10 शो की लिस्ट से बाहर हो गया है. फिलहाल इस शो की रेटिंग 1.3 है. यानी अनुपमा के मुकाबले असित मोदी का ये शो टीआरपी की रेस में काफी पीछे रह गया है. 'तारक मेहता का उल्टा चश्मा' की तरह इस हफ्ते रियलिटी शो का हाल भी बेहाल है. माधुरी दीक्षित-सुनील शेट्टी, नेहा कक्कड़ और हुमा कुरैशी जैसे बड़े नाम होने के बावजूद उनके रियलिटी शो टीआरपी चार्ट पर अपना खास कमाल नहीं दिखा पा रहे हैं.सुनील शेट्टी और माधुरी दीक्षित के डांस रियलिटी शो 'डांस दीवाने सीजन 4' की इस हफ्ते की टीआरपी महज 1.1 है, तो नेहा कक्कड़ के सिंगिंग रियलिटी शो 'सुपरस्टार सिंगर सीजन 3' की रेटिंग 1 है. लेकिन इन दोनों शोज के मुकाबले हुमा कुरैशी के शो की रेटिंग सबसे कम है.

हर हफ्ते नया मेहमान आने के बावजूद हुमा के शो की टीआरपी महज 0.4 यानी सोनी टीवी के टीवी सीरियल से भी कम है. हुमा कुरैशी के इस शो में हर्ष गुजराल, परितोष त्रिपाठी, स्नेहिल मेहरा, कुशल बदरीके, केतन सिंह, अंकिता श्रीवास्तव जैसे कई मशहूर कॉमेडियन भी शामिल हैं.

ये हैं इस हफ्ते के टॉप 5 शो

हमेशा की तरह 2.3 की रेटिंग के साथ रुपाली गांगुली के 'अनुपमा' ने टीआरपी के रिपोर्ट कार्ड पर अपना पहला स्थान बरकरार रखा है. यशदीप का अनुपमा को प्रपोज करना, अनुज का अनुपमा के लिए बेचैन होना फैन्स को इस शो की तरफ आकर्षित कर रहा है.

'झनक', 'ये रिश्ता क्या कहलाता है' और 'गुम है किसी के प्यार में' इन तीनों शो की टीआरपी 2 है. कुछ पॉइंट के फर्क से इन्होंने दूसरा, तीसरा और चौथा स्थान अपने नाम किया है. कंवर ढिल्लों के 'उड़ने की आशा' 1 .5 की रेटिंग के साथ 5 वें स्थान पर बना हुआ है .